

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जुलाई, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2022

वर्ष : 80 अंक : 07
आषाढ, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवानी

जुलाई, 2022



Website : www.jinwani.in

दान चाहे ज्ञान का हो, संस्कारों का हो, अभयदान हो या
सुपात्रदान, आप यदि खुशहाल रहना चाहते हैं तो अवश्य दें।

- आचार्यश्री हीरा

श्री महावीरस्य नमः

श्री कुशलसत्त्वगजेन्द्रगणितयो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु गाब ॥

अंक सौजन्य

- ◆ जो संघ में शक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।
-आचार्यश्री हस्ती
- ◆ दान धर्म का प्रथम द्वार है। दान से सामाजिक व्यवहार में समरसता का निर्माण होता है। दानी की महिमा उसके द्वारा दिये गये दान से फैलती है। -आचार्यश्री हीरा
- ◆ आज रोग बढ़ रहे हैं, बीमारियाँ बढ़ रही हैं, इसका यदि मुख्य कारण देखा जाये तो यह बिह्व लालीबाई नियन्त्रण में नहीं है।
-भावी आचार्यश्री महेन्द्र



रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

जहाँ विश्वास ही परंपरा है - मानवीय आहार, शाकाहार

नयनतारा, भवानी पेठ, जलगांव. ☎ 0257-6631400

टोल फ्री नंबर: 18002665551

जलगांव | औरंगाबाद | नासिक | नांदेड | पुना | कोल्हापूर

ॐंक श्रीजन्म

श्री महापीताय नमः

श्री कुशलसत्त्वगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥

बिना मर्यादित जीवन के मानव को शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। तृष्णा की प्यास अतृप्त ही रहती है, यह बड़वानल की तरह कभी शान्त नहीं हो पाती।
-आचार्यश्री हस्ती



श्राविकारत्न, श्रद्धानिष्ठ,
स्व. श्रीमती चौदकैबरजी कुम्भट
धर्मसहायिका श्री कनकराजजी कुम्भट
जन्म : 17 जुलाई, 1933
स्वर्गवास : 8 मई, 2022



परस्परप्रेमो जीवानाम्



श्राविकारत्न, अनन्य गुरुभक्त, दृढधर्मी,
स्व. श्री गजेन्द्रजी कुम्भट
सुपुत्र श्री कनकराजजी कुम्भट
जन्म : 1 जनवरी, 1969
स्वर्गवास : 6 जून, 2021

ॐ श्रद्धान्वित परिवार ॐ

श्राविकारत्न

- :: श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर
- :: श्री प्रवीण-मृदुला, महेन्द्र-संगीता, अशोक-अनिता, शेखर-दीप्ति, स्व. गजेन्द्र-चन्द्रकला, रविन्द्र-सिमुल
- :: श्रीमती मंजू-श्री सुशीलजी कास्टिया
- :: मरुधर-चन्दा, मुदित-नेहा, पुनित-शिल्पा, दुष्यन्त, नीलेश, जिनय, देवांश
- :: अक्षय-अनुजा
- :: प्रियंका-श्री अक्षयजी मालु, तमन्ना, मीनल-जिम्मीजी पारेख, भूमिका, टीया, रानू,
- :: आमा-श्री अभिनवजी रांका, खुशबू-श्री लोकेशजी मेहता
- :: दान्या, चेद, माही, रद्दांश, अरनक, आन्या, आरुष

एवं कुम्भट परिवार, जोधपुर

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परपद्मो जीवनाम्

बुद्धस्स निसम्म भासियं,
सुकहियमद्वपद्मोवसोहियं।
रागं दोसं च छिंदिया,
सिद्धिगइं गएु गोयमे॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.37

पद अर्थ सुशोभित श्रेष्ठ परम,
ज्ञानीजन-कथित वचन सुनकर।
गौतम गये सिद्धिगति को,
निज राग-द्वेष का छेदन कर॥

जुलाई, 2022

वीर निर्वाण सम्बत्, 2548

आषाढ, 2079

वर्ष 80

अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्रों के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जैन योग	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	साधना का मार्ग	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	दिया हुआ कभी निष्फल नहीं जाता	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	क्या प्रशंसा सुनने के लिए कान खड़े होते हैं?	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	17
	संघ-सेवा का सच्चा स्वरूप	-आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा.	21
	सुख, दुःख और शान्ति	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	25
अमृत महोत्सव-	भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जैन महिलाओं का योगदान	-डॉ. एस. एल. नागौरी	28
English-section	Psychological Causes of Accumulation and Possession	-Prof. Dharm Chand Jain	31
चिन्तन-	त्याग : धर्म का मूल आधार	-डॉ. दयानन्द भार्गव	39
जीवन-व्यवहार-	नज़रिए का जीवन पर प्रभाव अनमोल मोती (4)	-श्रीमती अरुणा कर्णावट	43
	चण्डकौशिक के जीवन से लें शिक्षाएँ	-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	49
परिवार-स्तम्भ-	जीवन को श्रेष्ठ बनाने के चार उपाय	-डॉ. जवाहरलाल नाहटा	50
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	46
जीवन-शैली-	जैन भोजन-पद्धति और उसकी महत्ता	-श्री धर्मचन्द जैन	52
प्रासङ्गिक-	चातुर्मास : आत्म उन्नति का सर्वोत्तम उपक्रम	-डॉ. अनिल कुमार जैन	55
आत्म-विज्ञान-	सविधि गुरुवन्दन से लाभ	-श्री पदमचन्द गाँधी	60
गीत/कविता-	माँ और सास	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	63
	सन्तों का आगमन	-श्री धीरज डोसी	20
	वृक्ष से सीख	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	27
	सत्य	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	38
	किसी जीव को न सताओ	-डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन	42
	एकता में ही सुनहरा कल है	-श्रीमती सुलषा मुथा(टीना)	48
	साधना	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	59
	आर्यता की ओर बढ़ें	-डॉ. रमेश 'मयंक'	67
विचार/चिन्तन-	चातुर्मास : एक अनमोल अवसर	-श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'	90
	नकली दवाएँ बेचना सामूहिक हत्या है	-श्री दिनेश बालड़	11
	चिन्ता की बात	-श्री जयदीप ढङ्गा	24
	माँ की दखलंदाजी	-श्री अशोक जैन श्रीश्रीमाल	54
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री एस. कन्हैयालाल गोलेच्छा	65
चातुर्मास सूची-	रत्नसंघ चातुर्मास सूची-2022	-डॉ. धर्मचन्द जैन	66
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	68
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	76
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-संकलित	89
		-विभिन्न लेखक	91

जैन योग

डॉ. धर्मचन्द जैन

विश्व में संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा 14 दिसम्बर, 2014 को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर 21 जून को योग दिवस मनाने की घोषणा की गई। भारत सरकार के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रजी मोदी के द्वारा 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में यह प्रस्ताव रखा गया था, जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वीकार किया। इसे स्वास्थ्य एवं कल्याण का पूर्णतावादी दृष्टिकोण माना गया। यही कारण है कि सम्प्रति विश्व के अनेक देशों में मनाये जा रहे इस दिवस के माध्यम से योग की महिमा सर्वत्र विदित हो रही है। किन्तु अभी यह योग दिवस आसन एवं प्राणायाम तक सीमित है तथा इसका सम्बन्ध विशेष रूप से स्वास्थ्य के साथ समझा जा रहा है।

भारत में प्राचीनकाल से ही योगविद्या प्रचलित रही। योगविद्या का सबसे प्राचीन स्वतन्त्र ग्रन्थ पतञ्जलि द्वारा रचित योगसूत्र है। इसमें योग के आठ अङ्ग प्रतिपादित हैं-1. यम, 2. नियम, 3. आसन, 4. प्राणायाम, 5. प्रत्याहार, 6. धारणा, 7. ध्यान और 8. समाधि। इनमें यम-नियम भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। जैनदर्शन में प्रतिपादित पाँच महाव्रत एवं पाँच अणुव्रत ही पातञ्जल योगसूत्र में यम कहे गये हैं। शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान को नियम कहा गया है। स्थिरतापूर्वक सुख से जिस मुद्रा में बैठा जा सके उसे आसन कहते हैं, किन्तु अब शारीरिक व्यायाम की दृष्टि से अनेक प्रकार के आसनों का निरूपण किया जाता है। जैसे-पद्मासन, वज्रासन, वीरासन, शवासन, मयूरासन आदि। प्राणायाम में भीतर श्वास लेकर उसे कुछ क्षण रोका जाता है तथा इसी प्रकार श्वास छोड़ने के पश्चात् कुछ देर श्वास लिये बिना रखा जाता है इनको क्रमशः कुम्भक और रेचक कहा गया है। अनुलोम-विलोम भी इसी प्रकार का प्राणायाम है, जो श्वास की प्रक्रिया एवं

स्वास्थ्य को सम्यक् बनाता है। प्रत्याहार नामक योगाङ्ग इन्द्रियों एवं मन का विषयों के प्रति गमन से नियन्त्रण है। धारणा नामक योगाङ्ग में चित्त को नासाग्र आदि किसी एक स्थान पर केन्द्रित किया जाता है। जब चित्त की एकाग्रता निरन्तर रहती है तो उसे ध्यान कहा गया है। समाधि सबसे उत्कृष्ट योग है। यह सम्प्रज्ञात, असम्प्रज्ञात के भेद से दो प्रकार की होती है।

जैन परम्परा में योग शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से होता रहा है। आगम-साहित्य में इस शब्द का मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति के लिए प्रयोग प्रसिद्ध है। वह प्रवृत्ति शुभ होने पर उसे शुभयोग तथा अशुभ होने पर उसे अशुभयोग कहा जाता है। आचार्य हरिभद्रसूरि ने योग शब्द का प्रयोग मोक्ष-सहायक सम्पूर्ण साधना के लिए किया है। उन्होंने मोक्ष से जोड़ने वाली समस्त धर्म प्रवृत्ति को योग कहा है-मुख्येण जोयणाओ जोगो सव्वोवि धम्मवावारो (योगविशिका 1), योगबिन्दु में उन्होंने सरल शब्दों में कहा है-मोक्षेण योजनाद् योगः अर्थात् जो मोक्ष से जोड़ता है वह योग है। आचार्य हेमचन्द्र भी योग को मोक्ष का कारण स्वीकार करते हुए उसे सम्यग्ज्ञान, सम्यक् श्रद्धान और सम्यक् चारित्र स्वरूप स्वीकार करते हैं-

चतुर्वर्गेऽग्रणीर्मोक्षो योगस्तस्य च कारणम्।

ज्ञानश्रद्धानचारित्ररूपं रत्नत्रयं च सः॥

-योगशास्त्र, 1.15

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चतुर्वर्ग में सबसे प्रमुख मोक्ष है और योग उसका साधन है। वह योग ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप रत्नत्रय है। यहाँ हेमचन्द्रसूरि मोक्षमार्ग स्वरूप रत्नत्रय को योग कह रहे हैं। आचार्य हरिभद्र ने भी योगशतक में रत्नत्रय को निश्चय से योग कहा है तथा इन तीनों में सहायक कारणों को व्यवहार योग स्वीकार किया है।

पातञ्जल योगसूत्र में चित्तवृत्तियों के निरोध को योग कहा गया है, किन्तु जैनदर्शन में योग का इतना सीमित अर्थ नहीं है। यहाँ पर मोक्ष की सम्पूर्ण साधना को योग के स्वरूप में सम्मिलित किया गया है।

जैन योग के प्रतिष्ठापक आचार्य हरिभद्रसूरि हैं। उन्होंने योग से सम्बन्धित चार ग्रन्थों की रचना की है— 1. योगदृष्टि समुच्चय, 2. योगबिन्दु, 3. योगविशिका और 4. योगशतक। इनमें से प्रथम दो ग्रन्थ संस्कृत में तथा अन्तिम दो ग्रन्थ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। उन्होंने इन योग ग्रन्थों की रचना आगम के आधार पर युक्ति का प्रयोग करके की है—युक्त्याऽऽगमानुसारेण योगमार्गोऽभिधीयते। (योगबिन्दु 30) आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र नामक ग्रन्थ में श्रावक के व्रतों और श्रमण के आचार का भी समावेश योग में किया है। उन्होंने योगशास्त्र के बारहवें प्रकाश में योग का विशेष वर्णन किया है तथा कहा है कि वे योगशास्त्र की रचना आगम, युक्ति और स्वानुभव के आधार पर कर रहे हैं।

आचार्य हेमचन्द्र योग की महत्ता का प्रतिपादन करते योगशास्त्र (1.7) में कहते हैं—

क्षिणोति योगः पापानि चिरकालार्जितान्यपि।

प्रचितानि यथैधांसि क्षणादेवाशुशुक्षणिः॥

चिरकाल से अर्जित पापों को भी योग उसी प्रकार से नष्ट कर देता है जिस प्रकार से ढेर लगे हुए ईंधन को अग्नि शीघ्र ही नष्ट कर देती है।

आचार्य हरिभद्र ने योग की आठ दृष्टियाँ प्रतिपादित की हैं—मित्रा, तारा, बला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रभा एवं परा। इन आठ दृष्टियों का योगसूत्र के यम, नियम आदि आठ अङ्गों से साम्य निरूपित किया गया है। इनकी साधना कर्मक्षय के साथ मोक्ष प्राप्त करने में सहायक है। योग के पाँच प्रकार भी कहे गये हैं—

अध्यात्मं भावना ध्यानं समता वृत्तिसंक्षयः।

योगः पञ्चविधः प्रोक्तो योगमार्गविशारदैः॥

1. अध्यात्म योग, 2. भावना योग, 3. ध्यान योग, 4. समता योग और 5. वृत्तिसंक्षय योग।

योग के इन पाँच प्रकारों का आधार आगम

साहित्य में दिखायी देता है। इनमें से प्रथम तीन प्रकारों का उल्लेख सूत्रकृताङ्गसूत्र में प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए अध्यात्मयोग शब्द का वाचक प्राकृत शब्द 'अज्झप्पजोग' 16वें अध्ययन में प्रयुक्त हुआ है— अज्झप्पजोग—सुद्धादाणे उवट्ठिते ठितप्पा संखाए परदत्त—भोई भिक्खू त्ति वच्चे। अध्यात्मयोग से जिसका चारित्र शुद्ध हो, जो चारित्रपालन में उपस्थित है, जिसकी आत्मा अपने शुद्ध भाव में स्थित है तथा संसार की असारता जानकर जो परदत्त भोजी है वह भिक्षु है। भावनायोग शब्द का प्रयोग 15वें अध्ययन की 5वीं गाथा में हुआ है—

भावणाजोगसुद्धप्पा, जले णावा व आहिया।

नावा व तीरसंपत्ता, सव्वदुक्खा तिउट्ठति॥

भावनायोग से शुद्ध आत्मा जल में नाव के समान होता है। जैसे—नाव से कोई व्यक्ति तीर (किनारे) को प्राप्त हो जाता है उसी प्रकार भावनायोग से युक्त साधक समस्त दुःखों को समाप्त कर देता है।

ध्यानयोग शब्द का प्रयोग सूत्रकृताङ्गसूत्र के 8वें अध्ययन की 26वीं गाथा में हुआ है—

झाणजोगं समाहट्ठु, कायं विउसेज्ज सव्वसो।

तितिक्खं परमं णच्चा, आमोक्खाए परिव्वएज्जासि॥

ध्यानयोग करके काया का पूर्णतया त्याग कर देना चाहिये तथा तितिक्षा को श्रेष्ठ समझ कर मोक्ष पर्यन्त साधना में संलग्न रहना चाहिए। 'समता' शब्द का प्रयोग आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, उत्तराध्ययन आदि विभिन्न आगमों में हुआ है। वृत्तियों का क्षय करने सम्बन्धी शब्द भी इस प्रकार आगमों में उपलब्ध हो सकता है। इससे ज्ञात होता है कि आचार्य हरिभद्रसूरि ने जो पञ्चविध योग का निरूपण किया है, उसका आधार आगम रहे हैं।

आचार्य हरिभद्रसूरि द्वारा प्रतिपादित योग के इन पञ्च प्रकारों का उपाध्याय यशोविजय ने अपने द्वारा रचित द्वात्रिंशिकाओं में विशेष वर्णन किया है। अध्यात्म योग के सम्बन्ध में वे कहते हैं कि अणुव्रत, महाव्रत आदि की साधना, जीवादि नवतत्त्वों का चिन्तन तथा

मैत्री, करुणा, मुदिता एवं उपेक्षा से जब जीव युक्त होता है तब अध्यात्म योग सधता है। इस योग का फल है ज्ञानावरण आदि क्लिष्ट कर्मों का किञ्चित् क्षय, सत्त्व का उत्कर्ष, चित्त में समाधि, वस्तु का अवबोध और स्वानुभव रूप पीयूष का आस्वादन। अध्यात्मयोग का निरन्तर वृद्धिगत अभ्यास भावनायोग कहलाता है। इसके होने से काम, क्रोध आदि अशुभ भावों की निवृत्ति होती है तथा शुभ भावों की वृद्धि होती है। इस भावनायोग के अन्तर्गत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप एवं वैराग्य भाव्य होते हैं अर्थात् इनकी भावना की जानी है। इस भावनायोग से वैराग्य पुष्ट होता है तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप में निर्मलता आती है।

ध्यानयोग में चित्त की एकाग्रता सधती है। उपाध्याय यशोविजय के अनुसार विजातीय प्रत्ययों के व्यवधान से रहित उपयोग में प्रशस्त एक विषय में सूक्ष्म आलोचन ध्यान है। इससे ज्ञात होता है कि ध्यान भी योग का ही एक प्रकार है। योग शब्द व्यापक अर्थ देता है तथा ध्यान सहित समस्त साधना इस योग का अङ्ग बनती है।

ध्यान में वृद्धि तभी होती है जब वह आठ दोषों से रहित होता है। वे आठ दोष हैं—1. खेद—प्रवृत्तिजन्य थकान का अनुभव, जिसमें चित्त की स्थिरता नहीं हो पाती है। 2. उद्वेग—प्रवृत्ति को प्रारम्भ किये बिना चित्त में होने वाला क्लम/थकान का अनुभव उद्वेग है। 3. भ्रम—भीतर में चित्त की विपरीतता भ्रम है। 4. उत्थान—प्रशान्त अनुभव का अभाव उत्थान है। 5. क्षेप—चित्त का बीच-बीच में दूसरे विषय पर चले जाना क्षेप है। 6. आसङ्ग—अनुष्ठान आदि में अभिनिवेश आसङ्ग है। 7. अन्यमुद्—प्रस्तुत ध्यान की अपेक्षा अन्यत्र प्रीति का अनुभव होना अन्यमुद् है। 8. रोग—रोग की उपस्थिति भी ध्यान में बाधक होती है। इस प्रकार से ये सभी ध्यान में विघ्न उत्पन्न करते हैं। योगसूत्र में ध्यान में विघ्न करने वाले तत्त्वों को अन्तराय कहा गया है। ध्यान योग से स्वायत्तता अथवा स्वाधीनता का अनुभव होता है। भावों में निश्चलता आती है।

समतायोग, ध्यानयोग से भी अधिक महत्वपूर्ण है। इष्ट एवं अनिष्ट वस्तुओं में विवेक दृष्टि से तत्त्वबोध रूप तुल्य भाव का होना समता है। समता की साधना समस्त गुणों के विकास की मूल भूमि है। किन्तु इस समता में जड़ता नहीं, विवेक होता है। समतायोग के होने पर ऋद्धि एवं लब्धियों के प्राप्त होने पर भी उनमें प्रवृत्ति नहीं होती। इससे मोह, केवलज्ञानावरण आदि कर्मों का क्षय हो जाता है। समता योग के पश्चात् वृत्तिसंक्षय योग आता है। मन, वचन एवं काया की प्रवृत्तियों का निरोध होना वृत्तिसंक्षय है। यह निरोध होने पर इन प्रवृत्तियों की पुनः उत्पत्ति नहीं होती है इसलिये यह अपुनर्भावी निरोध है। इसका फल है अयोगी एवं शैलेशी अवस्था तथा निराबाध मोक्ष की प्राप्ति।

उपाध्याय यशोविजयजी का यह मन्तव्य है कि योग का प्रारम्भ मिथ्यात्वी जीव के भी हो सकता है। चरमावर्त काल में जो मिथ्यात्वी जीव होता है वह मोक्ष के उन्मुख होने के लिए जो प्रयत्न करता है वह योग का अङ्ग बनता है। इसे उन्होंने पूर्वसेवा कहा है। पूर्वसेवा से कोई अपुनर्बन्धक अवस्था तक पहुँचता है। मोह कर्म की 70 कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति का पुनः न बन्धना अपुनर्बन्धक दशा है। इसके पश्चात् सम्यग्दर्शन प्रकट होता है एवं योगसाधना निरन्तर बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

समवायाङ्गसूत्र में 32 योगसंग्रह कहे गए हैं। वे भी सब साधना के ही अङ्ग हैं, यथा—आलोचना, निरपलाप—दूसरों के दोषों का अन्यत्र कथन न करना, आपत्तिकाल में भी धर्म के प्रति दृढ़ता, अलोभता, तितिक्षा, आर्जव, शुचिता, सम्यग्दृष्टि, समाधि आदि। इस प्रकार योग में साधना के समस्त सूत्र समाविष्ट हैं एवं मोक्ष से जोड़ने के कारण ये योग कहे गए हैं।

योग की महत्ता के सम्बन्ध में हरिभद्रसूरि ने योगबिन्दु के श्लोक 37 में कहा है—

योगः कल्पतरुः श्रेष्ठो योगश्चिन्तामणिः परः।

योगः प्रधानं धर्माणां योगः सिद्धेः स्वयंग्रहः॥

योग श्रेष्ठ कल्पवृक्ष है, योग श्रेष्ठ चिन्तामणि है, सभी धर्मों में योग मुख्य है तथा सिद्धि का साधन है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

अप्पपिण्डासि पाणासि, अप्पं भासेज्ज सुव्वए।
खंतेऽभिनिव्वुडे दंते, वीतगिद्धी सदा जए।।

-सूत्रकृताङ्गसूत्र, 1.8.25

अर्थ-साधु उदर निर्वाह के लिए अल्पाहारी हो, थोड़े-से जल से काम चलाए, सुव्रत पुरुष थोड़ा बोले तथा क्षमाशील, शान्त, दान्त एवं विषयभोगों में अनासक्त होकर सदा संयम पालन में प्रयत्न (पुरुषार्थ) करे।

विवेचन-सूत्रकृताङ्गसूत्र में दार्शनिक मतवादों के कथन एवं निरसन के साथ श्रमणाचार के सम्बन्ध में भी पर्याप्त मार्गदर्शन प्राप्त होता है। प्रथम श्रुतस्कन्ध के अष्टम 'वीर्य' नामक अध्ययन की यह गाथा श्रमणाचार के पालन में वीर्य का प्रतिपादन करती है।

वीर्य का अर्थ होता है पराक्रम। संयम में पराक्रम करना पण्डित-वीर्य है और सांसारिक कार्यों में श्रम करना बाल-वीर्य है। अप्रमत्ततापूर्वक जब कोई पुरुषार्थ किया जाता है तो वह पण्डित-वीर्य की कोटि में आता है। दिन-रात गृहस्थ जो व्यापार-व्यवसाय और गृहकार्यों में पराक्रम करता है वह सब ज्ञानियों की दृष्टि में बाल-वीर्य है। सच्चा पराक्रम तो आत्मजय में है। यह पण्डित-वीर्य स्वरूप पराक्रम अष्टविध कर्मों का क्षय करने वाला है। कर्मों से रहित करने के कारण अकर्मवीर्य भी कहा गया है तथा जो पुरुषार्थ, पराक्रम या उद्यम सांसारिक कार्यों में एवं भोग-विलासों में किया जाता है वह कर्म बन्धन का कारण होता है इसलिये यह सकर्म-वीर्य कहा गया है।

प्रस्तुत गाथा पण्डित-वीर्य अथवा अकर्म-वीर्य को प्रोत्साहित करने वाली है। इसमें साधु-साध्वी को सावधान किया गया है कि वे भोजन, पानी, भाषण एवं व्यवहार में संयम बरतें। साधु-साध्वी के आहार के लिए कहा गया है कि वे अल्पपिण्ड का अशन करें अर्थात् अल्पाहार करें। साधु-साध्वी जब गोचरी के लिए

निकलते हैं तो कभी उन्हें आहार मिलता है और कभी नहीं मिलता, लेकिन कभी-कभी श्रद्धालु भक्तों के द्वारा पात्र में अधिक आहार बहराने का भावनापूर्वक प्रयत्न किया जाता है। साधु-साध्वी को वह आहार भी शरीर को चुकाना पड़ता है। किन्तु अधिक आहार करना साधक की साधना में सहायक नहीं, अपितु बाधक होता है। आहार का भी नशा होता है जो तन्द्रा एवं निद्रा को आमन्त्रित करता है। चित्त स्वाध्याय एवं साधना में नहीं लगता, इसलिये अल्प भोजन करने की प्रेरणा की गई है। पानी के लिए भी कहा गया है कि उसका भी सेवन अधिक मात्रा में नहीं करे। भोजन अल्प होगा तो जल की आवश्यकता भी कम होगी। आवश्यकता के अनुरूप जल अवश्य पीना चाहिये, किन्तु इतना अधिक नहीं कि बार-बार लघुशंका का अनुभव हो।

साधु-साध्वी सोच-विचार कर भाषा का प्रयोग करते हैं। वे निरवद्य वचन बोलते हैं। यहाँ कहा गया है कि वे अल्प बोलें अर्थात् मितभाषी हों। अधिक बोलने में शक्ति का व्यय तो होता ही है कभी नहीं बोलने योग्य वचन भी मुख से निकल जाते हैं, जो एक साधु के लिए दोष के सूचक सिद्ध होते हैं। सुसंकल्प का धनी सुव्रती साधक अल्प भोजन, अल्प पान और अल्प भाषण के आचार का सम्यक् रूप से पालन करने में समर्थ होता है।

साधु क्षमाशील होता है। दूसरों के द्वारा अपने प्रति किये गये दुर्व्यवहार एवं दुर्वचनों को हृदय से नहीं लगाता, अपितु उदार दिल से उनकी उपेक्षा कर सबके प्रति आत्मीयता और प्रेम का झरना बहाता है। वह शान्त होता है। क्योंकि उसके मन से कामनाओं का उत्पाटन हो जाता है। कामनाएँ चित्त को अशान्त करती हैं। उसके मन में लोकैषणाएँ भी अपना पाँव नहीं फैलाती हैं अतः वह शान्त रहता है। वह दान्त होता है, अपनी इन्द्रियों और मन को नियन्त्रित रखता है। वह दूसरों का दमन

करने की अपेक्षा स्वयं का दमन करने के लिए सावधान रहता है। वह गृद्धि अर्थात् आसक्ति रहित होता है। विषय-भोगों के प्रति और सम्पर्क में रहने वाले साधु-साध्वियों तथा गृहस्थों के प्रति वह निरासक्त होता है। आसक्ति वहाँ होती है जहाँ कोई सुख भोगना चाहता है। जिनसे सुख की आशा होती है अथवा लोकैषणा पूर्ति की आवश्यकता होती है उनके प्रति आसक्ति भाव होता है। वह सदा यत्नशील अथवा यतनाशील होता है। सजगतापूर्वक पाँच समिति और तीन गुप्ति का पालन करता है। चलने-फिरने, उठने-बैठने आदि में यतना का पालन करता है। ऐसा साधक विजय को प्राप्त करता है।

कहा गया है कि जो अल्पाहारी होता है, अल्प भाषी होता है, अल्प निद्रा लेता है और अल्प उपकरण रखता है उसको देवता भी प्रणाम करते हैं।

साधु की ऊर्जा आत्म-साधना में लगे, व्यर्थ के कार्यों में नहीं, यह तो इस गाथा का सन्देश है ही, किन्तु शरीर की स्वस्थता, मन की स्वस्थता में भी अल्पाहार, अल्पपान, अल्पभाषण, शान्ति, दान्तता आदि उपयोगी होते हैं। 'जए' शब्द यहाँ पर दो अर्थ देता है-यतेत अर्थात् यत्ना करे या प्रयत्न करे। 'जए' का दूसरा अर्थ 'जयेत्' के रूप में प्रकट होता है-विजय को प्राप्त हो।

चातुर्मास : एक अनमोल अवसर

श्री दिनेश बालड़

पुण्यशाली धरा पर साधना में लीन श्रावक-श्राविकाओं के अनन्त भवों की प्रबल पुण्यवानी के उदय से ही ज्ञानी गुरु भगवन्त महापुरुषों के चातुर्मास की प्राप्ति होती है।

चातुर्मास के महत्त्व को जानें तो यह आत्मा से परमात्मा बनने का अवसर है। ज्ञान बिना आत्मा अनपढ़ है और आत्म उत्थान के ज्ञान को बढ़ाने का अवसर है चातुर्मास। चौरासी लाख जीव योनि में अनन्त काल से भटकते-भटकते अनन्त कर्मों से मलिन हुई इस आत्मा को त्याग-तप के द्वारा शुद्धीकरण करने का अवसर भी चातुर्मास है।

समय-समय पर स्वार्थ के लिए कई जीवों से वैर का बन्ध किया, उन सभी जीवों से क्षमा याचना करने का सुअवसर है चातुर्मास। ज्ञानी गुरु भगवन्तों का चार माह तक स्थिरवास पाने का सुनहरा अवसर है चातुर्मास।

जो मिटावे दूषण उसका नाम पर्युषण, ऐसे सब पर्वों का सरताज पर्वाधिराज पर्युषण मनाने का अवसर है चातुर्मास। जिसके लिए देव भी चाहना करते हैं ऐसी

आठ कर्मों से मुक्त और अठारह पापों से मुक्ति दिलाने वाली सामायिक एवं अनेक व्रत-प्रत्याख्यान आदि करने का अवसर है चातुर्मास। चार-चार माह तक सुनने को मिलती है जिनवाणी, जिससे बरसती है पुण्यवानी, जो अनेक कष्टों से बिना कुछ करे ही दिला देती है छुटकारा। जिसके प्रभाव से धर्म का हृदय में, रोम-रोम में होता है निवास, इसलिए भव्य जीवों के लिए अनमोल अवसर है चातुर्मास।

अनेक घर-परिवार में आज दिनों-दिन समस्याएँ बढ़ रही हैं उसका कारण है धर्म का अभाव और पाप का प्रभाव। वर्तमान में आज सभी का जीवन अस्त-व्यस्त है, क्योंकि ये कर्म राजा बड़े ही जबरदस्त हैं, उस कर्म राजा पर विजय पाने का सुनहरा अवसर है चातुर्मास। कई भवों की प्रबल पुण्यवानी के उदय से मिले चातुर्मास में जिधर हो गुरु इशारा, उधर हो क़दम हमारा, तो कोई भी कर्म हमको दुर्गति तक लेकर नहीं जा सकते।

जिस प्रकार से हम भोजन प्रतिदिन ग्रहण करते हैं वैसे ही धर्म को भी जीवन में प्रतिदिन आवश्यक कर दीजिए। चिन्तन मनन करें-चार माह चातुर्मास का महत्त्व समझें तो आडम्बर रहित सादगी मय चातुर्मास के ये चार माह, चार गतियों से छुटकारा दिलाने का अनुपम अवसर प्रदान करते हैं। -फीलखाना, हैदराबाद

साधना का मार्ग

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- ❧ महावीर ने मार्ग बताया कि अपना खयाल रखकर, अपनी चोटी पहले पकड़कर, खुद सुधरते हुए संसार का सुधार करो।
- ❧ यदि दूसरों को देखकर तालियाँ बजाते रहेंगे और घर में करने-कराने को कुछ भी नहीं है तो वास्तव में समाज का कोई गौरव नहीं होगा।
- ❧ सद्गृहस्थ वह है जो सत्पात्र को रोज दान दे।
- ❧ देव-भक्ति, गुरु-सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान-ये गृहस्थ के षट् कर्म बताये गये हैं।
- ❧ आपका दान जनता की नज़र में जल्दी आ सकता है, लेकिन साधु का दान देखने में नहीं आता।
- ❧ नाम के भूखे महानुभाव ज्यादा हैं और काम करने के कम।
- ❧ यदि दान का उचित उपयोग करें तो समाज में देने वालों की कमी नहीं है।
- ❧ आप द्रव्य का त्याग करेंगे तो ममता घटेगी। दूसरी बात समाज में त्याग की परिपाटी कायम रहेगी। तीसरी बात त्याग करने से समाज दुर्बल और पराश्रित नहीं रहेगा, अपने पैरों पर खड़ा रह सकेगा।
- ❧ जैनधर्म जैसा ऊँचा धर्म पाकर आप पिछड़े रह गये, तो इससे ज्यादा कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।
- ❧ द्रव्य-दया से ही जैनधर्म ऊँचा नहीं उठेगा, द्रव्य-दया के साथ-साथ भाव-दया भी करें।
- ❧ जैसे नमक के बिना भोजन अच्छा नहीं लगता है, उसी तरह द्रव्य-दया के साथ भाव-दया भी आवश्यक है।
- ❧ आप चाहे तप कीजिये, दया कीजिये, शीलव्रत धारण कीजिये, दान दीजिये, जो कुछ भी कीजिये निष्कपट भाव से, सरल मन से कीजिये। ऐसा नहीं हो कि मन में कुछ और है और बाहर कुछ और।
- ❧ सही आराधना करनी है तो तन से, मन से, जीवन से कपट को हटाकर साधना के मार्ग में आगे आना चाहिए।
- ❧ मन में गाँठ बाँधकर रखोगे तो साथ में काम करने वालों की गाड़ी आगे नहीं चलेगी, गाड़ी अटक जाएगी।
- ❧ जिस प्रकार स्वादु फल वाले वृक्ष पर पक्षी मण्डराते हैं; उसी प्रकार रसभोजी को विषय घेरे रहते हैं।
- ❧ कर्णप्रिय गीत सुनना, सुन्दर रूप और चलचित्र देखना, तेल-फुलेल लगाना आदि कामनाएँ (लहरें) उसी में उत्पन्न होती हैं जो सरस और उत्तेजक पदार्थों का सेवन करता है।
- ❧ हमारे भीतर जो चेतना का नाग है वह सोया पड़ा है, उसको जगाने के लिए भगवान की वाणी का मधुर स्वर सुनाना पड़ेगा।
- ❧ जब तक विषय-कषाय नहीं हटेंगे, तब तक जीवन का मैलापन नहीं हटेगा।
- ❧ जिस तरह मनुष्य को अपनी ही जूती काट खाती है, उसी तरह अपना ही मन जीव को दण्ड देता है।
- ❧ यदि अपने को, अपनी वाणी को, अपनी काया को आत्मा के अभिमुख कर दिया, आत्म-भाव में लगा दिया तो मन अदण्ड का कारण बनेगा।
- ❧ सामायिक की साधना करोगे तो तुम्हारा मन अदण्ड बन जाएगा, वचन भी अदण्ड बन जाएगा और काया भी अदण्ड बन जाएगी।
- ❧ दण्ड से अदण्ड में लाने वाली क्रिया का नाम सामायिक है।
- ❧ धर्मस्थान में बैठेंगे, महापुरुषों से सम्पर्क करेंगे तो दिल-दिमाग आर्त और रौद्र की ओर नहीं जाएगा।

- 'अमृत-वाक्' पुस्तक से साभार

दिया हुआ कभी निष्फल नहीं जाता

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर चातुर्मास में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोकजी जैन (निजी सचिव) 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है सम्पादन में श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है। -सम्पादक

संसार के सम्पूर्ण दुःखों का अन्त कर अनन्त सुख को प्राप्त करने वाले तीर्थङ्कर भगवन्त तथा जीवमात्र को आत्मिक, शारीरिक सुख का मार्गदर्शन करने वाले पञ्च परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि बन्दन।

अनन्त ज्ञानी भगवन्तों के द्वारा धर्म के चार द्वार कहे गये हैं-दान, शील, तप और भावना। अपने स्वामित्व की वस्तु को निष्काम भाव से दूसरों को प्रदान करना 'दान' है। दान स्वयं को तो लाभ पहुँचाता ही है, अन्यान्यों को भी लाभान्वित करता है। दान से सामाजिक व्यवहार में समरसता का निर्माण होता है। दान धर्म का प्रथम द्वार है।

शील शक्तिशाली है साँप को माला में बदलने वाला है, सूली को सिंहासन बनाने वाला है, कच्चे धागे को लोहे की साँकल बनाने वाला है। प्रत्येक प्रकार की लब्धियों की प्राप्ति में शील सहायक बनता है, इतना सब होते हुए भी यह जितना सिद्धिदायक है इसका पालन करना उतना सरल नहीं है। अच्छे-अच्छे तपस्वी, अच्छे पढ़े हुए साधक भी कभी इससे स्खलित हो जाते हैं। इसलिये नवबाड़ सहित शील का पालन, तीन करण, तीन योग से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके साधु विचरण करता है। हर व्यक्ति के लिए शील का पालन आसान काम नहीं है। स्वामी चौथमलजी म.सा. फरमाया करते थे संसार में इतना कष्ट, इतनी परेशानी और इतनी सारी आज्ञा मानकर चलने के बजाय एक शील का पालन क्यों नहीं करते? एक आज्ञा राज की, हजार आज्ञा नार की। राजा तो कभी एक आज्ञा देता है, पर घर की नारी तो रोज आज्ञा देती है, आज नमक नहीं, आज तेल नहीं, कपड़े नहीं, ये नहीं, वो नहीं, सौ आज्ञा मानकर चलते

हैं, एक महाराज की आज्ञा क्यों नहीं मान लेते। तो कहते हैं-बाबजी! शील ही पल जाता तो इस संसार में रहते ही क्यों?

तप भी बड़ा चामत्कारिक लब्धि और सिद्धि देने वाला है। जितने जीव मोक्ष में गये हैं उनमें ऐसा कोई जीव नहीं है, जिसने तप का आचरण नहीं किया हो। भगवान सुधर्मा से लेकर आज तक जितने साधक बने, उन्होंने तप को स्वीकार किया है। तप करना बड़ा कठिन कार्य है। मारवाड़ी में कहते हैं- 'भूख' अर्थात् 'भू' यानी जमीन और 'ख' यानी आकाश। ज़मीन पर बैठे-बैठे जिसमें आकाश नज़र आता है, उसे भूख कहते हैं। रोटी से लड़ना आसान कार्य नहीं है। एक दिन नहीं मिले तो अस्थि-पञ्जर ढीले पड़ जाते हैं।

घर में रहते शुद्ध भावना आ जाना, पानी पर पत्थर ठहर जाने के समान है। जैसे यह अचम्भा है वैसे ही घर पर शुद्ध भावना आना भी अचम्भा है। कभी लोभ जग रहा है, कभी क्रोध जग रहा है, एक-एक को लेकर भावनाओं में परिवर्तन होता है, एक-एक क्षण में भावनाएँ बदलती रहती हैं। मैं लखपति बन जाऊँ, मेरा बड़ा मकान बन जाये, धन वालों को देखकर, बंगले वाले को देखकर, हर क्षण भावनाएँ बदलती हैं, कदाचित् वीतराग वाणी सुनकर थोड़ा परिवर्तन आता है, परन्तु घर जाकर वह भी समाप्त हो जाता है। जैसे पानी के भीतर में कंकर गिरता है, लहर आती है और थोड़ी देर में समाप्त हो जाती है उसी प्रकार क्षण-क्षण में परिवर्तित होने वाली भावनाएँ हैं।

इन चारों धर्म द्वारों में सबसे सरल धर्म का द्वार 'दान' है। बूढ़ा, बच्चा, धनी, निर्धन हर कोई दान दे

सकता है। उत्तराध्ययनसूत्र के चौदहवें अध्ययन में कमलावती रानी द्वारा इषुकार राजा को धन की नश्वरता बताकर दान की महिमा कही गई है। आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. कहते थे कि स्वयं के जीवन में दान का यह रास्ता विकल नहीं है, अपितु सबसे सीधा सरल रास्ता 'दान' है।

दीन को दीजिए होत दयावन्त,
मीत को दीजिए प्रीति बढ़ाये।
सेवक को दीजिए काम करे बहु,
सायर को दीजिए आदर पाये।
शत्रु को दीजिए वैर रहे नहीं,
याचक को दीजिये कीरति गाये,
साधु को दीजिए मुक्ति मिले पण,
हाथ को दीधो तो एलो न जाये।

कहते हैं दिया हुआ कभी विफल नहीं जाता है। जिस रूप में जैसा भी दिया जाता है वह अपना काम करेगा ही। अनाथ, दीनहीन को देंगे तो वह 50 आशीर्वाद देगा। कल्याण होये, भला होये ऐसे शब्दों के उच्चारण के साथ दुआएँ देगा। यदि मित्र को दिया जायेगा तो दोस्ती प्रगाढ़ हो जायेगी, मित्रता बढ़ेगी और समय आने पर दुःख दूर करने में वह काम आयेगा। सेवक, नौकर, दास को दे रहे हैं तो आपका काम अधिक दौड़कर करेगा। स्वयं कष्ट पाकर भी अधिक परिश्रम करके आपके काम को पहले करने की चेष्टा करेगा। पूर्व में कई लोग थे जो धन्यवाद से काम चला लेते हैं, गुरुदेव कहा करते थे कि वह बेचारा धन्यवाद को जेब में रखकर क्या करे, उसे आवश्यकता है कुछ सामग्री की और आपने धन्यवाद दे दिया। राजा-महाराजाओं द्वारा भेंट देने का कार्य भी स्वयं किया जाता था। शत्रु को दीजिए वह भी मित्र बन जायेगा। अगर आपके पास नहीं हो तो मुँह मत बिगाड़िये। याचक को दीजिए वह जहाँ भी जायेगा देने वाले मालिक के गुण सुनाता जायेगा। प्रसङ्गवश एक बात ध्यान आ गई।

एक गाँव में सभा हो रही थी। गाँव के ठाकुर और

श्रेष्ठिजन उपस्थित होकर विशिष्ट विषय पर चिन्तन कर रहे थे। चिन्तन का विषय था कि उस गाँव का नाम चमार की ढाणी था। जबकि यहाँ ठाकुर रहते हैं, श्रेष्ठी रहते हैं, इसलिये इस ढाणी का नाम परिवर्तन करना चाहिये। सोच ही रहे थे इतनी देर में विचरण करते हुए दो संन्यासी आ गये। पञ्चायत बैठी देख सीधे वहाँ पहुँचे और एक भाई से पूछा कि रामू चमार का घर कौन-सा है? वहाँ पहले ही सम्बन्धित विषय पर चिन्तन चल रहा था और संन्यासियों ने भी रामू चमार का घर पूछ लिया। इस बात से उसी का नाम ही क्यों पूछा जा रहा है, इसका पता किया गया तो मालूम पड़ा कि संन्यासियों को पिछले गाँव में ही रामू चमार का घर बताया गया था कि वहाँ 30 सन्तों के भोजन की व्यवस्था हो जायेगी। संन्यासियों ने कहा-हम तीस संन्यासी आ रहे हैं और उन्हें भोजन करना है। ठाकुर साहब ने कहा कि रामू चमार ही क्यों, हम भी व्यवस्था कर सकते हैं। ठाकुर साहब ने नौकर भेजा, नौकर ठकुरानी के पास गया, लेकिन ठकुरानी ने कह दिया कि अगर इतना ही भोजन करवाना है तो काम करने के लिए दो नौकर साथ भेज देते। सेवक लौट गया और ठाकुर साहब के कान में जाकर यह कह दिया कि ठकुरानीजी तो नाराज़ हो रही हैं, कोई दूसरे घर की बात करो। एक सेठजी ने भी अपने घर नौकर को भेजा, सेठ के घर नौकर पहुँचा। सेठानी बड़ी चतुर थी, सेठानीजी ने जवाब दिया- 'म्हारो हाथ लगावण को कोनी', किसी दूसरी जगह व्यवस्था की जावे। सेवक लौट गया। ऐसे अनेक प्रतिष्ठित लोगों के घरों की यही हालत हुई।

तभी उधर से रामू चमार निकल रहा था, उसने पूछा-क्या बात है? ठाकुर साहब बोले-बात कुछ नहीं तीस संन्यासी आ रहे हैं, भोजन की व्यवस्था करनी है। यह सुनते ही रामू बोला-यो सेवा को मौको म्हाने दो। ठाकुर साहब से स्वीकृति प्राप्त कर उसने सेवक को ढाणी में घर पर सूचना हेतु भेज दिया। सेवक ने पहुँचकर रामू चमार की गृहिणी को सारी स्थिति से अवगत करा दिया। रामू के घर की गृहिणी बोली-संन्यासी 10 बजे आ गये और तू बारह बजे कहने को आया है। मटके में

दूध रखा है, अभी तो इसे ले जा, जब तक भोजन तैयार करूँ संन्यासीजी इसको पी लेंगे। आस-पास की 10 बहनों को इकट्ठा किया और आधे घण्टे में भोजन की व्यवस्था हो गई। संन्यासी खा-पीकर आगे जाने लगे। तभी एक संन्यासी ने पूछ लिया कि आप सब लोग यहाँ किसलिये विराज रहे हो? तब उन्होंने बोला कि गाँव का नाम बदलना है, जो भी आने वाला है वह रामू चमार को ही याद करता है। संन्यासी बोले-आने वाला उसी को याद करेगा जो देने वाला है। उसी को याद किया जाता है जो अपने स्वयं के स्वामित्व की वस्तुओं को दूसरों को देकर प्रसन्न होता है। लखपति और करोड़पति को महाराज याद नहीं करते।

बात कह रहा था दानी की महिमा उसके द्वारा दिये दान से फैलती है। एक कबूतर की दया महाराज मेघरथ को तीर्थङ्कर बनाती है, चींटियों की दया धर्मरुचि अनगार को सर्वार्थ सिद्ध विमान में ले जाती है। हाथ से दान दिया हुआ कभी खाली गया नहीं, कभी जायेगा नहीं। इसी दान को लेकर उत्तराध्ययनसूत्र वर्णन कर रहा है। यहाँ जाति, रूप, सौन्दर्य का महत्त्व नहीं है, संसार में गाया जा रहा है त्याग। इसलिये इस 14वें अध्ययन में आचार्य फरमा रहे हैं-

सुणयो नर नारी, महिमा है भारी जग में त्याग की।
गोप वंश सत्पुरुषों का, साथ मिला शुभ योग।
प्रतिदिन जाते गाय चराने, माने सुख का भोग।
सुणियो नर-नारी, महिमा है भारी जग में त्याग की।

संसार में पूजा जाने वाला, स्मरण किया जाने वाला और याद दिलाया जाने वाला त्याग है। सम्पदा वालों को लोग याद नहीं करते, अधिकारी और सत्ता धारियों को भी याद नहीं किया जाता। अपना पेट भरकर दूसरों की चिन्ता नहीं करने वालों को याद नहीं किया जाता है। जो पाने के साथ देने का काम करते हैं, जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ा, त्याग के पथ पर चले, वे ही याद किये जाते हैं। ग्वाले के घर में जन्मे हुए छह बच्चे प्रतिदिन पशुधन को अर्थात् गाय, बकरी आदि जानवरों को लेकर जंगल की

ओर जाते, उन्हें चराते, उनके साथ रहते हैं और सात्त्विक वृत्ति से वापस लौट आते हैं। इतना सामान्य जीवन जीते हुए भी वे राजा भोज की तरह सुखी थे। दुःख तृष्णा में है, दुःख आसक्ति में है, दुःख लोभ और लालच में है, करोड़ों पाकर भी जिनके मन में सन्तोष नहीं है वह दुःखी हैं, इसलिये नीति कह रही है-

गोधन, गजधन, रतन धन, कंचन खान सुखान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान॥

जिनके पास सन्तोष का धन है वह मिट्टी में सोकर भी सुखी है। जिनके पास यह धन नहीं है, वह महलों में सोकर भी करवटें बदल रहा है, उसे नींद नहीं आ रही है। कैसी सुन्दर भारतीय संस्कृति थी-

लूखी सूखी खाय के, ठण्डा पानी पीव।

देख परायी चूपड़ी, मत ललचावे जीव॥

मानव! तुझे अपनी मेहनत से, अपने पुरुषार्थ से जो कुछ मिला है, उसे पर्याप्त मान कर सन्तोष से चल। दूसरों की सम्पदा देखकर अपने मन में तृष्णाभाव मत बना। जो है उसमें सुख पाने की और सुखी रहने की कोशिश कर। रोज सूखी रोटी खाने वाला सुखी है और रोज हलवा खाने वाला दुःखी है। बदल-बदल कर खा रहा है, फिर भी क्रोध कर रहा है, इसमें घी अधिक है, यह कच्चा है, यह जल गया है, तरह-तरह के नुक्स निकालता है। खाने में जो भी आ जाये उसे प्रसाद समझ कर, मानकर खा लेना चाहिये।

छह बालक जंगल में गाय चरा रहे थे, अचानक तपस्वी मुनिराज ज्येष्ठ की भरी गर्मी में रास्ता भूल जाने के कारण जंगल की ओर आ गये। कथा भाग वर्णन करता है कि गृहस्थ की सेवा नहीं लेने वाले, निर्दोष चलने वाले उन सन्तों के मासक्षण की तपस्या थी। नीचे जमीन तप रही थी और ऊपर सूर्य तप रहा था। अचानक चलते-चलते गर्मी का कुछ असर हुआ, चेतना सुप्त होने लगी, वहीं धरती पर मूर्च्छित होकर गिर गये। दो बच्चों की नज़र सन्त पर पड़ी, सन्त सबके होते हैं, यह भावना उनके भीतर पनपी हुई थी, सन्त के लिए

न कोई तेरा है न कोई मेरा है, वे जीव मात्र के लिए समान व्यवहार करने वाले हैं। अपने-अपने रास्ते पर चलने वाले और वीतराग वाणी सुनाने वाले हैं। वे बच्चे दौड़कर करीब आये, महाराज को होश नहीं है, थोड़े पानी के छींटे देने होंगे, दो पीछे खड़े हुए बोले-ये महाराज कच्चा पानी काम में नहीं लेते, अपनी मटकी में छाछ की आँछ है, वह अचित्त है। यह बात एक ग्वाले का बच्चा जानता था। महाराज क्या लेते हैं और क्या नहीं लेते। आज जैन घर का लड़का नहीं जानता कि क्या सचित्त है और क्या अचित्त है। चीन के प्रधानमंत्री कौन हैं, अमेरिका का राष्ट्रपति कौन? यह तो जानता है, पर यह नहीं जानता की देवाधिदेव कौन हैं? हमारे निर्ग्रन्थ गुरु क्या लेते हैं, क्या छोड़ते हैं। आपका तो बच्चों को नहलाओ, धुलाओ, जूते-मोजे पहनाओ और स्कूल भेजो यह काम है। धार्मिक बातें सिखाने का काम किसका है, सन्तों का? आचार्य रत्नविजय सागर ने ओसियाँ में ओसवंश की स्थापना की ओसवाल कौन? जो मद्यमांस का त्यागी हो। आप स्वयं नहीं बता पायेंगे, लेकिन ग्वाले का बच्चा कह रहा है-बावड़ी का, तालाब का पानी काम में लेने योग्य नहीं है। छाछ की

आँछ ला। छाछ के पानी के छींटे देने से चेतना आयी, चरणों में निवेदन किया-भगवन्! हमारे पास भी खाने को कुछ है, रोज खाते हैं कभी देने का अवसर नहीं आया, आप कृपा करो। मासखमण के पारणे में छाछ की आँछ और राबड़ी। जो गुण राबड़ी में होते हैं वह राबड़ी में नहीं। आप भी सन्तों का संयोग पाकर देने की भावना जगाइए। सन्त घर पहुँच जाये, परन्तु पेढ़ी से उठकर सेठ साहब आते ही नहीं।

दो बच्चे जो पीछे खड़े थे वे कहने लगे-ढीला हाथ से क्या दे रहा है, हमारे हिस्से का भी दे दे। कई लोग कुछ नहीं देकर मात्र भावना भाने से मोक्ष मिला लेते हैं। तो कुछ लोग कहते हैं कि सबको ही खत्म करेगा क्या?

मुण्डे-मुण्डे मतिभिन्ना। हर व्यक्ति की अपनी-अपनी भावना होती है, जैसी भावना वैसा फल। दो ने सन्तों को मूर्च्छित अवस्था में सचेत किया, दूसरे दो दे रहे हैं, तीसरे दो के संकुचित भावना नहीं आयी। छहों बच्चे देवलोक में पहुँचते हैं। छह अधिकारी बनते हैं। कभी मौका मिल जाय तो आप भी दान दीजिये, दिया हुआ कभी निष्फल नहीं जायेगा। दान देकर अपने जीवन को पवित्र कर चलेंगे तो सुख-शान्ति को प्राप्त करते

★

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. पी. सी. जैन

जैनधर्म-दर्शन-संस्कृति की प्रतिनिधि मासिक पात्रिका जिनवाणी अपनी विशेष प्रकार की साज-सज्जा, छपाई, कागज आदि की दृष्टि से तो आकर्षक एवं चित्त को लुभाने वाली है ही, अपनी सुरुचिपूर्ण, युगानुकूल धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को पुरस्कृत करने वाली सामग्री के कारण भी यह पठनीय और मननीय है। इसमें प्रो. धर्मचन्द्रजी जैन की अनुसन्धानात्मक टिप्पणियों से युक्त शास्त्रीय निबन्ध हैं। युगद्रष्टा आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री

योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि आचार्यों एवं सन्तों के प्रवचनों के साथ बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा. के विचार विशेष प्रभावित करते हैं। प्रो. सुमेरचन्द्रजी जैन जैसे सुलझे विचारों के विद्वान् एवं डॉ. सुरेन्द्रसिंह बोहरा के लिखे दर्शन, चिन्तन और विज्ञान प्रधान निबन्ध इस पत्रिका को चार चाँद लगा देते हैं।

आज धर्म और विज्ञान के क्षेत्र में समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है। यह पत्रिका इस कार्य को पूरी गम्भीरता के साथ कर रही है और इस क्षेत्र में अपना मानदण्ड स्थापित कर रही है।

-श्री सुख विलास, बी 417, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)

क्या प्रशंसा सुनने के लिए कान खड़े होते हैं?

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा कटला-महामन्दिर, जोधपुर में 23 अक्टूबर, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

नीम के कड़वे फल निम्बोली खाकर एक व्यक्ति रो रहा था कि ये कड़वे फल कैसे खाऊँ? नीम के पेड़ के पास एक आम का पेड़ है, जिसके मीठे फल आम सबको अच्छे लगते हैं। आम के फल की गुठली बड़ी और नीम के फल की गुठली छोटी होती है। इतनी बड़ी गुठली बोन के बजाय छोटी गुठली क्यों बो दी?

आप उस व्यक्ति को नासमझ कह देंगे, पर हमारे जीवन में जो नीम के पेड़ की तरह कड़वाहट है, उसके लिए क्या कहेंगे? एक घर में सास-बहू के बनती नहीं, एक घर में भाई-भाई के बीच में टकराव है, एक दुकान का साझेदार कहीं सारी सम्पत्ति लेकर भाग तो नहीं जाएगा या फिर बुढ़ापे में जमा फिक्सड डिपोजिट की रकम हड़प कर कोई मुझे बेसहारा तो नहीं छोड़ देगा, इस तरह के विचार निम्बोली की तरह कड़वाहट से भरे नहीं हैं क्या?

संसार में चलचित्र की तरह बहुत से चित्र आते रहते हैं। व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन में न जाने कितनी-कितनी बातें विचित्रता-विभिन्नता के भार से दबी हुई हैं? भगवान की वाणी कह रही है-जीवन जीने की कला है तो उस जीवन में सुख रहा हुआ है। सरलतम भाषा में कहें तो कहना होगा-परिधि पर नहीं, केन्द्र पर श्रम करना पड़ेगा। हमें परिस्थितियों का नहीं, परिणति का परिवर्तन करना होगा। परिस्थिति को बदलने के लिए जीव अनादिकाल से छटपटा रहा है। सुखविपाकसूत्र में सुबाहु कुमार कह रहा है-इस जीव को कड़वे फल प्रदान करने वाला कोई दूसरा नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा

बोया है वैसा फल मिलेगा।

एक व्यक्ति अस्पताल से ठीक होकर निकला, सड़क पर आते ही उसका एकसीडेण्ट हो गया तो। ऐसे अनेक दृष्टान्त जीवन में घटित होते रहते हैं। संसार में सुख का प्रलोभन व्यक्ति को भटकाता है। अधिकांश लोग परायों से, बाहर से, व्यक्तियों से, वस्तुओं से सुख चाहते हैं। अमुक व्यक्ति से सुख मिल जाएगा, अमुक वस्तु प्राप्त करके हम सुखी बन जाएँगे इस तरह की कल्पनाएँ करता रहता है।

मनुष्य की पाँचों इन्द्रियों में कान सबसे ऊपर है। कोई शरीर को तपस्या में झोंक देगा, कोई करोड़ों का दान कर देगा, प्रशंसा सुनने के लिए कान सबसे पहले तत्पर होंगे या नहीं? कान का सुख खतरनाक है। कान के बाद आँख का सुख है। पाँचों इन्द्रियों में तीन भोगी हैं तो दो कामी हैं। भोग करने वाली इन्द्रियाँ जल्दी थक जाती हैं। थोड़ा इसे समझें। एक व्यक्ति भोजन करने बैठा। उसे यदि घर वाले दिन भर खिलाते ही रहें तो क्या वह दिन भर खा सकेगा? खाकर वह कितना खायेगा? कब तक खायेगा? क्या पूरे दिन तक खा सकेगा? कोई भी दिन भर नहीं खा सकता। खाते-खाते वह थक जायेगा।

आप देख लीजिये-प्रशंसा की भूख खूब प्रशंसा सुनने पर भी मिटती नहीं है। प्रशंसा की भूख आप तक ही नहीं, साधु जीवन में भी है। कोई स्वाध्यायी सन्त दिन भर स्वाध्याय करता है, तपस्वी तप करता है, व्याख्यानी अच्छा बोलता है, तो उसमें प्रशंसा की भूख तो नहीं है? मेरी प्रशंसा होगी, मेरे प्रति लोग आदर और सम्मान का

भाव रखेंगे, मुझे अच्छा कहेंगे, यह क्या है ?

कान से प्रशंसा सुनना जड़ की जोड़ है। आचाराङ्गसूत्र इसे सन्धि कहता है। आप में से जो स्वाध्यायी हैं, वे जानते हैं कि मोहनीय कर्म का प्रदेश सत्तर कोटा-कोटि सागरोपम और ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय का तीस कोटा-कोटि सागरोपम तक कर्म भोगने के बाद अलग होगा ही। कर्म-सिद्धान्त समझने वालों को लगता ही है कि अन्दर का कम्प्यूटर कितनी तेजी से काम करता है ?

हमारे भीतर हर समय कर्मों की मार्किंग होती है। एक-एक कर्म पर मार्किंग है। किस कर्म का क्या फल होगा, सुनेंगे तो चक्कर खा जाएँगे। हम कुछ गहराई में सोचने का प्रयास करें। आप-सब यहाँ जिनवाणी श्रवण कर रहे हैं, जिनवाणी अभी ही मिल रही है, ऐसी बात नहीं है। एक-एक देवता ने जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवल कल्याणक मनाया, मनाते हैं। किन्तु वे भी प्रशंसा सुनने के रस से रहित नहीं हुए।

जो वर्षों से एकान्तर उपवास कर रहा है, परन्तु उसके मन में भी यह विचार आता है कि अमुक व्यक्ति ने अब तक मेरी साता नहीं पूछी। यह क्या ? कर्तृत्व का अभिमान, कर्म-फल की आसक्ति। क्रिया के सुख के भोग में कर्ता, कर्म और क्रिया मुख्य तीन चीजें हैं। कर्ता का सूत्र है-कर्तृत्व का अभिमान।

एक बच्चा सुबह चार बजे से पढ़ाई कर रहा है तो घर वालों को खूब अच्छा लगेगा। भोजन बनाने वाली महिला ने स्वादिष्ट भोजन बनाया। वह भी प्रशंसा सुनना चाहती है। यह भोजन किसने बनाया ? कितना अच्छा स्वाद है ? तारीफ की बात सुनने के लिए उसके भी कान तरस रहे हैं, पर किसी ने तारीफ नहीं की तो..... ? कान तारीफ सुनना चाहते हैं। किन्तु तारीफ सुनना स्थायी प्रसन्नता नहीं है। स्थायी प्रसन्नता वही पाता है जो संसार की ओर से आने वाली सब प्रसन्नताओं का अन्त कर देता है।

प्रशंसा जहाँ से भी सुनने को मिल रही है समझना चाहिए कि वह जीव संसार से जुड़ा हुआ है। जो संसार से

जुड़ा है, वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। मोक्ष जाने का रास्ता बहुत सरल है-बहुत सीधा है। अनन्त-अनन्त आत्माएँ मोक्ष चली गईं। अनन्त चौबीसियाँ हो गईं। भरत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र में चौबीसियाँ होती हैं। जब अनन्त जीवों को मोक्ष हो गया तो मुझे क्यों नहीं ?

सुबाहु कुमार के भीतर छटपटाहट लग रही है। जिसे भी छटपटाहट लगेगी, उसका सामर्थ्य प्रकट होगा। अप्रत्याख्यानी कषाय के क्षयोपशम से श्रावकपन और प्रत्याख्यानावरण कषाय के क्षयोपशम से साधुपन होगा ही। इस जड़ की जोड़ में कितने जीवन बर्बाद हो गये ?

आज हाथ से तौलने का कम काम पड़ता है। पहले हाथ से तौला जाता था। घी-तेल लाना हो तो बर्तन का धड़ा करके तौल किया जाता था। आज तो धर्म काँटे तथा वे-ब्रिज आ गए हैं। खाली ट्रक वे-ब्रिज पर आते ही तुल जाता है। भरे ट्रक का भी वे-ब्रिज पर तौल किया जाता है। ट्रक में कितने वजन का माल है, मालूम हो जाता है। पुराने जमाने में हाथ से तौल किया जाता था, तब बर्तन का धड़ा किया जाता।

आज तौलने में धड़ा तो नहीं किया जाता, परन्तु मेंढकों के धड़े को लेकर एक कहावत है, जो आज की परिस्थिति में सही है। एक परिस्थिति का हल निकलता है, तो दूसरी सामने आ जाती है। समस्या का समाधान होने के पहले दूसरी समस्या सामने आ जाती है। मेरे इस जीव ने अनन्त काल का समय बर्बाद कर दिया। यह आदमी ठीक नहीं, इसका स्वभाव मेरे से मेल नहीं खाता, यह यहाँ नहीं रहे तो ठीक। ऐसी न जाने कितनी समस्याएँ आती हैं।

व्यक्ति और वस्तु की पराधीनता से जीव निरन्तर दुःख पा रहा है। इसके लिए दो सूत्र हैं-व्यक्ति की सेवा और वस्तु का सदुपयोग। शरीर, इन्द्रियाँ सब वस्तु हैं। पच्चीस बोल जिनको आते हैं उन्हें ज्ञात है कि पहले से आठवें बोल तक सब वस्तु हैं। इनके सदुपयोग से सुख की खेती होती है और व्यक्ति की सेवा भी जीवन में सुख का आदान करती है। उपकार की भावना के बगैर सेवाभाव जागृत नहीं होता।

आप सब उपकारी हैं। आपके उपकारों से मेरी जागृति बन रही है। आप सच्चे उपकारी तब होंगे जब एक जीव मोक्ष जायेगा।

इक जीव मोक्ष पाया, व्यवहार में यह आया।
उपकृति है सिद्धों की, जीवन जो विकसाया।
पुद्गल के परावर्तन, गिनती भी वहाँ हारी।।
आतम का हितकारी, संयम है सुखकारी।
पथ मुक्ति श्रेयकारी, दीक्षा है दुःख हारी।।

दुःखों से मुक्ति सबसे बड़ा उपकार है। यहाँ तो जगह है, पर मोक्ष में जगह नहीं। वहाँ तो 'एक माँहि अनेक विराजे।' मोक्ष में एक साथ अनेक जीव रहते हैं, जब तक यह औदारिक शरीर है तब तक किसी के लिए बाधक बनता ही है। शरीर को अपना मानने से शरीर का तो नुकसान होता ही है, आत्मा का भी नुकसान होता है। शरीर को अपना नहीं मानने से शरीर और आत्मा दोनों बढ़िया रहते हैं।

सबसे खतरनाक सुख कान का है। कान प्रशंसा के शब्द सुनना चाहता है। नाम की भूख सबको है। जो दान देते हैं वहाँ यदि दाता का नाम नहीं तो फिर वह कैसा दान? हर व्यक्ति नाम से जुड़ा है। एक तो सारे काम करें और नौरतनजी (आशुलेखक) जिनवाणी में नाम नहीं दे तो.....? हर व्यक्ति नाम चाहता है। पत्र-पत्रिकाओं में अपना नाम सबसे पहले देखा जाता है। वह अपना नाम तो देखेगा ही, पर वह दूसरों को भी पूछता है कि आपने आज का अखबार देखा या नहीं? आप पेज नं. 3 देखना।

जुबान हिलाना बहुत सरल है, क्योंकि यह जगत् के साथ जुड़ी हुई है। किसी को पीड़ा देने से इतने कर्म नहीं बँधते जितनी प्रशंसा को लेकर बँधते हैं। एक असन्नी जलचर जीव अनेक मछलियाँ खाता है और एक है तन्दुल मत्स्य जो एक भी मछली नहीं खाता, पर वह सातवीं नरक जाने की तैयारी करता है जबकि असन्नी जलचर पहली नरक तक ही जाता है।

वैर की गाँठ खोलने के लिए एक सूत्र है कि हम

दूसरों से सुख चाहते हैं तो दूसरों को हितकारी सुख देने में हिचकिचाएँ नहीं। हमने दूसरों से बहुत सुख लिया है।

आप सब मीठे फल चाहते हैं, कड़वे नहीं। आप विशाल संख्या में यहाँ बैठे हैं। आप में है कोई ऐसा व्यक्ति जो कहे कि मेरे जीवन में कोई समस्या नहीं है। हर व्यक्ति अपने जीवन से सन्तुष्ट कहाँ है? एक के पास छोटी कार है तो वह चाहेगा मेरी बड़ी कार हो। जिसके पास बड़ी कार है वह तो सुखी है न?

युवाचार्य मधुकर मुनिजी महाराज के व्याख्यानो की एक किताब पढ़ने को मिली। उस पुस्तक में कई दृष्टान्त हैं। एक गाँव में एक व्यक्ति बहुत दुःखी था। उस व्यक्ति ने सोचा-अपने घर में कोई बच्चा नहीं, बच्चा होता तो अच्छा रहता। पड़ौसी के घर में बच्चे हैं उसने पड़ौसियों से पूछा-आप तो सुखी हैं न?

पड़ौसी सेठ ने कहा-मैं कहाँ सुखी? मेरे बच्चे तो हैं, पर पढ़ने में होशियार नहीं, मुझे इसका दुःख है। सेठजी के बच्चे पढ़ने में कमजोर हैं, इसलिए स्कूल में मास्टर की मार खानी पड़ती है। रोज-रोज टीचर की मार को सुनकर सेठानी ने सारी किताब-कॉपियाँ जला दी। अब बच्चों को मास्टरजी की मार तो नहीं खानी पड़ेगी?

सेठ के पड़ौस में एक दूसरा सेठ रहता था, जिसके बच्चे तो थे ही, बच्चे पढ़ने में भी अच्छे थे। वह गाँव वाला भाई आकर बोला-आपके बच्चे ज्ञानवान हैं, होशियार हैं आप तो सुखी हैं न?

सेठ का उत्तर था-बच्चे तो अच्छे हैं। मैं बहुत दुःखी हूँ, क्योंकि मेरे घुटनों में बहुत दर्द है। मेरा चलना-फिरना सब बन्द है।

गाँव वाला व्यक्ति एक-एक करके कड़ियों के पास गया। हर कोई उसे अपने दुःख की बात बताता और कहता कि मैं तो बड़ा दुःखी हूँ।

वह भाई घूमते-घूमते गाँव के पुजारी के पास पहुँच गया और उससे पूछा-आप तो रोज भगवान की पूजा करते हैं आपको तो सब सुख हैं ही।

पुजारी बोला-मैं कहाँ सुखी? बच्चे-बच्ची हों

तो नींद आवे अच्छी, नहीं तो नींद भी रहती है कच्ची। जिनके बच्चे नहीं हैं, वे दुःखी हैं। जिसके बच्चे नहीं उसको नींद नहीं आती और जिनके ज्यादा बच्चे हैं उन्हें भी नींद नहीं आती। ज्यादा बच्चे हैं तो कोई रात को पेशाब करेगा, कोई विष्ठा करेगा।

यही संसार की स्थिति है। जब तक जीव संसार की अनुकूलता के लिए पुरुषार्थ करता है तो वह असम्यक् पुरुषार्थ है। रात-दिन एक-न-एक चिन्ता बनी रहती है तो फिर सुख कहाँ?

सुखविपाकसूत्र कह रहा है-आज जागृति का दिन आया है। आचार्यश्री हस्ती फरमाते थे-श्रवण, ग्रहण, धारण और आचरण। वे बहुत अच्छी व्याख्या करके समझाते। आप श्रवण तो कर रहे हैं। श्रवण करना पर्याप्त नहीं है। हाँ श्रवण जागृति के लिए निमित्त तो बन सकता है, पर श्रवण के बाद ग्रहण, धारण और आचरण आवश्यक है।

आचरण का महत्त्व है। हम सन्त चलते समय नहीं बोलते। यह हमारी ईर्या समिति है। हम खाते वक्त भी नहीं बोलते। खाने में जो भी आ जाय, समभाव से उसका उपभोग करते हैं। हम जो बोलते हैं, हमारे शब्द भी वस्तु हैं। जिसमें वर्ण है, गन्ध है, रस है, स्पर्श है वे सभी वस्तुएँ हैं। मोक्ष में जाना सरल है। कठिन है-दुःखों से

मुक्ति। आप-सबमें दुःखों से मुक्ति पाने की ताकत है। आज सारा संसार दुःखों के द्वन्द्व में लगा हुआ है। स्कूल में एक बच्चा प्रथम स्थान पर आया तो उसे अहंकार आ जाएगा। बच्चा पढ़े तो अहंकार, नहीं पढ़े तो दुःख। आप अपने बच्चों को बड़ी-बड़ी स्कूलों में क्यों पढ़ाते हैं? क्या बड़ी-बड़ी स्कूलों में पढ़-लिखकर बच्चा विनयवान्, विवेकवान् और प्रज्ञावान् बनेगा? आप स्कूल/कॉलेज का मूल्यांकन करना और बताना कि ये आधुनिक स्कूल अच्छे हैं या गुरुकुल? गुरुकुल में शिक्षा दी जाती है। शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी हैं, नहीं तो वीभत्स वातावरण कहाँ तक जाएगा, आप सोचें?

मुक्ति क्या? लेना बन्द कर दें और जो देना है दे डालें, यही मुक्ति है। आपने किसी से कर्ज लिया। निर्धारित तिथि पर चुकाने के लिए किसी अन्य से पचास हजार लेकर पचास हजार का चुकारा किया तो यह कर्ज-मुक्ति नहीं है। क्यों? तो उसने एक के कर्ज चुकाने के लिए दूसरे से कर्ज लिया। लेना बन्द हो और जो लिया है उसे चुकाया जाय तो ही कर्ज-मुक्ति होगी।

आप सुनकर ही न रहें। आपको जो इष्ट है, प्रिय है, कान्त है, मनोज्ञ है, आप सुख का श्रेय दूसरों को दें, दुःख का दायित्व स्वयं अपने पर लें तभी सफल होंगे।

माँ और सास

संकलित

माँ और सास में अन्तर कुछ नहीं

रोते हुए संसार में आई,
तब माँ ने गोद में उठाया।

रोते हुए ससुराल गई,
तब सास ने गले से लगाया।

माँ ने जीवन दिया तो,
सास ने जीवन-साथी दिया।

माँ ने घर में चलना-बैठना सिखाया तो,

सास ने घर के बाहर भी उठना-बैठना सिखाया।

माँ ने घर के काम सिखाए तो,

सास ने घर चलाना सिखाया।

माँ ने कोमल कली की तरह सम्भाला तो,

सास ने विशाल वृक्ष जैसा बनाया।

माँ ने सुख में जीना सिखलाया तो,

सास ने दुःख में भी जीना सिखलाया।

माँ ईश्वर के समान है तो,

सास गुरु के समान है।

-श्री धीरज डोसी, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राजस्थान)

संघ-सेवा का सच्चा स्वरूप

आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा.

क्या संघ-सेवा आत्मार्थ से भिन्न है? आचार-धर्म के पाँच भेदों में से किसी एक या अधिक भेदों में प्रवृत्ति करना, यही तो आत्मार्थ है और सम्यक् भाव से दूसरों से प्रवृत्ति करवाना या उनको सहयोग करना संघ-सेवा जैसा ही है। वास्तव में आत्मार्थ में ही संघ-सेवा और सम्यक् रूप से की गई सेवा में ही आत्मार्थ निहित है। अतः इन्हें एकान्त भिन्न नहीं समझना चाहिए।

क्या संघ-सेवा बड़े पदों पर रहकर ही हो सकती है?

ऐसा अनिवार्य नहीं है, क्योंकि संसार के सर्वोच्च पदाधिकारी तीर्थङ्कर भगवान की उपस्थिति में भी संघ में अन्य (सामान्य) साधक (भी) अध्ययन, अध्यापन, स्थिरीकरण, प्रभावना, वात्सल्य, तप आदि की प्रवृत्ति करते थे, करवाते थे। परन्तु एक अपेक्षा से यह भी सही है कि पदस्थ व्यक्ति विशेष सेवा कर सकता है। पदस्थ व्यक्ति संगठन में अधिकार सम्पन्न होता है। उसे मूल परम्परा, संगठन के लक्ष्य का ज्ञान होता है। अपने से पूर्व नेतृत्व का सहयोग उसे प्राप्त होता है। ऐसे योग्य पदस्थ व्यक्ति के नेतृत्व में ही संगठन की मूल भावना सुरक्षित रहती है।

परन्तु इसके लिए अनिवार्य है कि योग्य व्यक्ति स्वयं को संगठन के लिए उपलब्ध रखे। मान-मनुहार तो मान-कषाय के पोषण करने वाले हैं। ज्यादा खींचतान से कई बार अयोग्य व्यक्ति (कार्य करने में अक्षम या उल्टी विचारधारा वाले) पदों पर आ जाते हैं और धीरे-धीरे संगठन का मूल उद्देश्य ही खो जाता है। संघ के शाश्वत या व्यावहारिक पद कभी रिक्त नहीं रहते। इसलिये

औपचारिक विनय छोटे-बड़े, मैं-आप के चक्कर में न पड़कर योग्य व्यक्ति सदैव उपलब्ध रहें, यह अनिवार्य है।

क्या पद मान कषाय का कारण नहीं है?

मान कषाय तो नवम गुणस्थान तक रहता है उसके कई स्तर हैं, कई कारण हैं। संघ की अपेक्षा से यह बात ठीक नहीं है। अतिमान तो संघ में दूषण रूप है। वैसे चतुर्विध-संघ में तो प्रत्येक सदस्य पदाधिकारी होता है। पञ्चपरमेष्ठी के पाँच पद, उनमें भी तीर्थङ्कर का पद, श्रावक आदि। यह सभी पद तो मान-त्याग की प्रवृत्ति के कारण ही प्राप्त होते हैं। अन्य दूसरे पद तो केवल इस संघ रूपी संस्था के सञ्चालन में सुविधा के लिए होते हैं। उन सहयोगी संस्थाओं के पदस्थ उसी संघ के ही लोग होते हैं फिर (ऊपर कथित) संघ के इन शाश्वत पद धारियों में मान होगा भी कैसे? परन्तु फिर भी यदि मान है या पद अपने मान का पोषण कर रहा है या गुटबाजी को बढ़ावा दे रहा है तो यह पद को त्यागने वाले या ग्रहण करने वालों की चूक है। पद मान का कारण नहीं है, मान तो व्यक्ति की समस्या है। अति मानी व्यक्ति तो संघ से ही बाहर हो जाता है तो उसका पद कैसे सुरक्षित होगा? यदि व्यवहार में उसने पद प्राप्त कर भी लिया तो वह पद का गौरव बनाकर नहीं रख सकता और वह यदि पद का त्याग करता है तो पद के गौरव को अपने से निम्न बताने के लिए ही करेगा। वास्तव में पद तो केवल उत्तरदायित्व को पूरा करने, संघ को सन्मार्ग पर बनाए रखने, लक्ष्य तक पहुँचाने और पहुँचने के लिए हैं। पदस्थ व्यक्ति समग्र के हित के लिए कार्य करता है, वह स्वयं को सेवक समझता है और

सेवक में मान कैसा?

कई बार तो पद ही नहीं, पद का त्याग भी मान का कारण बन सकता है। कई लोग संघ में पद ग्रहण करने का त्याग कर लेते हैं। हो सकता है कि वे महान् आत्मार्थी हों और संसार के क्रियाकलापों से दूर रहने वाले हों, एकान्त आत्महित में संलग्न हों, उन्हें साधुवाद (उनके लिये यह लेख नहीं है)। पर जो सक्रिय हैं उन्हें सोचना चाहिए संघ के उत्तरदायित्व का निर्वहन तो शुभ क्रिया है अधिकांश निरवद्य कार्य होते हैं तो पहले संसार के सावद्य पदों का त्याग करना या संघ के शुभ और निरवद्य पदों का? वे कह सकते हैं कि भले पद पर नहीं हैं, पर हम सभी कार्य कर रहे हैं। बस हमें झमेले में नहीं पड़ना है। कार्य करो और हट जाओ। ऐसे विचार रखने वाले स्वयं सोचें कि क्या संघ के पद झमेले हैं? और क्या वे किसी झमेले में नहीं पड़ते हैं या किसी भी झमेले में क्या उनका नाम नहीं होता है? संघ के पदों को झमेला कहना संघ और पद के गौरव को हानि पहुँचाने के समान है। यही पद मान के त्याग का मान है और वे ही कहते हैं कि पद मान संज्ञा के पोषक हैं। संघ के पद हमारी भावना शुद्ध होने पर निर्जरा का हेतु भी बन सकते हैं यह नहीं भूलना चाहिये। कोई योग्य व्यक्ति पद के लिए लालायित नहीं है तो इतने मात्र से ही यह सिद्ध हो जाता है कि उनमें मान अल्प है। परन्तु योग्य व्यक्ति संगठन की आवश्यकता होने या किसी अनुशंसा पर पद ग्रहण करे, यह प्रत्येक योग्य व्यक्ति का उत्तरदायित्व है, मान नहीं।

पदस्थ क्या करे?

पदस्थ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में चारित्रिक, आर्थिक दोष या आक्षेप से मुक्त हो, गम्भीर हो। वह संघ की मूल भावना को समझे। अनावश्यक तुष्टिकरण, उदारवाद या क्रान्तिकारिता से बचे। सभी को साथ लेकर चलने वाला हो, पर जो पिछड़कर रुक गए हैं या दिशा ही बदल ली है

उनके लिए स्वयं रुकना या दिशा बदलना गलत है। हाँ, यदि उन रुके हुएों में सुधार की सम्भावना हो तो अपने स्तर से प्रयास कर लेना चाहिए। परन्तु अति उदारवाद या अति क्रान्तिकारिता तो संघ की सीमा रेखा से बाहर की प्रवृत्तियाँ हैं। सभी को सन्तुष्ट करना सम्भव नहीं, क्योंकि संघ में कई तरह के लोग होते हैं। सब चलता है जैसा उदारवाद भी ठीक नहीं है तो आक्रामकता भी ठीक नहीं। यह भी आवश्यक है कि संघ या संगठन में कषाय न हो, पर संघ के उद्देश्य को बनाए रखना, सिद्धान्तों की रक्षा के लिए प्रतिकार करना, यह कषाय नहीं कहा जा सकता। सिद्धान्त रक्षण के भाव को कषाय समझने के मूल में एक ही भावना हो सकती है कि जब तक हम पद पर रहें कोई विवाद न हो, गड़बड़ न हो, हमारा समय अच्छा निकल जाए। परन्तु ऐसी सोच संगठन के भविष्य के लिए ठीक नहीं। स्वयं भगवान की उपस्थिति में उनके संघ में वादी साधु होते थे जो अन्यमतियों से वाद कर उन्हें परास्त कर अपना मत स्थिर करते थे, क्या यह कोई कषाय है? सिद्धान्तों का पालन और तुष्टिकरण साथ नहीं चल सकते। 56 अन्तर्द्वीप के युगलिक में कषाय लम्बे समय तक अव्यक्त जैसी होती है, पर वे भी निम्न जाति के देवों से ऊपर नहीं जा सकते। कारण यह है कि उनमें सिद्धान्त या ऊपर जाने की भावना ही नहीं है। वे वर्तमान स्थिति में ही प्रसन्न हैं। मूल नियमों से दूर रहकर केवल विवाद से डरकर कषाय-जय कैसे होगी? हम कषाय सहित हैं, कषाय-जेता नहीं। परन्तु यह भी समझना चाहिए कि बिना विचारे तुरन्त प्रतिकार भी सिद्धान्त रक्षण नहीं कहा जा सकता। आक्रामकता या क्रान्ति चतुर्विध-संघ की भाषा ही नहीं है। क्योंकि सिद्धान्त रक्षण के नाम पर अपना संयम ही यदि खो दिया जाए तो हमारा ही कषाय बढ़ेगा, हम स्वयं सिद्धान्त से भटके हुएों के स्तर पर पहुँच जायेंगे, अपने संघ की सदस्यता ही खो देंगे। इसलिये सही समय पर शब्दों को तोलकर बोलना,

तर्कयुक्त बोलना आवश्यक है, जिससे सामने वाला सोचने पर विवश हो जाए। यदि हमारे प्रयास विफल हो जाएँ और जिसे सुधरना ही नहीं है तो उसे बार-बार समझा कर उसे लज्जित करना, या उसे ढीठ बता देने की अपेक्षा उसके हाल पर छोड़ देना चाहिये। किसी को संगठन का सदस्य बनकर रहना है या नहीं यह उसका अपना निर्णय है, इसमें जबरदस्ती नहीं चलती।

मूल संगठन की सहयोगी अन्य संस्थाएँ भी होती हैं, उनके भी पदाधिकारी होते हैं। वरिष्ठ संस्था और उनके पदाधिकारियों को चाहिए कि वे सहयोगी संस्थाओं और उनके पदाधिकारियों को अपने क्षेत्र में स्वतन्त्रता दें। उन संस्थाओं का चयन, सञ्चालन आदि से सम्बन्धित प्रक्रियाओं में मर्यादा से अधिक हस्तक्षेप नहीं करें अन्यथा प्रमुख संस्थाओं की तानाशाही से सहायक संस्थाओं का महत्त्व ही समाप्त हो जाएगा। अलग-अलग संस्थाओं के अलग-अलग लक्ष्य होते हैं उनकी पूर्ति के लिए सहयोग प्राप्त होता रहता है। उस प्राप्त सहयोग के विषय में पारदर्शी व्यवहार होना चाहिये। समय-समय पर ब्यौरा प्रस्तुत करने से पारदर्शिता बनी रहती है। यह ब्यौरा सभी सदस्यों के लिए सहज सुलभ होना चाहिए। संस्थाओं में प्राप्त सहयोग का उसी मद में उपयोग करना चाहिए। उस सहयोग पर अनुचित दृष्टि डालने की अपेक्षा जहाँ आवश्यक हो स्वयं उदार हृदय बनें, ऐसे पदाधिकारी हों।

हम चतुर्विध संघ के सदस्य हैं। अपने मूल नियमों के प्रति श्रद्धा, वैसी ही प्ररूपणा, समय अनुसार यथासम्भव स्पर्शना हमारा कर्तव्य है। स्वयं तीर्थङ्कर भगवान ने जिस संघ का निर्माण किया, बाद में हमारे पूर्वजों ने जिस प्रकार जिस भाव से इसका रक्षण किया, हमें इस पर चिन्तन करते रहना चाहिए। यदि किसी पिछले पदस्थ ने किसी विवशता में कोई प्रवृत्ति की है तो उसे मूल नियम के सापेक्ष नहीं रखा जा सकता। जो जानबूझकर ऐसा करता है

वह निश्चय ही अपनी कमजोरी को ढाल बनाने का प्रयास है। अपने पूर्वजों की कीर्ति को हमें बढ़ाना है, घटाना नहीं। कोई यदि अपने ही पूर्वजों या पूर्व नेतृत्व को भटका हुआ कहे तो वह संगठन तो एक भीड़ है जिसके पास कोई परम्परागत विचार ही नहीं है।

साथ ही प्रत्येक पदाधिकारी का कर्तव्य है कि यदि वह किसी अन्य ऐसी संस्था या संगठन का सदस्य है जिसके उद्देश्य इस संस्था या संगठन के प्रतिस्पर्धी या विपरीत हैं तो उस संगठन की सदस्यता को त्याग दें।

निवर्तमान के दायित्व

किसी भी व्यक्ति द्वारा पद पर रहते हुए कार्य करते हुए जो वैनयिकी, कार्मिकी, पारिणामिकी बुद्धि अर्जित की जाती है, जो अनुभव प्राप्त किये जाते हैं वह उस व्यक्ति की नहीं वरन् संघ की सम्पत्ति है। उसके पास वह संघ की धरोहर है। उन अनुभवों को आगे प्रदान करना पूर्व पदाधिकारियों का कर्तव्य है, यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो वे संघ के दोषी हैं।

सदस्यों के कर्तव्य

ऐसे योग्य पदाधिकारियों और लक्ष्य केन्द्रित संगठन के सदस्यों का उत्तरदायित्व भी कम नहीं होता। सदस्य कई प्रकार के होते हैं—कुछ सामान्य होते हैं तो कुछ पदाधिकारी भी होते हैं। सभी का कर्तव्य है कि संगठन के उद्देश्य के अनुरूप चलने वाले पदाधिकारियों का सम्मान करें। पद की गरिमा को हानि नहीं पहुँचाएँ। पदाधिकारी समग्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका अविनय समग्र का अविनय है। यदि कोई अनुचित बात ध्यान में आती भी है तो उचित माध्यम और संगठन में अपनी स्थिति के अनुसार गरिमामय ढंग से उसे प्रस्तुत करना चाहिए। संगठन के योग्य नेतृत्व के अनुशासन में रहना चाहिए। सही की खोज में इधर-उधर भटकने वाले सभी स्थानों पर अपमानित होते रहते हैं, कहीं के नहीं रहते। इसलिये सभी सदस्य अपने

मूल सिद्धान्त, परम्परा और संगठन के प्रति पूर्ण ईमानदार रहें, विश्वसनीय बनें।

संघ, संघ के नियम, संघ की व्यवस्था सर्वोपरि है। मान का त्याग करना, संघ-सेवा के लिए सदैव उपलब्ध रहना, सिद्धान्तों का रक्षण,

स्थिरीकरण, वात्सल्य, सहयोग, अनुभवों का संविभाग आदि हमारे कर्तव्य हैं। हम सभी सद्भावना से संघ में सक्रिय सेवक बनें। यही मंगल भावना।

-संकलन : श्री कस्तूरचन्द बाफनर, जलगाँव

नकली दवाएँ बेचना सामूहिक हत्या है

श्री जयदीप ढङ्गर

जब भी तबीयत खराब होती है, डॉक्टर हमें दवा लिख देते हैं और हम उसे आँख मून्दकर ले लेते हैं। कभी खयाल नहीं आता कि वह दवा नकली या अमानक भी हो सकती है। जबकि नकली और मिलावटी दवाएँ व्यापक स्तर पर बन रहीं हैं और धड़ल्ले से बाजार में बिक रही हैं। नकली दवा बनाने वाले, कई जानों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। एक हत्यारा तो एक व्यक्ति को ही मारता है, लेकिन ये तो सामूहिक हत्याएँ कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड के रूड़की और भगवानपुर में पिछले दिनों ही करोड़ों रुपयों की नकली दवाएँ और मशीनें बरामद हुई हैं। यहाँ से विभिन्न राज्यों में नकली दवाओं की सप्लाई होती है। कोरोना की दूसरी लहर में दिल्ली से पकड़े गए नकली रेमेडेसिवर इन्जेक्शन के तार भी रूड़की से जुड़े थे। लाखों लोगों की जान पर जब आफत मची हुई थी, तब भी यह खेल खेला जा रहा था। नकली दवाओं में सेलखडी का इस्तेमाल ज्यादा होता है, जो सस्ती होती है, पर दवा का रूप लेने के बाद महँगी बिकती है। मामूली लागत में मोटे मुनाफे का यह धन्धा माफियाओं को मालामाल कर रहा है। यह खतरनाक मनोवृत्ति है। उनके हिंसक कारोबार पर सख्ती होनी चाहिए।

वैसे औषधि परीक्षण प्रयोगशाला में दवाओं की जाँच की जाती है। किसी औषधि के अमानक घोषित होने पर अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार बिक्री पर तत्काल रोक लगाई जाती है। पर त्रासदी यह है कि

नमूनों की रिपोर्ट आने तक तो हजारों लोग इसका सेवन कर चुके होते हैं। नियमानुसार मानक कोटि की होने पर ही इन औषधियों का विक्रय बाजार में किया जा सकता है। फिर भी नकली और मिलावटी दवाओं पर लगाम नहीं लग पा रही है। राजस्थान की बात करें तो संदिग्ध दवाओं के नमूने लेने के बाद जाँच रिपोर्ट आने में ही महीनों-सालों लग रहे हैं। स्थिति यह है कि हर साल पाँच से सात हजार नमूनों की जाँच पेंडिंग पड़ी रहती है। अधिकांश नकली और संदिग्ध दवाओं की रिपोर्ट आने से पहले उनके बेचने पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता। जानलेवा बेपरवाही के हालात ऐसे हैं कि अधिकतर मामलों में मरीज उनका सेवन कर चुके होते हैं।

भारतीय दण्ड संहिता की धारा 274, 275 एवं 276 के अनुसार दवा में मिलावट करना, जिससे उस दवा का असर कम हो जाए या वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो जाए, एक अपराध है। बीमार व्यक्ति किसी दवा को असली समझकर खाता है, परन्तु उसको फायदा नहीं होता, बल्कि उसका जीवन और कष्टमय हो जाता है। यहाँ तक कि उसकी जान भी जा सकती है। यदि जानबूझकर किसी विशेष दवा के स्थान पर कोई अन्य दवा यह कहकर बेची जाए या दी जाए कि यह वही विशेष दवा है, तो इस प्रकार एक दवा के नाम पर दूसरी दवा बेचने वाला या दवा देने वाला व्यक्ति भी अपराधी है। इसके लिए दण्ड का प्रावधान 6 माह का कारावास या रुपये 1000/- तक का जुर्माना या दोनों हैं। उत्तराखण्ड में दवाएँ बेचने वालों के खिलाफ आजीवन कारावास की धाराओं में मुकदमा दर्ज करने तक का प्रावधान है।

-ढढ़ढर मारुकेट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

सुख, दुःख और शान्ति

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा, जैन मन्दिर, अजीत कॉलोनी, जोधपुर में 11 जनवरी, 2020 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया है।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

सुख, दुःख और शान्ति यह त्रिपुटि प्रत्येक जीव के जीवन में रही हुई है। प्रत्येक जीव यह चाहता है, सोचता है, विचार-चिन्तन करता है कि मुझे सुख और शान्ति मिले। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) फरमाते हैं-कीड़ी हो या कुञ्जर, राजा हो या रंक, गरीब हो या अमीर सभी सुख चाहते हैं, कोई दुःख नहीं चाहता। ज्ञानी कह रहे हैं-संसार की राह पर कभी सुख मिला नहीं तो कभी सुख मिलेगा भी नहीं। सुख नहीं मिलेगा तो क्या करना? क्या संसार की राह छोड़ दें?

बाह्य सुख का कारण : साता वेदनीय कर्म

जो सुख मिल रहा है, वह वेदनीय-कर्म के कारण मन, वचन और काया का सुख मिल रहा है, यह सुख साता वेदनीय के कारण से है। साता वेदनीय के कारण से सुख पाते हुए भी जीव भीतर से सुखी नहीं है। कर्म-रहित शाश्वत सुख पाने के लिए ज्ञानियों ने कहा-तुझे संसार के बजाय धर्म की राह पकड़नी होगी।

किसी के घाव हो गया, पिंपल्स हो गए, फोड़े में मवाद भर गया तो उसे दबाकर निकालने से दुःख हुआ, लेकिन तत्पश्चात् शारीरिक सुख हो गया। मवाद निकलने पर आदमी को थोड़ी-सी सुख-शान्ति हो गई, संसार में भी इस प्रकार का ही सुख है।

एक व्यक्ति जंगल में भागा-भागा गया। भागते-भागते वह हाथियों के झुण्ड से बचने के लिए कुँए के ऊपर रहे पेड़ की शाखा पकड़कर शाखा पर चढ़ गया। ऊपर देखा तो दो चूहे एक काला, एक गौरा पेड़ की

शाखा को कुतर रहे हैं। नीचे देखा तो हाथी उस पेड़ के तने को हिला रहा है। बेचारे के प्राण कण्ठ में अटक गए। वह लटका हुआ है। नीचे कुँए में देखा तो अजगर मुँह बाए बैठा है। शरीर पर मधुमक्खियाँ डंक मार रही हैं। बड़ी विचित्र स्थिति थी। इतने में एक देव विमान आता है। विमान में बैठा देव कहता है कि चल मेरे साथ, मैं तुझे उस स्थान पर ले जाऊँगा, जहाँ सुख ही सुख है। उस भाई को तो शहद की टपकती बूँद नज़र आई और वह शहद की बूँद का स्वाद लेने में इतना आसक्त हो गया कि उसने देव को दो मिनट ठहरने के लिए कह दिया।

देव विमान सहित दो मिनट ठहरा और फिर बोला-चल। पर वह तो हर बार दो मिनट रुको, कहता रहा। देव ने कहा तुम्हें बचने का मौका मिल रहा है तो इसे खोना नहीं चाहिए। लेकिन वह शहद के क्षणिक सुख में आसक्त रहा।

दो-तीन बार कहने पर भी जब वह आदमी नहीं आया तो देव वहाँ से रवाना हो गया। वह आदमी अब पश्चात्ताप भी करे तो क्या फायदा? उससे एक बूँद शहद का रस भी छूट नहीं रहा। साता का सुख वेदनीय-कर्म के कारण से मिलता है। हमें कर्म-रहित सुख के लिए प्रयास करना है।

शाश्वत सुख का कारण : धर्म का प्रभाव

आदमी सुबह उठने के साथ सोचता है कि मुझे गुरु भगवन्तों के दर्शन हो जाएँ तो मेरा दिन सुख-शान्ति से निकलेगा। व्यक्ति सुख चाहता है। सुख का कारण है-धर्म का प्रभाव। यानी जीव जितना-जितना धर्म करता है उतना-उतना सुख पाता है। याद रखना सुख

धर्म का प्रभाव है। ज्ञानी कहते हैं—सुख, साधन और समृद्धि है तो वह बासी खाने जैसा है। धर्म की बदौलत साधन—सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं तो भगवान कहते हैं कि उसका सदुपयोग कर लो। आप ज्यों—ज्यों धर्म करते जाओगे त्यों—त्यों सुखी बनते जाओगे।

धर्म का प्रभाव अचिन्त्य होता है। अढ़ाईद्वीप में अढ़ाई अक्षर का धर्म ही काम का है। धर्म में अढ़ाई अक्षर हैं। धर्म के अलावा बाकी सारी चीजें व्यर्थ की हैं। इस धर्म के लिए अधिकांश लोगों को समय नहीं है।

जीवन में सुख प्राप्त करना है तो धर्म करना होगा। धर्म का प्रभाव सुखी बनाने वाला है। इसलिये जीवन में धर्म का आचरण हो।

दुःख का कारण : पुण्य का अभाव

दुःख का कारण क्या? दुःख का कारण है—पुण्य का अभाव। जितनी—जितनी पुण्यवानी कमजोर होती जाएगी, उतना—उतना दुःख आयेगा। क्यों? तो पुण्य शिखर तक पहुँचाता है तो पाप शून्य तक ले जाता है। कभी कोई कहे कि मैं आज तक बीमार नहीं पड़ा। क्यों? कारण क्या? भाई, उसका पुण्य है, इसीलिये तो वह बीमार नहीं हुआ।

आपने सुना है—माता मरुदेवी इतनी दीर्घ आयु हो जाने पर भी कभी बीमार तक नहीं हुई, कारण क्या? माता मरुदेवी की पुण्यवानी ही एकमात्र कारण है। सबका लक्ष्य होना चाहिये—पुण्यवानी कमाना। आप कमाते तो पैसा हैं, पर चाहते हैं पुण्यवानी। ठीक है, पुण्य से पैसे कमाए जा सकते हैं। पुण्य है तो छप्पर फाड़कर मिलेगा। पुण्य है तो लोहे में हाथ डालने पर सोना बनते देर नहीं लगेगी। पुण्य है तो कंकड़ भी रत्न बन सकते हैं।

याद रखें, दुःख का कारण है पुण्य का अभाव। पुण्य कम है तो जीव दुःखी है। आप पुण्य से पैसे कमाते हैं तो यह भी याद रखें कि पैसों से भी पुण्य कमाया जा सकता है। पैसों का सदुपयोग नहीं किया तो पैसे यहीं रह जाएँगे और पैसों का सदुपयोग किया तो प्राप्त पुण्य साथ जाता है।

तो, जीवन में दुःख का कारण है—पुण्यवानी में

कमी। पुण्यवानी बढ़ानी है तो जिनवाणी को श्रवण करना होगा। भगवान ने पुण्य के नौ स्थान बताए हैं। पुण्य की बदौलत जीवन में दुःख समाप्त होते हैं।

शान्ति का कारण : उपशम भाव

तीसरी चर्चा है—शान्ति। शान्ति का कारण है—खुद का स्वभाव। मेरा स्वभाव अच्छा है तो शान्ति और मेरा स्वभाव खराब है तो अशान्ति। आपको हर जगह समायोजित होना आना चाहिये। आप हर जगह हर परिस्थिति में अपने—आपको समायोजित कर लें तो आपकी शान्ति बनी रहेगी। जीवन में शान्ति कब तक? जब तक स्वभाव अच्छा है तो शान्ति ही शान्ति है।

आप सब घर गृहस्थी में हैं। घर में कभी कोई विपरीत स्वभाव वाला भी हो सकता है। आपको यदि शान्ति पानी है तो स्वभाव को शान्त बना लीजिए।

एक सेठजी थे। उनके एक नौकर था। नौकर पाँच हजार रुपये महीने में भी मिल सकता है, पर सेठजी ने दुगुनी तनख्वाह पर नौकर रखा। उसे दस हजार रुपये का वेतन दिया। एक दिन सेठजी के घर पर उनका कोई मित्र आया।

सेठजी ने नौकर को आवाज दी—“रामू!”

वह बोला—“हाँ सेठ साहब!”

सेठजी—“रामू! मेरे मित्र आए हैं, चाय बनाकर ला।”

रामू एक चाय लेकर आया तो सेठजी बोले—“अरे! एक चाय ही कैसे? क्या मैं अपने मित्र के साथ चाय नहीं पीऊँगा?”

रामू बोला—“सेठजी! आप अभी तो चाय पीकर उठे हैं।”

सेठ ने कहा—“जा, एक चाय और बनाकर ला।”

रामू अन्दर गया, पर काफी देर तक आया नहीं तो सेठजी ने पुकारा—“रामू....ओ रामू! अरे तू देखता नहीं, मित्र की चाय ठण्डी हो रही है। जल्दी कर।”

रामू बोला—“क्या बिना चाय के मर जाओगे, थोड़ा सब्र रखो।”

मित्र बोला-“क्या आपने फ्री में नौकर रखा हुआ है?”

सेठ ने कहा-“नहीं, मैं तो इसे दुगुनी तनख्वाह देता हूँ।”

मित्र ने कहा-“आपका दिमाग खराब है। नौकर को थोड़ा-सा इनाम दो तो वह सिर के बल काम करता है।”

सेठ ने कहा-“यह नौकर मेरे कषाय को उपशान्त रखने में निमित्त बन रहा है। मैं अपने स्वभाव में शान्ति

लाने के लिए इसे दुगुनी तनख्वाह दे रहा हूँ।”

आप अपना स्वभाव सुन्दर बनाएँ। आपका स्वभाव जितना-जितना सुन्दर होगा उतनी-उतनी शान्ति बढ़ती जाएगी। सुख का कारण है-धर्म का प्रभाव। दुःख का कारण है-पुण्य का अभाव और शान्ति का कारण है खुद का स्वभाव। आपको अविनाशी पद प्राप्त करना है, आपको अजित बनना है तो कर्म को जीतना होगा। आप शान्ति-समाधि चाहते हैं तो इन तीन सूत्रों को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करें। इसी शुभभावना के साथ.....

सन्तों का आगमन

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

वर्षा ऋतु आई
मंगल वेला लाई
सन्तों की टोली भाई
ज्ञान की लीला-लहर आई।

धर्म-ध्यान की उमङ्ग बढ़ी
जिनवाणी सुनने की ललक उठी
व्याख्यानों में भीड़ लगी।
त्याग-तप की झड़ी लगी।

शास्त्र-वाचन की जिज्ञासा जगी
आगम स्वाध्याय की आदत बनी
विनय, नम्रता, यतना मन में घुली
छह काया की रक्षा की सीख मिली।

अहिंसा का मूल मन्त्र मिला
कषायों की जानकारी मिली

व्यसन छोड़ने की युक्ति मिली
जीवन जीने की कला मिली।

पर्युषण का पदार्पण हुआ
सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन
सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप से
मोक्ष मार्ग के द्वार खुले।

दान के लिए हाथ खुले
शील, आलोचना के तत्त्व खिले
आत्मा में झाँकने का अवसर मिला
क्षमा याचना का महारत्न मिला।

राग-द्वेष, वैर-भाव छोड़
हर प्राणी को समकक्ष किया
वर्षा सखी! तेरे आगमन से
सन्त-सतीवृन्द का सान्निध्य मिला
धन्य-धन्य जग हुआ।

-ई 123, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.)

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जैन महिलाओं का योगदान

डॉ. एस. एल. नागौरी

सम्प्रति देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। भारत को स्वतन्त्र हुए 75 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अतः देश में स्वतन्त्रता-सेनानियों को श्रद्धा से याद किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जैन महिला-पुरुषों का भी महान् योगदान रहा है। अमरचन्द बाँठिया जैसे अनेक जैन वीर पुरुषों ने अपने जीवन की परवाह न कर फाँसी पर चढ़ना स्वीकार किया था। जैन महिलाओं ने भी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अपने अद्वितीय साहस से अंग्रेज सरकार को आश्चर्यचकित कर अद्भुत शौर्य, त्याग एवं बलिदान का परिचय दिया था। इन महिलाओं में स्कूल की छात्राओं से लेकर प्रौढ़ाएँ तक शामिल थीं। इन वीराङ्गनाओं के सहयोग को भी स्वतन्त्रता-आन्दोलन में रेखाङ्कित किया जाना चाहिये।

अनेक वीराङ्गनाओं ने शान्तिपूर्ण आन्दोलनों एवं क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने धरने दिये एवं जुलूसों का नेतृत्व किया। इतना ही नहीं, उन्होंने जेल में निर्मम यातनाएँ भी झेलीं और अपनी अस्मिता को देश पर न्यौछावर कर दिया। ये वे वीराङ्गनाएँ थीं, जिन्होंने अपने ढँग से आजादी के यज्ञ में अपनी आहुति दे डाली, परन्तु इतिहासकारों ने इन अल्प ज्ञात बहादुर ललनाओं की कुर्बानियों को प्रकाश में लाने के लिए अपनी कलम नहीं चलाई। आइये, हम आपको उन जैन वीराङ्गनाओं की कुर्बानियों से परिचित करवाते हैं।

1. **जयावती संघवी**—जैन वीर महिलाओं में अहमदाबाद की कुमारी जयावती संघवी का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। 5 अप्रैल 1943 ईस्वी को अहमदाबाद नगर में ब्रिटिश शासन के विरोध में कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने कुमारी

जयावती संघवी के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस निकाला। पुलिस ने जुलूस को तितर-बितर करने के लिए काफी संख्या में आँसू गैस के गोले छोड़ने आरम्भ कर दिये। कुमारी जयावती संघवी पर इस गैस का इतना प्रभाव पड़ा कि उनकी मृत्यु हो गई। कुमारी जयावती का जन्म अहमदाबाद में 1924 ईस्वी में हुआ था। इस प्रकार भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन की वह दीपशिखा थी, जो अपने जीवन का पूरा प्रकाश दे भी नहीं पायी थी कि इस संसार से चल बसी।

2. **सज्जन देवी महनोत**—श्रीमती सज्जन देवी के पति का नाम सरदार सिंह महनोत था, जो प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी थे। उन्होंने 1930 ईस्वी के आन्दोलन में सरकारी आदेश की अवहेलना की, जिसके कारण उन्हें चार माह की जेल यात्रा करनी पड़ी। 1932 ईस्वी के सत्याग्रह में भाग लेने के कारण उन्हें पुनः जेल जाना पड़ा। 1942 ईस्वी के आन्दोलन में उन्होंने खुलकर भाग लिया। 1943 ईस्वी में सरकार ने उन्हें नज़रबन्द कर दिया और तीन वर्ष बाद 1946 ईस्वी में उनको रिहा किया गया।

3. **लेखवती जैन**—श्रीमती लेखवती जैन को जैन जाति की सरोजिनी नायडू कहा जाता था। इनके पति का नाम सुमन प्रसाद जैन था, जो एडवोकेट एवं प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता थे। श्रीमती लेखवती जैन ने 1930 ईस्वी में कांग्रेस में प्रवेश किया और लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन में एक कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। 1931 ईस्वी में शिमला में असेंबली पर धरना दिया था। श्रीमती जैन ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में खुलकर भाग लिया

- था। वे 1933 ईस्वी में पंजाब प्रान्तीय कौंसिल की सदस्य चुनी गई थीं। वे समस्त भारत की प्रथम ऐसी महिला थी, जो चुनाव में निर्वाचित हुई थीं और बाद में वे हरियाणा की विधानसभा में स्पीकर भी रहीं।
4. **अंगूरी देवी**—श्रीमती अंगूरी देवी के पति महेन्द्र जी जैन (आगरा) के थे, जो एक महान् देशभक्त थे। अंगूरी देवी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में खुलकर अपने देशवासियों का सहयोग किया। 26 जनवरी, 1930 ईस्वी को पूर्ण स्वाधीनता दिवस मनाने के लिए एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गई थी, जिसमें अंगूरी देवी ने सैनिक प्रेस की छत पर खड़े होकर भाषण दिया, जिसके कारण उन्हें गिरफ्तार करके जेल में भेज दिया गया। उस समय वे गर्भवती थी, फिर भी छह माह की सजा सुनायी गई। उन्होंने सरोजिनी नायडू के साथ नमक सत्याग्रह के दौरान सार्वजनिक रूप से नमक कानून भंग कर नमक बनाया और स्थान-स्थान पर महिलाओं को सत्याग्रह करने के लिए प्रेरित किया। अंगूरी देवी को गिरफ्तार कर लिया गया और उनको 6 माह की सजा एवं जुर्माना कर जेल भेज दिया गया। 1932 ईस्वी के सत्याग्रह के पश्चात् उन्होंने क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया। 1942 ईस्वी में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान गांधीजी ने 'करो या मरो' का नारा दिया, तब अंगूरी देवी ने आगरा में जुलूस का नेतृत्व किया। उनकी प्रेरणा से महिलाओं ने बड़ी संख्या में इस आन्दोलन में भाग लिया।
5. **गंगा बाई**—श्रीमती गंगाबाई के पति वैद्य कन्हैयालाल जैन एक प्रसिद्ध देशभक्त थे। गंगाबाई ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपने पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लिया। 1931 ईस्वी के आन्दोलन के समय उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की एक सभा का आयोजन किया गया। उसके सभापति पुरुषोत्तमदास टंडन थे। इस सभा की स्वागताध्यक्ष गंगाबाई थी, जिसके कारण उन्हें छह माह की जेल यात्रा करनी पड़ी।
6. **लक्ष्मीदेवी जैन**—श्रीमती लक्ष्मी देवी जैन सहारनपुर की निवासी थी। उनके पति का नाम अजित प्रसाद जैन था। 1933 ईस्वी में सहारनपुर में महिलाओं के लिए एक स्त्री समाज नामक संस्था स्थापित हुई, जिसकी लक्ष्मी देवी प्रमुख कार्यकर्ता थी। उन्होंने देश के आन्दोलनों में पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लिया। 1942 ईस्वी के आन्दोलन में भाग लेने के कारण उनको जेल यात्रा करनी पड़ी, उस समय उनकी कुछ माह की पुत्री भी उनके साथ थी। इनके पति अजित प्रसाद जैन संविधान निर्मात्री सभा के सुप्रसिद्ध सदस्य थे।
7. **केसर बाई**—श्रीमती केसर बाई के दिल में देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह ललितपुर निवासी श्री मोतीलाल जी की पत्नी थी। महात्मा गाँधी की प्रेरणा से वे स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़ी। उन्होंने कांग्रेस की कार्यकर्ता बनकर नारी जागरण का काम अपने हाथ में लिया। अतः सरकार ने उन्हें एक माह के कारावास का दण्ड दिया।
8. **कमला देवी**—पण्डित परमेश्वरीदास जैन (ललितपुर) प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं पत्रकार थे। श्रीमती कमला देवी उनकी धर्मपत्नी थी, जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में खुलकर भाग लिया और जैन नारियों के गौरव और गरिमा में वृद्धि की। 1942 ईस्वी के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। सभाबन्दी कानून का उल्लंघन करते हुए उन्होंने सभा में भाषण दिया। अतः सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करके पाँच माह के लिए साबरमती की जेल में भेज दिया।
9. **नन्ही बाई जैन**—1942 ईस्वी के भारत छोड़ो आन्दोलन में लथकाना (सिहोरा) जिला जबलपुर (म.प्र.) की श्रीमती नन्ही बाई जैन ने बढ़-चढ़कर

भाग लिया। अतः उनको 8 माह 18 दिन जबलपुर जेल में गुजारने पड़े।

10. **फूलकँवर बाई चोरड़िया-फूलकँवर बाई** चोरड़िया के पति का नाम माधोसिंह जी था। उन्होंने अपने पति की प्रेरणा से देश सेवा करने का निश्चय किया। सत्याग्रह और धरने के दौरान उन्हें कई यातनाएँ झेलनी पड़ीं। अजमेर में सत्याग्रह में भाग लेने के कारण उन्हें तीन माह की जेल की यात्रा करनी पड़ी। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। अतः उन्हें एक माह की जेल यात्रा करनी पड़ी।
11. **काँचन जैन मुन्नालाल शाह-काँचन जैन** का जन्म गुजरात में चिरवोदरा नामक गाँव में हुआ था। बाद में वे अनेक वर्षों तक बापू के वर्धा आश्रम में रहीं। उन्होंने 1942 ईस्वी के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया, जिसके कारण उन्हें एक वर्ष बारह दिन का कारावास का दण्ड भोगना पड़ा।
12. **सुन्दरदेवी जैन-श्रीमती सुन्दरदेवी जैन** ने 1942 ईस्वी के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, वे अपनी कविताओं के द्वारा लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत करती थीं।
13. **गोविन्ददेवी पटवा-श्रीमती गोविन्ददेवी** कलकत्ता की रहने वाली थी। गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इन्होंने कलकत्ता के बड़े बाजार में विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देने वाली महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व किया। 1942 ईस्वी के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी इन्होंने खुलकर भाग लिया। अतः सरकार ने इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। जेल में उनको अमानवीय यातनाएँ सहनी पड़ीं।
14. **लीला बहन एवं रमा बहन-श्रीमती रमा बहन** के पिता का नाम डॉ. प्राणजीवन मेहता था, जो प्रसिद्ध

चिकित्सक थे। लीलावती बहन प्राणजीवन मेहता की पुत्रवधू थी। ये दोनों आजाद हिन्द फौज की रानी झाँसी रेजीमेण्ट में सक्रिय थीं। **लीलावती बहन के शब्दों में**-जब ब्रिटिशों ने रंगून छोड़ दिया और जापानियों ने रंगून पर अधिकार जमा लिया, तब कुछ समय के लिए अन्धाधुन्धी मच गई थी। कई मास तक भारतीय स्त्रियाँ घरों से बाहर नहीं निकल सकी थीं। हमने अपने मकान पर एक बोर्ड लगा दिया था कि इस घर में महात्मा गाँधी, पण्डित नेहरू तथा अन्य भारतीय नेता आकर उतरे थे। इस घर में राष्ट्रवादी भारतीय रहते हैं। इसे पढ़कर सैनिक हमें कभी किसी तरह हैरान नहीं करते थे। 21 अक्टूबर, 1943 को बर्मा और मलाया में झाँसी रानी रेजीमेण्ट स्थापित करने का कार्य पूरा किया। तब रात-दिन बम वर्षा होती रहती थी। आवश्यकता पड़ने पर हम खुले मैदान में हथियारों से सुसज्जित खड़ी रहती थीं। हम घायलों की सेवा शुश्रूषा करने और अस्पताल ले जाने का कार्य भी करती थीं।

रमा बहन के शब्दों में-हमारा कैम्प मिलिटरी कैम्प था। उसमें प्रत्येक प्रकार के शस्त्र-सञ्चालन और अनुशासन का पालन सिखाया जाता था। 'झाँसी की रानी रेजीमेण्ट' में दो विभाग थे। एक युद्ध विभाग और दूसरा नर्सिंग विभाग। युद्ध विभाग में मिलिटरी ड्रिल, रायफल प्रैक्टिस, पिस्तौल चलाना, मशीनगन चलाना सिखाया जाता था। नर्सिंग विभाग में घायलों की सेवा करना सिखाया जाता था। सभी बहनें निष्ठापूर्वक कार्य करती थीं, इस आशा को लेकर कि उनके प्रयत्नों से भारत स्वतन्त्र होगा।

-सेवानिवृत्त प्रोफेसर इतिहास, 2 ए 1, विकास नगर, बून्दी-323001 (राजस्थान)



❖ दान एक तरफ दाता की ममता-मूर्च्छा घटाता है तो दूसरी तरफ दान ग्रहण करने वाले को सुखी एवं सन्तुष्ट करता है।

-आचार्यश्री हीरा

Psychological Causes of Accumulation and Possession

Prof. Dharm Chand Jain

Abstract

It is a tendency of all living beings that they accumulate and possess the material things. A human being bears many psychological causes for accumulation and possession. It is his innate tendency to accumulate and possess money and material things for safety, security, pleasure and comfort. He also does so for social prestige, prosperity and to perform family responsibilities. He is unaware of the fact that more possession and more accumulation does not have relation with more happiness. The tendency of accumulation, hoarding and possession affects social economy, environment, morality, health and spiritual welfare. Hence this paper focuses to overcome the tendency of accumulation and possession for the personal happiness and spiritual development of the self and for the well being of the society and the nation.

Keywords :- *sanjñā* (desires), *parigraha* (possession and accumulation), *murchā* (unawareness), material things, innate tendency, comfortable life, sensual pleasure, mental perverseness, greed of prosperity, social pressure, Endowment effect, bad consequences, inner wisdom, sufferings, Id, Ego, Super ego.

To live a comfortable life a human being needs accumulation or acquisition of enough food, clothes, accommodation and facilities for smooth functioning of daily routine. An animal has no capacity to accumulate these things, but fulfills its biological needs by wandering place to place. Nature has given capacity to some other living beings to

accumulate their food i.e. ants collect their food for a certain time being. Birds have instinct capacity to make nests for keeping their eggs and collect food for feeding their issues. An elephant requires food in huge quantity, but it cannot have a capacity for hoarding it even for a second day. It has to wander every day to acquire food. These animals depend every day on nature and have no particular accumulation of food etc. even though they can live their life. Honey-bees are having an instinct capacity to accumulate pollen of different flowers, but they prepare honey for the human beings.

The animals, birds, insects who do not have a capacity of accumulation also bear a possessive nature. Dogs of a street do not allow other dogs in their particular street. If some food is in possession of a dog, it does not allow snatching it by another dog. The wild animals also have a possessive mind; they attack on animals who try to capture their food. We can see possessive nature even in trees and plants. They extend their area of roots to get their food from a distant place.

In this way we can say that tendency of accumulation and possession is a natural instinct in a living being, by which it secures its life. Jaina canons mention that every living being bears four instinct desires (*sanjñā*) of food (*Āhār*), Fear (*bhaya*) copulation or cohabitation (*marihuana*) and possession (*parigraha*) *parigrahasanjñā* is one of them and found in all living beings including plants, insects, birds, animals and reptiles. A human being can have more *parigraha Sañjñā* in comparison to other living beings of the earth.

This is also a fact that this instinct desire may be overcome through true knowledge and practice.

In plants, insects and animals this *parigraha sañjñā* is found lesser than all other beings of the hell, earth and heaven. Its highest form is available in the heavenly beings, then secondly it is found in human beings. The human beings have instinct tendency to accumulate the things which can be accumulated. Some for a month or a year, but the things like currencies, land, gold, shares etc. can be accumulated for a long time.

Parigraha is a technical word of Jaina philosophy which expresses two aspects- (i) Possessive nature and (ii) Accumulation. When a person comes in the contact of an object of a sense organ, then he reacts towards it in the form of desire to have it or aversion of it. Desire to have it is the root of accumulation and nature of possession. The objects may be in the form of word, colour, odour, taste or touch. Someone may like a few of them and somebody may have a version of them. Liking of them inspires a person to possess them. More and more liking of them motivates a person to accumulate or acquire them for his pleasure and satisfaction. He is attracted to these various objects for his pleasure, luxury and to meet out the natural and artificial needs. He is also attracted towards the human beings and pet animals to possess them for his enjoyment and facilitated status of life. *Āyāraṅgasutta* states that a person engrossed in these animate or in-animate objects wants to experience world pleasure from them. This tendency develops without real need and becomes a cause of sorrow, dependence and unhappiness.

Parigraha is also defined as '*mūrchā*', which denotes clinging towards the animate and inanimate elements. This clinging

adversely affects the awareness and consciousness of a person who is attracted to coveted things, hence it is called *mūrchā* or unawareness to the real truth. The person is captured by his desires and proceeds for accumulation of animate and inanimate things. This is the procedure of commencing *parigraha*.

It has been stated that *parigraha* has two aspects accumulation and possession. Accumulation is an outer collection of material things and possession is an inner ownership of them. A person feels mineness in the collected movable and immovable things and wealth. American psychologist William James (1890) states that people largely identify themselves with what they possess. Material possessions constitute a significant part of one's self and develop in the process of growing up in the society. James called it the material self. He suggested that one's material belongings, such as home, clothes, car and furniture are all extensions of one's own self.

Sigmund Freud (1856-1939) discussed about 'Oedipus Complex' which is developed at a very early stage of a up-growing child. A child bears exclusive possession of his mother and in a later stage it gets transferred to material things in life. This clinging tendency of a human being happens in search of sacredness.

Tendency of accumulation and possession is a psychological impact of worldly material things. Erich Fromm (1900-1980) says-"Accumulating worldly objects has become an obsession for people in the present material age. People are known for the wealth they have, cars they drive, the house they live in etc. People are what they possess.

Freedom of possessing

Human beings are more intelligent and developed than other living beings of the

earth. They live in a society with a moral system. They live in a home of their possession. they eat food of their possession, they wear the clothes of their possession. They develop an ownership on these material things by purchasing them in a system. They earn money to purchase the things or make possession on them. This morality through purchasing method has given independence to a person to have more and more things with him. He is authorized to purchase, accumulate and possess as much as he can. Many of the human beings possess the things violating the moral system. They accumulate the things using unfair and illegal means also.

Psychological causes of Accumulation and possession

There are many psychological causes through which a human being is inspired to accumulate or possess the material things.

1. Innate Tendency of Possessiveness

All human beings have an innate tendency of possessiveness. It is found in animals, insects and plants also. All of them have desire to live, hence they possess all those things which are helpful in their living, but this impulsive tendency is lucidly observed in human beings. British Psychologist William McDougall (1871-1931) States- "The impulse to collect and hoard various objects is displayed by almost all human beings and is instinctive. Hence it is seen in children also, as Lewinski (1942) observed that children display an impulse to act possessively and assert claims of ownership at a very early stage. It must be an innate tendency. We also observe in the children that they do not want to give toys of their possession to another child. If these are given by parents to other child then he cries or expresses his protest. Some children demand every day for a new toy and they accumulate that in their possession.

2. Need for Safety and Security

Every living being wants to live, a human being is also having desire to live. He wants to live with safety and security, hence he indulges in acquiring the things which are helpful in his safe and secured living. He believes that cash money and bank balance can help him in maintaining safety and security. He lives in a safe home and keeps money in abundance for doctors, lawyers, insurers etc. He also accumulates several material things for this need. It is a psychological tendency of some human beings that they do not believe much on their relatives, but believe more on inanimate material things. Although Jain canon **Uttarajjhayana** says that non-vigilant person cannot get any safety or security by money or material things.

3. Want of Pleasant and Comfortable Life

When this notion is accepted by most of the people that our pleasant and comfortable life is dependent on beautiful house, rich food, costly clothes, cars, mobiles, televisions etc., then the tendency of acquiring them is boosted. 'More facilities provide more pleasure' becomes the theory of their life. It is alright that sensual pleasure is experienced through various material things grasped by different sense organs. Feeling of Sensual pleasure motivates a person for more accumulation and possession of pleasure giving material things. Desire for luster and luxury also gets place. **Uttarajjhayanāsutta** says- 'A person longing sensual pleasure is indulged in accumulating material things. In **kathopanisad** Nachiketa was given allurements of these materialistic and sensual pleasure giving things, but he denied to have them and expressed his interest in the knowledge of absolute element soul. Sensual pleasure is momentary and happiness felt through victory on this is quite permanent.

4. Desire for Social Respect and Prestige

A person having beautiful house, costly cars, properties, handsome income and bank balance gets respect and prestige in the society. Every human being is a social person and has a desire to live prestigious life. Hence the proceeds towards to earn more and more by hook or crook. Poet Bhartṛhari (5th Century) expressed the world view in the following words- "A person who has ample money is a nobleman, is a wise man, is a scholar, is meritorious, is an orator, is handsome, in this way all qualities lie in money." This statement is almost true in the social behavior of present people. Although the rich people get regard when they serve with their money to the society. Thus importance of money inspires a person to accumulate it for infinite. In the contrary it is also a fact that society pays more honor to those monks who have left all the belongings of their possession.

5. Family Responsibly

Responsibilities of the family also invokes a person to acquire and accumulate the things more than the demands. Nurturing of children, educating them, arranging marriages of them, buying homes, organizing many social festivals and functions, serving the parents are the main responsibilities in India which need accumulation of money and other material things to fulfill the duty honestly. If a person is having not enough accumulation for fulfilling these responsibilities, is dealt as poor and inferior in the society. Demands of children and wife also inspire a person to be indulged in acquiring more money and all means. Demand of different sarrees, gold and diamond ornaments by wife, demand of costly mobile, laptop, bike and car by children make puzzled a person and he becomes engaged in accumulation of these things.

Āyāraṅgasutta makes us cautious that a fool person does violent deeds for others (family members), but individually (in earning etc.) he only gets sorrows and mental perverseness as a result.

6. Competitive Urge and Greed of Prosperity

A human being is an envious person and wants to win the competition with others. Competitive urge and greed are the such internal causes which give no limit of acquisition of property, money etc. Business is boosted by these urges. *UttarajjhayanaSutta* explains that- "Greed is enhanced by achievement or acquisition of anything."

Keeping greed in mind wholesalers and stockiest make hoardings of various commodities like grain, oil, pulses, onion etc. and create scarcity of them. This mentality to earn more profit instigates the tendency of accumulation. People have to pay more money for buying those commodities. *Āyāraṅga* says-"A greedy person faces trouble though remains ready in day and night for acquiring the coveted things and wealth. His mind remains always engaged in the anxiety to achieve those things. He can do theft and violence also for this purpose." Hence this tendency of greed is avoidable.

Suyagadāngasutta explains-"A greedy person does not know that he will get expired, he extends his minenessto wards the material objects and does sinful activities. He thinks that he will not be old and expired, hence remains in trouble day and night in earning money and collecting other things.

7. Three Another Causes According to Economist Thaler

Noble prize winner Richard Thaler gives three main causes for more purchasing- (i) Social pressure, (ii) Lack of self-control, (iii) Endowment Effect. All these three

psychological points also motivate a person to accumulate the material things. One of these is lack of self-control. A person goes into market to purchase needful thing, but when he is attracted to another thing then he loses his self-control and purchases it without need. In the market "Buy one get one free" such allurements also motivate a person to lose his self-control. Thus accumulation of unnecessary things goes increasing. If my neighbor purchases a car then I also make up my mind to purchase it without any need, thus social pressure also increases the tendency of accumulation. One another cause is 'limited rationality'. When a person cannot judge the utility of a thing to be purchased even though he purchases it, then that is called endowment effect or limited rationality.

Generally a person has desires, but does not have a power to rationalize them, hence he cannot control his desires and he always remains busy in fulfilling them. He gets affected through advertisements on television, internet, newspapers, hoardings displayed on roads. He does not evaluate his actual demand and budget. He makes up his mind to buy the particular thing without need. This is another cause of more accumulation.

Bad Consequences of Accumulation and Possession

A Person perceives pleasure and prestige in accumulation and possession of material things, is not true in a wide perspective. Accumulation and possession keep a person in tension and sorrows and the limit of accumulation extends into greed. Greed is always a demerit of human being for himself and for the society. There is no such rule in the world that who possesses more material things is happier and secured. There is no perfect relationship between these two. A saint who does not have accumulation of money, food,

land etc. experiences more happiness than a rich man. Hence, we have to resort the tenet of *Aparigraha* of Jain Religion which through a light to use the things without mental possessiveness.

There are many bad consequences of more accumulation and possession, some of them are mentioned below:

1. Effects on Economy

In the view of Economics, tendency of hoarding and accumulation is not legitimate. Liquidity of money and products is necessary for the economic progress. It means in the interest of the society and country accumulation of money, raw material and products is dangerous in the economic progress and welfare of the society. Inflation in price is seen due to hoarding of essential commodities. Land prices go on hike when a person possesses many plots of land. Accumulation on one place creates scarcity at other place, in this way a needy person is deprived of the particular commodity and the economic balance is disturbed.

2. Social Consequences

When a part of a society uses or collects more of the natural resources and products, the other part of the society is deprived of it and it creates a social inequality. The person, who owns a lot of things, exploits others and the problems of starvation, poverty etc. also take place and thus class distinction also increases.

Person who possesses a lot, flaunts his richness and makes others feel jealous of it and they are also attracted to want more and more collection of money and material things. Due to this, family disputes and social conflicts arise.

3. Moral Consequences

The feeling of possession and the trend of collection makes a person selfish. He wants to achieve more and more by hook or by crook.

He becomes involved in black marketing, bribery, tax-evasion etc. for increasing bank balance. Adoption of illegal methods give rise to corruption.

4. Environment - Harming Consequences

Due to the increased trend of accumulation and collection, environment is getting polluted. Increased usage of air-conditioners in offices and homes, various vehicles on the roads, are increasing environmental pollution. Extreme Mining and exploitation of natural resources are also polluting the environment.

5. Spiritual Consequences

Tendency of collection and possession makes a person confused. He is not able to achieve anything like an ox of an oil mill. *Ācārya Shīlāṅka* in his commentary on *Suyagadaṅga* says- "Possession creates a trouble and harms even to the wise man."

Accumulation without need and tendency of possession takes place due to lack of right view and wisdom. Ownership of material things nurtures an egoistic view, deceitful conduct and greedy nature. The person who is indulged in accumulation and possession never feels happiness and peace in mind. He remains in sorrows and creates sorrows for others. His nature of sensitiveness also disappears. Hence the tendency of accumulation and possession is to be renounced on spiritual level.

6. Consequences to Health

A man having possessive nature remains mentally and physically ill. The persons having more materialistic things are seen as patients of various diseases. They live in depression, tension, blood-pressure, Heart disease etc.

In this way accumulation and possession beyond a limit creates the path of sorrows in place of pleasure and happiness. Accumulation is just full in a limit for fulfilling the

needs. *Āyāraṅgasutta* propounds that a person should come out of possessive nature. Accumulation cannot take place without desires; hence we should control our desires of luster and luxurious life. A man should not be slave of the material things if he wants to live happy life.

If accumulation is done in the interest of welfare of all other people, then it can be justified. It should be used by them who are not able to earn such as children, old men and patients. Flowing water remains pious and accumulated water can get spoiled after a certain period of time. The same way flowing money is more useful than its accumulation at one place.

Some Solutions to Overcome the Psychological Causes

The Psychological causes which instigate a person for accumulation and possession, can be overcome through right knowledge or inner wisdom. The texts of Jain, Buddhist and Vedic traditions give such arguments which provide a vision to diminish the attitude of accumulation and possession. Jaina text *UttarajjhayaṇaSutta* says-"If the whole world is given to a person, he cannot be satisfied through it due to his greed."The person of possessive nature feels always fear of loss or theft of the things of his possession. Attachment to these things is a cause of sufferings and dissatisfaction. *parigraha* is a sin and it gives sufferings to a person indulged in it. *Parigraha* means capturing by a person from all sides. A thing, a servant, a thought is captured by a person in his possession with attachment is *Parigraha*. The person is also captured mentally and emotionally by those things and animate belongings.

According to *Thānaṅgasutta parigrahasañjñā* arises in a human being due to four reasons- 1. Contact of things, 2.Greed, 3. Information gained through any source which

motivates a person for having a thing, 4. Continuous thinking about the accumulation and possession. Although *parigrahasaññā* is an instinct desire, nobody trains us to have this desire, but it arises due to above four reasons in our life. When we come in the contact of things which seem us proper to fulfill our need, to give pleasure or comfort to us, we make up our mind to have them. We have impressions of the things which look us favorite or lovely, hence we intend to have them more and more. This tendency converts into greed and greedy person becomes a slave of those things and tries for more accumulation and possession of those things. Generally we do not know about many things, hence we do not have any desire to have them, but when we know about them through advertisements on television channels, on internet, on hoarding or through mouth of others then we feel attracted to those things. Most of us are not satisfied and happy with the things we have but feel scarcity of what we do not have. This tendency generates sufferings and tension to us. There is no pleasure or happiness inside the things, but it is our inner view which make us to feel pleasure in their presence and use. It is also true that we can experience happiness even in the absence of those things. However physical need or necessity can be fulfilled, but inner tendency of greed and possessive nature cannot be quenched by the material things.

Everybody wants to become prosperous, but what is the definition of prosperity? Generally a person having abundance of material things and wealth is considered as prosperous, because he has enough means to fulfill his natural and artificial needs. He should be happy always, but it does not happen. The person who is having more is seen unhappy in the world and has more wants or demands for accumulation and possession of

material things. He seems poorer than the poor persons of the world. In this way prosperity and happiness do not bear true relationship in between. The person having lesser accumulation and possession is seen happier than the person having abundance of wealth. This truth is to be conveyed to all the people of the world to remove the present concept of prosperity and happiness. The inner thought and wisdom to live happily with lesser desires in every condition is to be established and developed in the people of the world. This truth is quite helpful in the psychological change of the people. Economist Alan Krueger and Noble Prize Winner Psychologist Daniel Kneepan say after a study- "The belief that high income is associated with good mood is widespread but mostly illusory." People with above average income are relatively satisfied with their lives, but are barely happier than others in moment to moment experience, tend to be more tense and do not spend more time in particularly enjoyable activities." Hence a race for earning more and more money without any balance and happiness in life is avoidable. There should be also a balance in keeping things in possessions to fulfill the needs and after that these should be given or distributed among the destitute and needy persons.

Psychologist Freud propounds three inner Factors of personality i.e. Id, Ego and Super ego. The instinct tendency of possessiveness occurs due to Id part of the personality. The Id is governed completely by the pleasure-pain principle and seeks immediate satisfaction of all desires disregarding the moral principles and realities of life. The Ego is self-conscious intelligence aware of what is going on around in the physical and social environment. There is awareness of the consequences of behavior

and attempt is made to make a balance between the needs and demands. In this way some control over accumulation and possession is maintained by this Ego factor of the personality. The super ego part is capable to have complete control over the tendency of unnecessary accumulations and possessions. Super ego is governed by the ideas of conscience, and can develop the moral and rational behavior which can be helpful in controlling the instinctive desire of *parigraha*. Super ego may condemn the doing of the Id and the Ego and tries to keep the individual on the line of morality and ideals it has learned. Hence it is possible to activate the super ego part of an individual and to convey him the right track of controlling the tendency of accumulation and possession with keeping a limit on desires and wants.

Conclusion :- Psychology of an individual may be changed through spiritual teachings, logical statements and discussing the bad consequences of accumulative and possessive tendency. Possessive nature generates tension and sufferings to a person and problems to the society, economy and

environment of the world, hence this tendency should be diminished and restrained for the benefit of the self and the world of the all living beings. The Jaina canons suggest to quit the possessive nature whether an individual possesses more or less material things.

Reference books :

1. Āyāraṅgasutta (Ācārāṅgasūtra) : Āgama Prakāśana Samiti, Beawar, Vol. I.
2. Beyond sustainable economy, Edited by Sushma Singhvi and Rudi Jansna, Prakrit Bharati Academy, Jaipur, 2016
3. Dravyānuyoga (Part-1), Āgama Anuyoga Prakāśana Samiti, Abu Parvat (Raj.)
4. H.R. Bhatia : Elements of social Psychology, 1970, Bombay : Somaiya Publications Pvt. Ltd.
5. Kathopaniṣad, Geeta Press, Gorakhpur (U.P.)
6. Nītiśataka, Sahitya Bhandar, Meerut (U.P.)
7. Paṇṇavaṇasutta, Āgama Prakāśana Samiti, Beawar.
8. Suyagadaṅgasutta (SutrakritangSūtra) : Āgama Prakāśana Samiti, Beawar.
9. Suyagadaṅgaṭkā, Motilal Banarsidass, Delhi
10. Thāṇaṅgasutta (Sthānāṅgasūtra) : Āgama Prakāśana Samiti, Beawar.
11. Uttarajjhayaṇasutta (Uttaradhyāyanasūtra), Samyag Jñāna Pracāraka Maṇḍala, Jaipur (Raj.)

-S 1, 28, Ayuvaan Singh Nagar, Maharani Farm, Durgapura, Jaipur-302018 (Raj.)

Former Dean, Faculty of Arts, Edu. & Social Sciences
Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Raj.)

वृक्ष से लें सीख

प्रेषक : श्री मनमोहनचन्द बाफनर

दुर्लभ मानव भव मिला, इन्द्रिय पाँच सुखकार।
मानव से तरुवर भलो, बात जान गुण धार।।
धूप सिके सिर ताप सूँ, पथिक रे छाह करंत।
फैंके पत्थर जो भला, फल वाँपे बरसन्त।।
रूँख खड़ो वन माँयने, इण सूँ लीजो सीख।
न ही काटन पे क्रोध है, न ही सिञ्चन पे प्रीत।।
पर उपकारी बहुत है, शीतल छाँव करंत।
पशु-पक्षी वासो करे, मानव मन हरसंत।।
पत्र पुष्प और फल मिले, पके सो नीचे फैंक।

रूँख परिग्रह ने तज रहे, पतझड़ में बन एक।।

आँधी बाजे आकरी, लूल लूल नम नम जाय।

मानव रूँख सूँ सीख लो, विनय करत नम जाय।।

कीड़ी-कमेड़ी कागला, सहस्र झोपड़ा डाल।

राखे सब ने प्रेम सूँ, ऐसो वृक्ष महान्।।

एक रूँख पे सौ पले, नर तू सोच आ बात।

पीछे रह गयो रूँख सूँ, चेतन कर जो विचार।।

रहवाँ ने तन आप रो, झूला दे हुलराय।

बदले कुछ माँगे नहीं, स्वागत कर हरसाय।।

-128/376, एच 2 ब्लॉक, जैन सदन, किंदवई

नगर, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

त्याग : धर्म का मूल आधार

डॉ. दयानन्द भार्गव

संसार में अनेक छोटे-बड़े धर्म हैं। उन सभी धर्मों के कुछ आदेश भी हैं और उपदेश भी हैं। प्रायः ये आदेश या उपदेश सबके लिये लाभप्रद ही हैं, किन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन आदेश और उपदेशों का जैसा लाभ होना चाहिये वैसा लाभ हुआ नहीं।

इस सन्दर्भ में जैनधर्म ने एक तथ्य को रेखाङ्कित किया। धर्म के किसी भी आदेश के पालन में कुछ न कुछ त्याग का अंश अन्तर्निहित रहता है। यदि मनुष्य त्याग करने को बिल्कुल ही तैयार न हो तो किसी भी धर्म के किसी भी आदेश का पालन नहीं हो सकेगा। यह बात थोड़ा-सा विचार करने पर स्पष्ट हो जाती है। एक सभा में धर्म के स्वरूप पर चर्चा चल रही थी। डॉ. ए. एन. उपाध्ये ने कहा—“त्याग में धर्म है।” धर्म के इस त्यागमय स्वरूप का ही विस्तार सारा जैनधर्म है।

मनुष्य की सहज ही स्वार्थ पर गहरी पकड़ है। वह चाहता है कि उसके स्वार्थ को कोई चोट न पहुँचे, उसकी सुख-सुविधा में कोई कमी न आये और धर्म भी सध जाये, किन्तु यह सम्भव नहीं है। जैनधर्म का प्रारम्भ भी त्याग से है और परिपूर्णता भी त्याग में है। इसलिये कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जैनधर्म कम ही लोगों से सध पाया है। हमें त्याग के नाम से भी डर लगता है और हम तरह-तरह से अपने मन को बहलाते हैं—जल में कमल की तरह निर्लिप्त रहना चाहिये। सभी सुख-सुविधाओं के बीच भी धर्म सध सकता है, पर मन शुद्ध होना चाहिये इत्यादि। ऐसा कहकर वस्तुतः एक सिद्धान्त की आड़ में हम अपनी सुविधा-भोगी प्रवृत्ति को प्रश्रय दे रहे हैं।

सभी धर्मों में एक बात मान्य है कि हम शरीर तथा मन नहीं हैं, आत्मा हैं। ऐसी स्थिति में शरीर तथा मन की सुविधा और इच्छा पूर्ति किसी धर्म का साध्य अथवा लक्ष्य नहीं हो सकता। फिर भी कभी-कभी किसी देवता अथवा मन्त्र को मन की इच्छा की पूर्ति का साधन बना लिया जाये तो उसे धर्म का शुद्ध रूप तो नहीं कह सकते, भले ही वह सकाम प्रक्रिया कितनी भी लोकप्रिय क्यों न हो। वस्तुतः धर्म के क्षेत्र में किसी चीज के प्रामाणिक होने का आधार उसकी लोकप्रियता नहीं है। अन्यथा सबसे अधिक प्रामाणिक तो चार्वाकदर्शन को मानना होगा जिसका दूसरा नाम ही लोकायत (लोक में फैला हुआ) है। दूसरी ओर जैनधर्म के अनुयायियों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है तो क्या इस आधार पर यह मान लिया जायेगा कि जैनधर्म में कोई कमी है? ऐसा बिल्कुल नहीं कहा जा सकता है। वस्तुतः जैसे प्रजातन्त्र में सही-गलत का निर्णय संख्या-बल पर होता है, धर्म के क्षेत्र में सही-गलत का निर्णय अनुयायियों की संख्या पर निर्भर नहीं माना जा सकता। इसके विपरीत प्रायः प्रत्येक धर्म में यह कहा जाता रहा है कि धर्म का सच्चा पालन करने वाले तो सदा से ही विरले लोग रहे हैं। ‘यह वो नगमा है जो हर साज़ पर गाया नहीं जाता।’

किन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं है कि धर्म का ऐसा स्वरूप ही नहीं जो सबके लिये हो। उदाहरणतः यदि कोई धर्मशास्त्र को न माने किन्तु बुद्धिवादी हो और विज्ञान को ही माने और वह धूम्रपान का यह मानकर त्याग कर दे कि चिकित्सक कहते हैं कि धूम्रपान से केन्सर होने की आशंका बढ़ जाती है तो इतने मात्र में मैं उसके धूम्रपान के त्याग का अनुमोदन ही करूँगा। उसका धूम्रपान का त्याग केन्सर से बचने के स्वार्थ से प्रेरित है, किसी निःस्वार्थ भाव से प्रेरित नहीं है तथापि

यदि उसे धूमपान की लत है और वह उस लत को छोड़ता है तो इससे उसके आत्मबल में वृद्धि ही होती है, जिसके और बढ़ जाने पर निःस्वार्थ भाव से भी त्याग करने की सम्भावना बनती है। अर्थात् धर्म में क्रमिकता को पूरा स्थान है अन्यथा शास्त्र में मुनिधर्म का ही प्रतिपादन होता, श्रावकाचार का नहीं।

वस्तुतः श्रावकाचार के भी दो पक्ष हैं, क्योंकि श्रावक धर्मसंघ का भी सदस्य है जिसकी सीमा जैनधर्म है और उस समाज का भी सदस्य है जिसमें अजैन भी शामिल हैं। धर्मसंघ का सदस्य होने के नाते उसे जैनशास्त्रानुसार चलना है, किन्तु समाज का सदस्य होने के नाते उसे समाज के उन नियमों का भी पालन करना है जिन नियमों का पालन करने में सम्यक्त्व की हानि न होती हो और व्रत में दूषण न लगे। सोमदेवसूरि ने ऐसी स्थिति को 'लौकिक विधि' कहा है-

सर्व एव हि जैनानां, प्रमाणं लौकिको विधिः।
यत्र न सम्यक्त्व-हानिः स्यात्, यत्र न व्रत-दूषणम्॥

उदाहरणतः एक जैन जैनधर्म का भी पालन करेगा और जैनधर्म सम्बन्धी अपनी चर्या से समन्वय करते हुए भारत के संविधान का भी पालन करेगा। इस प्रकार वह धार्मिक भी है और भारतीय संविधान की पन्थ निरपेक्षता का भी पालन करता है। भारत में सेक्यूलरिज्म के पालन का यही एकमात्र विकल्प है।

इस प्रकार त्याग में धर्म मानने पर दो बातें स्पष्ट होती हैं। एक तो स्वसामर्थ्यानुसार त्याग में क्रमिकता को पूरा स्थान है और दूसरी ओर सामाजिक दायित्व निभाने का पूरा अवकाश है। हाँ, एक अपवाद अवश्य है कि साधु पर कोई सामाजिक दायित्व नहीं होता, किन्तु उसके महाव्रत उसे कोई समाज-विरोधी कार्य करने की भी अनुमति नहीं देते। यह त्याग-धर्म और समाज-धर्म की स्थिति हुई।

अब एक प्रश्न आर्थिक विकास का भी है। त्याग-धर्म को विकास का विरोधी मानने का भ्रम हो सकता है। यदि हम अपनी आवश्यकताएँ कम कर देंगे

तो उत्पादन भी अधिक नहीं होगा और विकास की दौड़ में हम पिछड़ जायेंगे-ऐसा तर्क दिया जा सकता है।

इस प्रश्न पर यह विचार करना है कि विकास का अर्थ अधिक उत्पादन है या अधिक प्रसन्नता। एक सीमा तक पदार्थ हमें सुविधा देता है, किन्तु एक सीमा के बाद अनावश्यक पदार्थों का ढेर हमारे लिये दो प्रकार से बाधा बन जाता है। प्रथम तो अनावश्यक विलास सामग्री हमारी शारीरिक तथा मानसिक क्षमता को कम करती है- यह बात प्रत्यक्ष सिद्ध है। शराब जैसी मादक चीजें हमारी क्षमता बढ़ाती हुई सी भले ही लगे, किन्तु अन्ततोगत्वा वे हमारी क्षमता घटाती ही हैं। डॉक्टर कोई धर्मोपदेशक नहीं होते, किन्तु वे भी एक सीमा के बाद शराब के निषेध की ही बात करते हैं। यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि सीमा में व्यसन का सेवन प्रायः सीमा तोड़ ही दिया करता है।

विकास के प्रश्न पर एक दूसरी महत्वपूर्ण दृष्टि से भी विचार करना होगा। पिछले स्वतन्त्रता के 75 वर्षों में अर्थशास्त्री आँकड़ें देकर बतायेंगे कि भारत का विकास हुआ है। ये आँकड़ें विकास के सही सूचक हैं या झुग्गी-झोंपड़ी में और गाँवों में रहने वाले वे भारतीय भी विचार के योग्य हैं जिन्हें न ठीक से पोषक भोजन मिल पाता है, न शिक्षा और न चिकित्सा। आये दिन तूफान और बाढ़ों में जिनके बने बनाये घर सामान सहित बह जाते हैं। गाँवों में खेती सिमट रही है और वहाँ की नयी पीढ़ी कठोर परिश्रम करके शहरों में आठ-दस हजार के मासिक वेतन पर घुटन की ज़िन्दगी जीने के लिए मज़बूर है। उनको रोज़गार देने वाले मालिक उनके साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं, सो अलग। सरकारी नौकरी रिश्वत में पैसे देकर मिल रही है- ऐसा भी सुनायी देता रहता है।

विकास की दृष्टि से त्याग-वृत्ति पर विचार करना आवश्यक है। जो संसाधन विलास-सामग्री के उत्पादन में लग रहे हैं, क्या उनको वञ्चित वर्ग की पीड़ा दूर करने में नहीं लगाना चाहिये? यदि इच्छा शक्ति हो तो यह असम्भव नहीं है, किन्तु यह इच्छा-शक्ति त्याग की महिमा समझने पर आती है।

विश्व भर में जो भी श्रद्धा के पात्र बने हैं वे त्याग के कारण बने हैं, न कि धन-वैभव के कारण। त्याग श्रद्धा प्राप्त करने के लिए नहीं किया जाता, किन्तु त्याग को बिना माँगे जो श्रद्धा मिलती है वह इस बात की सूचक है कि हम कहीं अन्तर्मन में जानते हैं कि हमारा स्वभाव त्याग है, संग्रह तो विभाव ही है। यह भी सहज ही सिद्ध है कि स्थिरता तो स्वभाव में ही है, विभाव तो आता-जाता रहता है।

हमने अभी तक जैनधर्म के परिप्रेक्ष्य में त्याग की चर्चा की, किन्तु सच यह है कि त्याग तो सभी धर्मों के मूल में है। वेदान्ती संन्यासी, बौद्धभिक्षु, मुसलमान सूफी फकीर, ईसाई रहस्यवादी साधक का जीवन और कहीं भी तत्तद् ग्रन्थ उठाकर देखिये तो त्याग और वैराग्य का आलोक बिखरा मिलेगा। जैनधर्म को यह श्रेय जाता है कि उसने त्याग, तपस्या और वैराग्य को जिस मुख्यता से रेखाङ्कित किया वह उसकी गहरी सूझबूझ का परिचायक है।

हुआ यह है कि विज्ञान की तकनीक ने विलासिता के साधन सहज सुलभ करा दिये हैं। कभी-कभी हम आवश्यकता से भी अधिक विलासिता को महत्त्व देते हैं तो जीवन असन्तुलित हो जाता है। विलासिता की सामग्री के साथ-साथ एक-दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष अस्त्र-शस्त्रों का भी है जो विज्ञान की कृपा से अत्यन्त घातक भी हैं और अत्यन्त महँगे भी। इस दिशा में भी दो बातें विचारणीय हैं। प्रथम तो अब युद्ध महाभारत की तरह दो सेनाओं के बीच ही सीमित नहीं रहता, अपितु स्त्री, बच्चों, बूढ़ों और नागरिकों को भी अपनी लपेट में ले लेता है। ऐसे युद्ध को वीरता के नाम पर महिमा-मण्डित नहीं किया जा सकता। दूसरे, आज आणविक शस्त्रों के कारण युद्ध में एक के विजयी और दूसरे के पराजित होने जैसी सम्भावना कम हो गयी। प्रायः दोनों ही पक्ष पराजित हो जाते हैं। एक पक्ष न्याय का पक्ष लेगा और दूसरा पक्ष अन्याय का होगा, अतः यह एक धर्मयुद्ध होगा-ऐसा कहना भी सम्भव नहीं

लगाता। जब दो पक्ष लड़ते हैं तो धर्म तो दोनों ही छोड़ देते हैं। प्रसिद्ध है कि प्रेम में और युद्ध में सभी ज़ायज है- All is fair in Love and War.

ऐसे में मनुष्य-जाति को यह परिपक्वता दिखानी चाहिये कि वह 'शक्तिशाली ही बचता है' (Survival of the fittest) की जगह जीव एक-दूसरे के उपकारक हैं, 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' वाले सिद्धान्त पर ध्यान दें ताकि यह स्पष्ट हो सके कि प्राणी एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करके नहीं, अपितु एक-दूसरे के सहयोग से आगे बढ़ें। इतिहास इस बात का साक्षी है।

अन्त में कहना चाहूँगा कि जैनधर्म-दर्शन के अध्येता विद्यार्थी और विद्वानों को जैनधर्म के मूल, त्याग पर एक सुपर-स्ट्रक्चर (Super structure) खड़ा करने में अपना श्रम नियोजित करना चाहिये, जिसके कुछ स्तम्भ इस प्रकार हो सकते हैं-

- त्याग :: विश्व के धर्मों की आधार-शिला।
- त्याग :: एक अनुभव सिद्ध मनोविज्ञान का सार।
- त्याग :: विलासिता बनाम प्राकृतिक जीवन।
- त्याग :: निःश्रेयस सहित अभ्युदय का सोपान।
- त्याग :: एक क्रमिक विकास का उपक्रम।
- त्याग :: एक सैक्यूलर (Secular) अवधारणा।
- त्याग :: सन्तुलित आर्थिक विकास की नींव।
- त्याग :: युद्ध-मुक्त विश्व का साधन।
- त्याग :: सामाजिक दायित्व का परिपूरक।

और भी कुछ स्तम्भ हो सकते हैं।

एक बात अवश्य विचारणीय है। सभी मनुष्यों की प्रकृति एक जैसी न है और न हो सकती है। ऐसे में हमें विविधता में एकता खोजकर उस पर बल देना चाहिये और विविधता के पक्ष को विवाद का विषय नहीं बनाना चाहिये। मनुष्य के अहंकार को और दूसरे के मत को काटने में व्यक्ति को सुख मिलता है तो एकता का मुख्य पक्ष लुप्त हो जाता है और विविधता का पक्ष तूल पकड़ लेता है। यही साम्प्रदायिकता को जन्म देता है जो जिहाद जैसी आतङ्कवादी प्रवृत्ति तक में बदल जाता है।

त्याग की बात करेंगे तो त्याग की अवधारणा में मतभेद भी सामने आयेगा। उस मतभेद पर अटके नहीं। जितना स्वीकार्य लगे उसे स्वीकार करके आगे बढ़ें, जो स्वीकार्य न लगे उसे नज़र-अन्दाज़ कर दें। इसे मैं साम्प्रदायिक आग्रह का त्याग कहता हूँ, जो छोटा त्याग

नहीं है। सभी समय की पुकार सुन रहे हैं। जैन भी समय की पुकार सुनें। हाँ, समसामयिक होने के लालच में शाश्वत है, उसे न छोड़ें।

-संस्कृत के सेवानिवृत्त प्रोफेसर जैनदर्शन एवं वेदोपनिषद् विशेषज्ञ

dayanandbhargava@gmail.com

सत्य

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

सत्य अब सत्य नहीं रहा
वह बँट गया है उनके और मेरे खेमों में
उनके और मेरे झगड़े हो रहे हैं
पूरे विश्व में सत्य को लेकर के।
अपने-अपने धर्मों के भी सत्य हैं
राजा-महाराजाओं, शासनाध्यक्षों के भी
धर्मग्रन्थों के भी सत्य हैं
उनके अनुयायियों के भी
कभी-कभी तो एक ही पंथ, धर्म, ग्रंथ
मानने वालों के भी सत्य बँट जाते हैं
जिनके दावे होते हैं कि इनके आधार हैं वे ही
ईश या ग्रन्थ जो दूसरों के भी हैं
सबके अपने दावे हैं
कि सही व्याख्या वे ही कर रहे हैं
यहाँ तक कि वे ऐसे ही सत्यों के लिए

उठा लेते हैं-हथियार, पत्थर और कानून
जनमत भी जुटा लेते हैं
सड़कों पर और उसी तथाकथित
सत्य की रक्षा के लिए
जला देते हैं-बसें और ट्रेनें
सार्वजनिक सम्पत्तियाँ जिन्हें बनाया था
उन्होंने या उनके पूर्वजों ने अपने ही हाथों से।
जब लोग सत्य के आगे खड़े हो जाते हैं
तो सत्य पीछे रह जाता है
सत्य का नाम ही रह जाता है।
सत्य भी एक रस्म बन गया है
सत्य के लिए कसमें तोड़ दी जाती हैं
पर रस्में नहीं, वे यह नहीं जानते कि
सत्य जरूरी है, रस्म नहीं
सत्य जरूरी है मेरा या तेरा सत्य नहीं।

-महामन्त्री, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन
विद्वत्परिषद्, बुरहानपुर-450331 (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी पर अभिमत

विजया कोटेचा

जिनवाणी मुझे इतनी अच्छी लगती है कि हर माह अधीर होकर प्रतीक्षा करती हूँ। इसका हर अंक विशेष होता है। अभी जिनवाणी के मई 2022 के अंक में आपने राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के भाषण का महत्वपूर्ण भाग प्रकाशित किया। अनेक पत्रिकाओं में दिल्ली में हुए उक्त कार्यक्रम के समाचार पढ़े, जिनमें राष्ट्रपति के उद्गार भी समाविष्ट थे, लेकिन संदेश समग्रतः संप्रेषित नहीं हो सका। लेकिन जिनवाणी ने वस्तुनिष्ठ तरीके से टिप्पणी के साथ राष्ट्रपति के अति प्रेरक भाषण अंश को लेख रूप में प्रकाशित करके सबका मान बढ़ा दिया। इसके लिए जिनवाणी के साथ ही बम्बोरा के श्री सुरेशचंद्र धींग और कवि डॉ. दिलीप धींग धन्यवाद के पात्र हैं।

-77, स्टेशन रोड, अम्बत्तूर, चेन्नई-600053 (तमिलनाडु)

नज़रिए का जीवन पर प्रभाव

श्रीमती अरुणा कर्णावट

पतझड़ में भी फूल बनकर मुस्कुराना जिन्दगी है।
सुख-दुःख में सम रहकर गम भुलाना जिन्दगी है।।

सुख-दुःख जीवन के दो पहलू हैं, जीवन में सुख है तो दुःख भी है। बसन्त की बहार है तो पतझड़ का सूखापन भी है। दिन है तो रात भी है। सर्दी है तो गर्मी भी है।

संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा उत्पन्न नहीं हुआ जिसके जीवन में सिर्फ सुख ही सुख हो अथवा दुःख ही दुःख हो। सुख और दुःख का चक्र जीवन में एक चक्र की भाँति अनवरत चलता रहता है।

सुख और दुःख दोनों में समान रहना, उनमें हमारी मनःस्थिति का समान रहना हमारे नज़रिये पर निर्भर करता है। जैसा कि कहा भी गया है-दृष्टि बदलो सृष्टि स्वतः ही बदल जाएगी।

यदि हम दुःख अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों के समय जरा भी विचलित हो जाते हैं और नकारात्मकता को स्वयं के ऊपर हावी कर लेते हैं तो मानसिक अशान्ति को न्यौता देते हैं। नकारात्मकता के साथ वह दुःख हमारे लिए कई गुणा ज्यादा हो जाता है। कितनी भी पीड़ादायक स्थिति उपस्थित हो जाए हमें अपनी मानसिक स्वस्थता को बनाए रखना है। ये विचार मन में लाना है कि यह भी नहीं रहेगा, क्योंकि समय और परिस्थिति निरन्तर परिवर्तनशील है, समय कभी-भी एक जैसा न तो था, न है और न ही रहेगा।

जो भी व्यक्ति प्रकृति प्रदत्त इस व्यवस्था को समझ लेता है वह कभी भी मानसिक अशान्ति, तनाव और अवसादों का शिकार नहीं होता है। इसलिये प्रत्येक परिस्थिति में समता को पुष्ट करते हुए सम रहना ही सकारात्मकता है।

प्रत्येक परिस्थिति में सम या प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति ही दुःख के प्रत्येक क्षण को आनन्द के क्षणों में परिवर्तित कर सकता है। कितने भी बुरे से बुरे हालात उत्पन्न हो जाएँ, वह व्यक्ति विचलित नहीं होता है। परिस्थितियाँ विपरीत होने पर भी हमें अपने आपको विपरीत नहीं होने देना है। कोई मान दे, सम्मान करे अथवा अपमान करे, सुख आए अथवा दुःख, पारिवारिक जन अपने अनुकूल हों या प्रतिकूल अपने चित्त को डाँवाडोल करना ही नहीं है।

जिस प्रकार धूप के बाद छाँव आती है, रात के बाद दिन निकलता है, गर्मी के बाद सर्दी आती है उसी प्रकार दुःख के घने बादलों के बाद सुख की बारिश होना अवश्यम्भावी है, इसलिये प्रत्येक विपरीत व्यक्ति, परिस्थिति और क्षण को सकारात्मक रूप में जीना ही वास्तविक जीवन है।

कभी भी हमें किसी के हाथों का रिमोट कण्ट्रोल नहीं बनना है कि उस अमुक व्यक्ति ने हमारे साथ गलत व्यवहार किया और हम दुःखी हो गए, विचलित हो गए। किसी अमुक व्यक्ति ने हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया और हम खुश हो गए। इस तरह घड़ी के पेण्डुलम की भाँति अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में इधर-उधर नहीं होना है। वरन् प्रत्येक परिस्थिति में सम रहते हुए आनन्दित रहना है। किसी भी प्रकार का वातावरण अथवा स्थिति उत्पन्न हो जाए, हमें हमारे धैर्य और समता को बनाये रखना है, दूसरों के हाथों का खिलौना बनकर नहीं जीना है।

हमें अपना मूल्याङ्कन भी दूसरों की क्रिया अथवा प्रतिक्रिया के आधार पर नहीं करना है, क्योंकि हम किसी के अच्छा कहने पर अच्छे और बुरा कहने पर बुरे नहीं हो सकते। हमसे ज्यादा अच्छा मूल्यांकन हमारा

कोई भी नहीं कर सकता।

वर्तमान में परिवार, समाज, देश में जितने भी झगड़े, मन-मुटाव, हिंसा इत्यादि हो रहे हैं उन सबके पीछे मूलभूत कारण व्यक्ति का नकारात्मक दृष्टिकोण है। इस नकारात्मकता की वजह से व्यक्ति का आभा-मण्डल भी नकारात्मक हो जाता है। वह प्रत्येक व्यक्ति, घटना और परिस्थिति को सकारात्मकता के साथ न लेकर नकारात्मकता के साथ ही लेता है और सामने वाले को भी नकारात्मक बना देता है, जिससे पूरे परिवार का वातावरण ही दूषित और नकारात्मक हो जाता है। फलतः वह चारों ओर अशान्ति एवं दुःख की अनुभूति करता है।

इसलिये हमें हमारे नज़रिये को अथवा दृष्टि को सकारात्मकता का कवच पहनाना आवश्यक है, यह हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। सकारात्मकता के द्वारा ही हम जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। बेहतर नज़रिये से हमारी कार्य-क्षमता में भी वृद्धि होने लगती है, हमारे रिश्तों में भी मधुरता का विकास होने लगता है, बेवजह तनाव नहीं होता। बेहतर नज़रिये वाले की भाषा पर भी पूरी पकड़ होती है। भाषा शालीन, मधुर और विनम्र होती है।

कभी भी प्रतिक्रिया के जाल में उलझना नहीं चाहिए, न ही प्रतिक्रिया करनी चाहिये और न ही किसी की प्रतिक्रिया पर हमें दुःखी होना चाहिये। प्रतिक्रियाशील व्यक्ति कभी भी न तो स्वयं शान्त होता है और न ही किसी दूसरे को शान्त होने देता है। इसलिये कभी भी किसी व्यक्ति अथवा परिस्थिति पर प्रतिक्रिया देने से बचना चाहिये।

किसी भी समस्या, व्यक्ति, परिस्थिति में इतना सामर्थ्य नहीं है कि वह हमें दुःखी बना सके, उस समस्या के प्रति हमारी दृष्टि ही हमें सुखी-दुःखी करती है। कोई भी घटना हमें उतनी ही प्रिय अथवा अप्रिय लगती है जितना हमारा दृष्टिकोण हमें उस अमुक घटना के लिए सिखाता अथवा समझाता है। जैसे कोई व्यक्ति किसी के

बारे में बता रहा होता है तो वह अमुक व्यक्ति के बारे में नहीं वरन् स्वयं के दृष्टिकोण से स्वयं के बारे में बता रहा होता है। हमें तो प्रत्येक परिस्थिति में समता रखते हुए सकारात्मकता बनाए रखनी है।

जैनधर्म में भगवान महावीर ने सामायिक की बात कही तो गीता में श्रीकृष्ण वासुदेव ने समत्व-योग की बात कही है। जबकि सामायिक का अर्थ समत्व की साधना है तो समत्व-योग का अर्थ भी समत्व की साधना के अन्तर्गत लिया जाता है। 'सामायिक' शब्द आध्यात्मिक है तो समत्व योग दार्शनिक है। इन शब्दों का व्यावहारिक अर्थ भी यह ही है कि प्रत्येक क्षण-स्थिति में सम रहना, जो भी व्यक्ति स्वयं के जीवन में समता को आत्मसात् कर लेता है वह व्यक्ति सदैव सकारात्मकता के साथ जीता है, नकारात्मकता का उसके जीवन में कोई स्थान होता ही नहीं है।

कहते हैं कि जीवन में विपरीत परिस्थिति का आना जीवन का एक हिस्सा है, तो विपरीत परिस्थिति में भी अपनी मनःस्थिति को स्वस्थ, सन्तुलित और सम बनाए रखना जीवन की कला है। क्रिया-प्रतिक्रिया, स्थिति अथवा विपरीत परिस्थिति प्रत्येक क्षण बदलने वाली है, लेकिन जो समता और सहनशीलता के गुण की शक्ति होती है वह अमर होती है। हम दूसरों की मनःस्थिति अथवा दृष्टिकोण को नहीं बदल सकते, लेकिन स्वयं को, स्वयं की मनःस्थिति और दृष्टिकोण को बदल सकते हैं। हम अपने धैर्य, सम्यक् सोच, सम्यक् समझ से उन प्रत्येक विपरीत परिस्थितियों से पार पा सकते हैं, जो हमें नकारात्मकता की ओर धकेल कर जीवन को नरक बना सकती है।

इसलिये हमें जो यह अमूल्य मानव-जीवन मिला है, उसमें धैर्य, समता, सहनशीलता, करुणा इत्यादि गुणों को आत्मसात् कर हम सकारात्मकता के साथ जीवन को सुन्दर बना सकते हैं। जो हुआ वह अच्छा था, जो हो रहा है वह भी अच्छा हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा। इस प्रकार का चिन्तन करने से हम मजबूत

बनेंगे। जो भी घटना, परिस्थिति उत्पन्न होती है वह हमें कुछ सिखाने के लिए भी आती है, हमारा पहले से अधिक अच्छा करने हेतु आती है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति, स्थिति, घटना को धन्यवाद देते हुए सकारात्मकता के साथ स्वस्थ एवं आनन्दित रहना चाहिये। हमारी शान्ति स्वस्थता, सन्तुष्टि, प्रसन्नता का राज सकारात्मक सोच ही है। यह अन्तर्मन की सौम्यता को भी बनाए रखती है और हमेशा शुभ-परिणाम देने वाली ही होती है।

व्यक्ति के जीवन की सफलता, सार्थकता, समृद्धि, शान्ति की कुञ्जी सकारात्मक नज़रिया ही है।

जीवन को बदलने का भी यह ही गुरु मन्त्र है। अच्छा नज़रिया लेकर चलने वाले नैतिकता, ईमानदारी, प्रामाणिकता से अपना जीवन-यापन करते हैं, उनके अच्छे नज़रिये से घर-परिवार का वातावरण भी वैसा ही बनने लगता है। इसलिये हम हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छा नज़रिया, सम्यक् समझ, आत्मविश्वास से अपने जीवन को, सामने वाले के जीवन को, परिवार, समाज, राष्ट्र को बेहतर बना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

-एफ 30-बी, लाल बहादुर नगर (वेस्ट),
जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

(1) श्री रामेश्वर प्रसाद जैन

गतवर्ष सुरेखा बहिन ने मुझे जिनवाणी का एक अंक उपलब्ध कराया। मुझे यह पत्रिका इतनी अच्छी लगी कि मैं तभी से इसका नियमित पाठक बन गया। प्रत्येक अंक का मैं मनोयोगपूर्वक स्वाध्याय करता हूँ। जून 2022 के अंक में श्री धर्मचन्दजी जैन द्वारा लिखित 'सम्पूर्ण मनुष्य की विराधना' पढ़ा तो लगा कि जैनदर्शन अहिंसा में कितनी सूक्ष्मता तक गया है। आगमों के सन्दर्भ आदि देने के बाद भी जिनाज्ञा के विपरीत कुछ लेखन में आने की सम्भावना का मिच्छामि दुक्कडं लेना आपकी अतिशय विनम्रता तथा अनाग्रह वृत्ति का द्योतक है।

इस अंक में डॉ. एन. के. खींचा के लेख जल संरक्षण एवं पर्यावरण चेतना वर्तमान सन्दर्भ में बहुत मूल्यवान है। नई पीढ़ी को प्रासुक जल की महत्ता बताने वाला है। जिनवाणी का प्रत्येक अंक संग्रहणीय एवं मननीय है।

-आर.ई.एस. (सेवानिवृत्त) पूर्व अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, आदर्शनगर ए, सवाईमाधोपुर

(2) श्री अभय कुमार जैन

अप्रैल 2022 की जिनवाणी प्राप्त हुई। जिसमें

'चिन्ता और चिन्तन में बहुत फर्क है' प्रवचन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा चिन्ता और चिन्तन का विस्तृत विवेचन फरमाते हुए बहुत सुन्दर तरीके से अन्तर बताया गया है। वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्या है 'चिन्ता' उससे छुटकारा पाने में निश्चित ही यह औषधि का काम करेगा। चिन्ता कष्ट देती है और चिन्तन कष्ट मुक्ति, आज हम सबको कष्टों से ही तो मुक्ति चाहिए।

जिज्ञासा-समाधान (पृष्ठ 93) श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 'जय जिनेन्द्र' शब्द का अभिप्रायः महत्त्व तथा धार्मिक दृष्टि से जो विश्लेषण सहज सरल ढंग से किया वह बहुत ही अच्छा लगा। इस सम्बन्ध में मैं अनुरोध करना चाहूँगा कि ऐसी जिज्ञासाओं के समाधान का प्रकाशन हो तो बहुत से श्रावक-श्राविका और ज्ञानी जन लाभान्वित हो सकते हैं।

पीपाड़ धर्मनगरी में 23 मार्च, 2022 को दो महान् पुरुषों का जो आत्मीय मिलन हुआ तथा जो वार्तालाप के अंश पढ़ने को मिले, वे श्रद्धाभिभूत कर गये। धन्य है हम इन पुरुषों के अनुयायी हैं। इस प्रकार के प्रसङ्ग के साक्षी उपस्थित लोगों की पुण्यवानी की तो क्या बात ही क्या है?

-तृप्ति, बन्दा रोड़, भवानी मण्डी (राजस्थान)

जीवन को श्रेष्ठ बनाने के चार उपाय

श्री मोहन कोठारी 'विनय'

मनुष्य की मनोवृत्ति ही उसकी महानता को निर्धारित करती है अर्थात् उसके मन के विचार, उसका दृष्टिकोण, उसकी सोच एवं उसके संस्कार ही उसके जीवन-स्तर का निर्धारण करते हैं। उसका वर्तमान और भविष्य, दोनों का निर्माण स्वयं उसके हाथ में ही होता है। जीवन को श्रेष्ठ बनाना व्यक्ति की सम्यक् सोच और उसके पुरुषार्थ पर निर्भर करता है। जीवन के प्रति व्यक्ति का जैसा नज़रिया होगा वैसे ही विचार होंगे, वैसी ही कार्यप्रणाली और नीतियाँ होंगी। यही स्थिति जीवन की दिशा तथा दशा का निर्धारण करती है। जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए अपनी सोच को सदैव सकारात्मक एवं उच्च स्तर की रखनी चाहिए। निर्मल तथा निष्पाप विचार समाज में, परिवार में उचित सम्मान प्रदान करते हैं। अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व के द्वारा अर्जित महानता जीवनकाल के बाद भी बनी रहती है।

हम परम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इतना ऊँचा जिनशासन मिला है। प्रबल पुण्यवानी के उदय से अच्छे संयोग मिले हैं। हमें अपने इस दुर्लभ जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए निम्नलिखित चार बातों पर ध्यान देना चाहिए—(1) झुकना, (2) रुकना, (3) सहना और (4) बढ़ना।

झुकना—झुकना विनय का प्रतीक है। झुकना अर्थात् नम्रता को धारण करने से जीवन श्रेष्ठ बनता है। बड़ों और गुणियों के आगे झुकने की प्रवृत्ति को अपनाएँ। नमस्कार सूत्र का पहला शब्द 'नमो' है अर्थात् नमन। जीवन में नम्रता और विनय होने से ही जिनशासन में प्रवेश किया जा सकता है।

विनयवान व्यक्ति सदैव सर्वत्र आदर पाता है। उसकी घर-परिवार में, संघ-समाज में सब जगह कद्र

होती है।

नमे सो आमा आमली, नमे सो दाड़म दाख।

एरण्ड बेचारा क्या नमे, जिसकी ओछी जात।।

उदाहरण—बाहुबली का। एक वर्ष तक बाहुबली ध्यान में खड़ रहे, केवलज्ञान नहीं हुआ। ब्राह्मी, सुन्दरी दोनों बहिर्न समझाने जाती हैं और अपने भाई से कहती हैं—“वीरा म्हारा गज थकी नीचे उतरो, गज चढ़ियाँ केवल नहीं होसी रे।” बाहुबली चिन्तन करते हैं.... कौन-सा हाथी... कैसा हाथी? चिन्तन मुखरित हुआ और बाहुबली को बहिर्नों की बात समझ में आई कि मैं मान रूपी हाथी पर सवार हूँ....। भावना शुद्ध हुई... अभिमान से दूर हुए और नम्रता को धारण कर लिया। केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

एक अन्य उदाहरण है—गौतम स्वामी भगवान के आगे उकड़ आसन से बैठते थे। यह लघुता का परिचायक है। झुकने की प्रवृत्ति ही जीवन को विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाती है। झुकने वाले का जीवन अहं की परिधि से दूर रहता है। इसीलिये सदैव उसके मन में शान्ति समाधि बनी रहती है।

रुकना—मन में जब कषायों की उत्पत्ति हो तो उस समय रुकना। विवेक को जागृत कर धैर्य से विचार करना, फिर अपनी बात बोलना। आवेश आने पर क्रोध रूपी गाड़ी के एक्सीलरेटर को नहीं दबाना वरन् वेग को कम करने के लिए धैर्य रूपी ब्रेक दबाना।

‘कौन कहता है हम में दम नहीं,

हम भी किसी से कम नहीं’

ऐसा अहंकार नहीं करना। जिनशासन में आए हो तो कषायों पर नियन्त्रण करना सीखो। क्रोध की स्थिति में कुछ भी बोलकर सम्बन्ध बिगाड़ने की बजाय क्रोध

को पीना सीखो। ऐसा करने से अनर्थ से बच जाओगे। महावीर का धर्म अपनाने वाला ही क्रोधावस्था में रुकने की कला जानता है और जो रुकना जानता है वही शान्ति को प्राप्त करता है। व्रत-नियम और त्याग को अपनाकर अपनी काषायिक वृत्तियों को उपशान्त किया जा सकता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में रुकें, मन को शान्त रखें। धैर्य रखें एवं अपने विवेक को जागृत रखें।

सहना—किसी की बात के शब्दों को मत पकड़ो, आशय को समझने का प्रयास करो। शब्दों को पकड़ने से संघर्ष बढ़ता है, आशय को समझने से समाधान मिलता है। अङ्गारे हाथ में लेने से हाथ जलता है, यदि हाथ में नहीं लेंगे तो हाथ नहीं जलेगा। कोई गाली भी देवे तो शान्त रहो। गाली देने वाला चुप हो जाएगा। सहनशीलता से विवाद की स्थितियाँ टल जाती हैं। अनर्थ होने से बच जाता है। सहनशीलता रखने से आत्मा निर्मल रहती है। कर्म बन्ध से भी बच जाते हैं। अपनी ऊर्जा का ह्रास नहीं होता।

परिवार को सुचारु रूप से चलाने के लिए सहनशील और क्षमाशील बनना जरूरी है। परिवार में, समाज में विपरीत प्रसङ्ग आने पर समभाव में रहना सीखें। मन के विपरीत किसी के द्वारा कुछ कहे जाने पर KBN (कोई बात नहीं) की अचूक औषधि का उपयोग करें और चिन्तन करें कि मेरा उपादान कमजोर है, सामने वाले का कोई दोष नहीं है। ऐसा सोचने से मन व्यग्र होने की बजाय शान्त रहेगा।

दृष्टान्त—जेठानी, देवरानी का। सासू छोटी बहू को ज्यादा चाहती है, ज्यादा प्रेम देती है। बड़ी बहू के साथ रुखा व्यवहार करती है। बड़ी बहू धार्मिक विचारों वाली थी। अशुभ कर्मों का उदय मानकर सब सहन करती। माँ अपने बेटों के साथ भी भेदभाव करती है। छोटे बेटे को और छोटी बहू को ज्यादा चाहती है। छोटी बहू धनाढ्य परिवार से आई है, इसलिए सासू उसकी हर बात का कहना मानती है। गलती होने पर भी उसे कुछ नहीं बोलती है। बड़ी बहू चूँकि साधारण परिवार से आई

है, इसलिये सासूजी हर बात में उपेक्षा करती है, उसे ताना मारती रहती है। माँ का ऐसा व्यवहार देखकर बड़े बेटे को बहुत दुःख होता है। बड़ा लड़का अपनी धर्मपत्नी से बोलता है—“चलो हमें अब अलग हो जाना चाहिए।” लेकिन धर्मपत्नी कहती है—“माँ-बाप तो उपकारी होते हैं। उनका बुरा नहीं मानना चाहिए।”

बड़ी बहू समझदार थी, वह अपने पति को बहुत समझाती है, लेकिन पति ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि अलग ही होना है। रोज-रोज का क्लेश अच्छा नहीं होता। बड़ा बेटा परिवार वालों से अलग होने की बात करता है। कुछ ही दिनों में मकान के बीच में दीवार खिंच जाती है।

सासू को अपनी छोटी बहू पर बड़ा गर्व था कि मेरी छोटी बहू मेरा हर कहना मानती है। जेठ-जेठानी के अलग होने के कुछ दिनों बाद छोटी बहू के व्यवहार में फर्क आना चालू हो गया। सासू काम के लिए बोलती है तो मना कर देती है। बातचीत करने का ढंग भी बदल गया था। यह परिवर्तन देखकर सासू बड़ी दुःखी हो जाती है। चिन्ता-चिन्ता में स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, बीमार पड़ जाती है। सासू छोटी बहू को दवाई लाने को कहती है तो छोटी बहू दवाई लाने से मना कर देती है। पड़ोसी दवाई लाकर देता है। इस तरह छोटी बहू द्वारा सासू का तिरस्कार होने लगता है। सासू बड़ी दुःखी हो जाती है।

बड़ी बहू को मालूम पड़ता है कि सासूजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, तबीयत ज्यादा खराब है। अपने हाथ का काम छोड़कर सासूजी को देखने पहुँच जाती है। लगातार कई दिनों तक सासूजी के पास रहकर उनकी सेवा करती है। स्वास्थ्य में सुधार होने लगता है और वह धीरे-धीरे एकदम स्वस्थ हो जाती है।

सासूजी मन ही मन बहुत पछतावा करती है और अपनी बड़ी बहू से बोलती है—“बहू मैंने तेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया है, मैंने तुम्हारा दिल दुःखाया है।” बड़ी बहू बोलती है—“माताजी! आपने मेरे साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं किया है। वह तो मेरा उपादान

कमजोर होने से मैं आपसे ज्यादा प्यार नहीं पा सकी।”

सासूजी बड़ी बहू की बात सुनकर बहुत प्रभावित हो जाती है। उसकी सहनशीलता और धैर्य के लिए धन्यवाद देती है और अपने गलत व्यवहार के लिए क्षमा माँगती है।

छोटी बहू अपनी जेठानी की सूझबूझ और समझदारी देखकर आत्मग्लानि से भर जाती है और अपने किये हुए व्यवहार के लिए जेठानी और सासूजी से क्षमा माँगती है।

घर में खुशी का वातावरण बन जाता है। बीच की दीवार हटा दी जाती है। सहनशीलता के कारण परस्पर सम्बन्धों में मधुरता आ जाती है। हम ऐसे आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर सहनशीलता की प्रवृत्ति का अनुसरण करें।

बढ़ना—हम आगम और अनगार का सहारा लेकर धर्म के पथ पर आगे बढ़ना सीखें। हमारे आगम ज्ञान के रत्नाकर हैं, इनमें अवगाहन कर ज्ञान के हीरे-मोती पाए जा सकते हैं। साधना के मार्ग पर आगे बढ़ा जा सकता है। गुरु भगवन्तों के सान्निध्य में रहकर सच्चा

ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। गुरु भगवन्तों की हितकारी शिक्षाएँ ग्रहण कर हम अपने जीवन को विकास के मार्ग पर आगे बढ़ा सकते हैं। हमारा लक्ष्य मुक्ति मार्ग पर आगे बढ़ने का होना चाहिए। साधना में आगे बढ़ेंगे तो मोक्ष मञ्जिल के नज़दीक पहुँचने में देर नहीं लगेगी। धर्म के कार्यों में सदैव अग्रणी रहना है। प्रमाद को तजकर आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना है। नर से नारायण, आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने के लिए सच्चे धर्म की राह पर आगे बढ़ने का पुरुषार्थ करना है।

आज आर्थिक विकास की दौड़ में आगे बढ़ने की जो होड़ लगी हुई है उससे जीवन में सच्ची शान्ति मिलने वाली नहीं है। इससे तो आत्मा का अहित ही होने वाला है। हमें आत्मलक्ष्यी बनकर अपने सम्यक्त्व को दृढ़ बनाने की दिशा में प्रयत्नशील रहना है।

झुकना, रुकना, सहना और बढ़ना आदि दिव्य गुणों को आत्मसात् कर जीवन को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है और चिरशान्ति को प्राप्त किया जा सकता है।

—*जन्ता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स
स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)*

किसी जीव को न सताओ

श्रीमती सुलखा मुथा (टीनर)

किसी जीव को न सताओ,
इन सबका है हम पर उपकार।
जियो और जीने दो,
सब जीवों से कर लो प्यार॥1॥
साता दोगे साता मिलेगी, जो बीज वही फल।
दुःखियों की करुण पुकार सुन लो,
यही सुख देंगे कल॥2॥
भगवान महावीर का सीधा सरल उपदेश,
कर लो हिंसा का त्याग।
क्षमा सरलता अपना लो,
छोड़ो सब मन के द्वेष और राग॥3॥

वचन से निकले मीठी वाणी, मन से निकले शुभ भावना।
काया से वन्दन कीर्तन,
पूजन की हो हर क्षण चाहना॥4॥
प्रभु का कल्याणक,
सिद्धान्तों को अपनाकर मनाएँ।
क्षमा के सागर, ज्ञान हर पल उजागर,
गुणगान प्रभु का गाएँ॥5॥
चण्डकौशिक, संगम देव,
अर्जुन माली, उपकार किया चन्दना।
भवसागर से हमें भी तारो,
हम करते झुक-झुक वन्दना॥6॥

—*धर्मपत्नी श्री गौतमजी मुथा (सी.ए.), 8वीं
श्यामवाड़ी, जोधपुर-342003 (राजस्थान)*

अनमोल मोती (4)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

51. लौकिक कार्यों की सिद्धि मायाचार से नहीं पूर्व पुण्य से होती है और पारलौकिक कार्यों की सिद्धि में पाँचों समवाय के साथ पुरुषार्थ प्रधान है।
52. अग्नि और आत्मा के तीन-तीन गुण हैं-पाचक, प्रकाशक और दाहक। अग्नि अनाज को पकाकर पाचक बनती है, स्व पर को प्रकाशित करती है, ईन्धन को जलाती है। आत्मा आत्मगुणों को परिपक्व करती है, ज्ञान से स्व-पर को प्रकाशित करती है और राग-द्वेष आदि दोषों को जलाती है।
53. पुण्य के उदय में देवों ने जिस स्वर्णनगरी द्वारिका की रचना की, पाप के उदय में उस छह महीने जलती द्वारिका को बुझाने एक भी देव नहीं आया।
54. अग्नि पर जलते पानी को ठण्डा करने के लिए बर्फ डालने से ज्यादा उचित उसे पहले अग्नि से अलग करना है। आस्रव/पाप की अग्नि से आत्मा को अलग कर लिया तो आत्मा जल के समान स्वभावतः शीतल होगी ही।
55. समुद्र का पानी छोटे से पत्थर से भी तरंगित हो जाता है, लेकिन बर्फ रूप में जमा हुआ समुद्र का पानी पत्थर या किसी अन्य वस्तु से भी तरंगित नहीं होता। जीव साधारण से निमित्त से भी उसे उद्वेलित हो जाता है, जिनवाणी से उसे ठोस बना लिया जाए तो बड़े निमित्तों से भी उसे उद्वेलित नहीं किया जा सकता है। सच्ची शान्ति तो स्थिरता में है।
56. कर्म दिखते नहीं, निमित्त से कर्म उदय में आता है, जीव उसमें राग-द्वेष करके जीव फिर नए कर्मों का बन्ध करके संसार बढ़ा लेता है।
57. अनन्त ज्ञानियों ने प्रवृत्ति को कभी नहीं छुड़ाया बल्कि मान्यता को सम्यक् रूप में बदलने का संकेत दिया है।
58. कर्म बड़े नाक वाले हैं, बिना बुलाये आते नहीं। बुलाने पर बड़े सजधज कर आते हैं और अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। जिस आदर से बुलाते हैं उसी अनुपात में फल देकर चले जाते हैं।
59. निमित्त उपादान की निजी शक्ति के विकास में सहयोगी बनकर उसे कार्य में परिणत होने का सहयोग देता है। जैसे बीज (वृक्ष रूप) है तथा हवा, पानी, रोशनी, खाद आदि निमित्त कारण है।
60. दुनिया के बाजार में आया एक, मिले अनेक, अन्त एक का एक।
61. जो आत्मशक्ति एक योगी में होती है, वह लाखों भोगियों में मिलकर भी नहीं हो सकती।
62. राशि एक होने से क्या होता है? कोयल-कौआ, राम-रावण, कृष्ण-कंस, गाँधी-गोडसे, कोयला-कोहिनूर इत्यादि एक राशि के होने पर भी स्वभाव में बहुत फर्क है।
63. मोची के थैले में से दुर्गन्धयुक्त चमड़े के टुकड़े निकलते हैं, किन्तु जौहरी के थैले में से हीरे इत्यादि रत्न निकलते हैं। शरीर दुर्गन्धमय चमड़े के थैले जैसा है, इसकी क्रिया में कहीं सम्यग्दर्शन आदि रत्न नहीं निकलते। शरीर के लक्ष्य से राग-द्वेष के मलिन भाव होते हैं तथा चैतन्य रूप जौहरी यानी आत्मा के थैले से रत्नत्रय, केवलज्ञान, सिद्धगति जैसे अमूल्य रत्न निकलते हैं।
64. संसारी पदार्थों में कहीं सुख नहीं, फिर भी यह जीव उनसे सुख की अपेक्षा रखता है जो सिर्फ उसकी सुख की कल्पना अथवा कल्पना के सुख के अलावा कुछ भी नहीं।



चण्डकौशिक के जीवन से लें शिक्षाएँ

डॉ. जवाहरलाल नाहटा

जैन ग्रन्थों में महावीर के जीवन से सम्बन्धित अनेक कथाएँ हैं। उनमें एक महत्त्वपूर्ण एक कथा है जिसमें भगवान महावीर चण्डकौशिक नामक अति घातक सर्प को उपदेश देकर सर्प योनि से मुक्ति दिलाते हैं। कथा में चण्डकौशिक हिंसा और महावीर अहिंसा के प्रतीक स्वरूप हैं। चण्डकौशिक एक भयंकर दृष्टि विष सर्प था जिसका सम्पूर्ण कनखल (हरिद्वार के पास एक प्राचीन नगर) के वनक्षेत्र में प्रकोप था। उसका विष इतना घातक था कि वह उड़ते हुए पक्षियों को भी अपनी विष दृष्टि से मारकर गिरा देता था। उसकी प्रचण्ड विषाग्नि से सारा वन क्षेत्र प्राणिविहीन हो गया।

भगवान महावीर अपनी तपस्या के दूसरे वर्ष मोराक सन्निवेश से उत्तर विशाला की ओर विहार कर रहे थे। रास्ते में इसी चण्डकौशिक के प्रकोप वाला वनक्षेत्र पड़ता था। कुछ ग्वालों ने भगवान से निवेदन किया कि वे इस रास्ते से न जायें, क्योंकि चण्डकौशिक नामक महासर्प के प्रकोप से कोई जीवित नहीं निकल सकता। भगवान निर्भय होकर आगे बढ़ते रहे, क्योंकि वे अपने अन्तर्ज्ञान से चण्डकौशिक के पूर्व और भविष्य के भवों को जानते थे।

चण्डकौशिक अपने पूर्व भव में एक तपस्वी साधु था। एक दिन अपने शिष्य के साथ भिक्षा के लिए जा रहा था। अज्ञानवश उसके पैर से दबकर एक मेंढकी मर गई। शिष्य ने निवेदन किया—“गुरुदेव! एक मेंढकी आपके पैर के नीचे आकर मर गई है। आप प्रायश्चित्त कर लीजिये।” तपस्वी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। शिष्य ने सोचा कि गुरुदेव रात्रि में सोते समय इसका प्रायश्चित्त कर लेंगे। किन्तु रात्रि में भी तपस्वी ने प्रायश्चित्त नहीं किया। शिष्य ने फिर स्मरण दिलाया, दूसरी बार कहा, तीसरी बार कहा। इससे तपस्वी क्रोधित

हो गये और शिष्य को मारने दौड़े। क्रोध में अन्धे तपस्वी सामने के खम्भे को देख नहीं पाये, उससे टकराये और सिर में चोट खाकर तत्क्षण दिवंगत हो गए। तपस्वी के जीव ने कनखल के एक आश्रम के कुलपति के यहाँ जन्म लिया। इसका जन्म नाम कौशिक रखा गया। पूर्व जन्म के कर्मों और क्रोध की अवस्था में मरने के कारण इसे चण्ड प्रकृति मिली। अति उग्र स्वभाव के कारण इसका नाम चण्डकौशिक हो गया। पिता की मृत्यु के बाद वह उस आश्रम का अधिपति बन गया। एक बार पास की नगरी के राजकुमारों ने आश्रम के सारे फल-फूल तोड़ लिए और आश्रम के उद्यान को उजाड़ दिया। चण्डकौशिक को जब मालूम हुआ तो उसके सिर पर खून सवार हो गया और हाथ में परशु लेकर उन राजकुमारों को मारने दौड़ा। किन्तु अति आवेश की स्थिति में एक गड्ढे में गिर पड़ा और अपने ही परशु से उसका सिर कट गया। उस आश्रम में चण्डकौशिक की बहुत आसक्ति थी। अतः क्रोध और मोह की भाव दशा में मरने के कारण उसके जीव को वहीं पर सर्प योनि मिली। लोक विश्वास है कि धन सम्पत्ति के मोह में जो प्राण त्यागता है वह सर्प बनकर उस सम्पत्ति की रक्षा में पड़ा रहता है और किसी को पास नहीं फटकने देता। यदि कोई भूल से भी उसकी सीमा में आ जाये तो उसे डस कर मार डालता है। चण्डकौशिक की भी यही दशा हुई।

भगवान महावीर यह सब जानते हुए भी उस वन क्षेत्र में पहुँचे और समीप के यक्ष गृह में निर्भय होकर शान्त मन से खड़े होकर ध्यान मग्न हो गये। अपने क्षेत्र का अतिक्रमण देखकर चण्डकौशिक सर्प बहुत क्रोधित हुआ और ध्यान में लीन प्रभु महावीर पर सम्पूर्ण रोषाग्नि से दृष्टि विष का प्रहार किया। किन्तु भगवान पर उसका कोई असर नहीं हुआ। वे अविचल भाव से ध्यान मग्न

रहे। चण्डकौशिक के अहंकार को चोट पहुँची। उसने और अधिक भयंकर रौद्र रूप धारण कर लिया और भगवान के पैरों में लिपट कर बार-बार दंश देता रहा। किन्तु भगवान के शरीर से लाल रक्त की जगह स्नेह और करुणा की दुग्धधारा स्रवित होती रही। ध्यान से विरत होकर भगवान ने चण्डकौशिक को अपनी करुण वाणी से सम्बोधित करते हुए कहा-“उवसम भो चंडकोसिया” हे चण्डकौशिक! शान्त रहो। उठो, जागो। कब तक क्रोध की अग्नि में जलते रहोगे और दूसरों को जलाते रहोगे? इसी क्रोध ने तुम्हारी गति बिगाड़ी है। अब तो हिंसा का रास्ता छोड़ो, क्षमा भाव से प्रायश्चित्त ग्रहण कर लो। तुम्हारे पूर्व के सुकर्मों का उदय होगा और तुम्हारे भविष्य की गति सुधर जायेगी। भगवान के पवित्र उद्बोधन से चण्डकौशिक की पूर्व स्मृति जागृत हुई और उसकी क्रोधाग्नि शान्त हुई। उसने हिंसा और प्रतिशोध का रास्ता छोड़कर प्रायश्चित्त एवं अहिंसा का मार्ग स्वीकार किया। अपना मुँह बिल में डालकर शान्त मन हो गया। उसने शुभ भावों में अपनी आयु पूर्ण करते हुए अष्टम स्वर्ग की प्राप्ति की।

इस कथा का वास्तविक मर्म इसकी प्रतीकात्मकता में छिपा हुआ है। इस कथा में भगवान महावीर के बहुत से उपदेशों और सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम—हमारे कर्मों की सत्ता है और इनके शुभ-अशुभ परिणामों के अनुसार जीव अपनी योनि का निर्धारण करता है। यह सिद्धान्त केवल जैनदर्शन ही नहीं, भारत के सभी आस्तिक दर्शन स्वीकार करते हैं।

द्वितीय—मृत्यु के समय जीव की अन्तिम भाव दशा बहुत महत्वपूर्ण होती है। जिस भाव स्थिति में जीव प्राणों का त्याग करता है उसी के अनुसार जीव को आगामी नया जीवन मिलता है। जैनदर्शन सहित सभी आस्तिक दर्शन पुनर्जन्म को स्वीकार करते हैं। अतः परिजन, मरणासन प्राणी को राग-द्वेष से मुक्त होकर शान्त भाव से मृत्यु का वरण करने के लिए प्रेरित करें ताकि जीव को सद्गति मिले।

तृतीय—सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रायश्चित्त, क्षमा और अहिंसा के जीवन मूल्य का सन्देश प्राप्त होता है। क्रोध और हिंसा मनुष्य की आदिम वृत्ति है। जीने के लिए, जीवन की सुरक्षा के लिए और प्रभुत्व पाने के लिए अहंकार, क्रोध, प्रतिशोध, घात-प्रतिघात तथा बड़े-बड़े युद्धों से मानव का रक्तरञ्जित इतिहास भरा पड़ा है। खूनी संघर्षों के भीषण परिणाम जब सामने आते हैं तब हमारी आत्मा विचलित होती है और विवेक जाग्रत होता है। हमें महसूस होता है कि युद्ध और हिंसा में कोई विजयी नहीं होता, भीषण विनाश में केवल मानवता पराजित होती है। उस समय शान्ति और अहिंसा के मूल्य समझ में आते हैं और महावीर याद आते हैं।

‘आचाराङ्गसूत्र’ में प्रभु महावीर कहते हैं-“सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय हैं, वे जीना चाहते हैं, वे सुख चाहते हैं, दुःख नहीं।” प्रभु महावीर की इस अहिंसक विचारधारा का समावेश करते हुए आचार्य उमास्वाति ने एक सूत्र दिया-‘परस्परपग्रहो जीवानाम्’ सभी जीव परस्पर उपकार करते हुए जीयें। हम भी जीयें और दूसरे प्राणियों को भी जीने दें। प्रेम, शान्ति और अहिंसा के बिना यह काम नहीं हो सकता। अनेक बार क्रोध, लोभ, हिंसा के वातावरण में हमारे अन्दर का चण्डकौशिक जाग्रत होता रहता है और प्रभु महावीर की शीतल अहिंसामयी वाणी उसको शान्त करती रहती है।

यहाँ विवेचनीय प्रश्न यह है कि मनुष्य जो एक बुद्धिमान, विवेकशील प्राणी है, क्रोध और हिंसा का रास्ता हमेशा के लिए क्यों नहीं छोड़ देता? जबकि मनुष्य अच्छी तरह से जानता है कि हिंसा और अशान्ति के वातावरण में न तो हम जी सकते हैं और न प्रतिपक्ष। अतः हमारे अन्दर के चण्डकौशिक को उद्बोधन देने के लिए प्रभु महावीर की वाणी का हमारे बीच रहना जरूरी है।

-सेवानिवृत्त, एसोसियेट प्रोफेसर, बरपेटा रोड़
(अस्सम)



आओ मिलकर कर्मों को समझें (21)

(असाता-वेदनीय कर्म)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा— असाता वेदनीय कर्म बन्ध के कौन-कौनसे कारण बतलाये गये हैं?

समाधान— भगवतीसूत्र शतक 7 उद्देशक 6 में असातावेदनीय कर्म बन्ध के निम्नांकित कारण बतलाये हैं—

1. प्राण, भूत, जीव और सत्त्व को दुःख देने से।
2. बहुत जीवों को दुःख देने से।
3. शोक कराने से।
4. बहुत जीवों को शोक कराने से।
5. रुलाने से।
6. बहुत जीवों को रुलाने से।
7. झुराने से।
8. बहुत जीवों को झुराने से।
9. मार-पीट करने से।
10. बहुत जीवों से मार-पीट करने से।
11. परिताप उपजाने से।
12. बहुत जीवों को परिताप उपजाने से।

कर्म साहित्य में असाता वेदनीय कर्म के निम्नलिखित कारण बतलाये गये हैं—

1. गुरु का अविनय, अपमान, तिरस्कार करने से।
2. किसी के प्रति वैर की गाँठ बाँध लेने से हैं।
3. क्रूरता का व्यवहार करने से।
4. अब्रत का जीवन जीने से अथवा स्वीकृत व्रत-महाव्रतों को भङ्ग करने से।
5. मन-वचन-काया रूप तीनों योगों को हिंसा, कषाय, अधर्म में प्रवृत्त करने से।
6. क्रोध, अभिमान, कपट, लालच से।
7. सम्पत्ति आदि के प्रति अत्यधिक आसक्ति रखने से।

8. धर्म मार्ग से विचलित होने से।

9. दूसरों को शोक-सन्ताप उपजाने से, दुःखी करने से।

10. आर्त्तध्यान अथवा रौद्र ध्यान करने से।

जिज्ञासा— असाता वेदनीय कर्म का बन्ध कौन से गुणस्थान तक होता है?

समाधान— जब तक प्रमाद अवस्था रहती है, तब तक असाता वेदनीय कर्म का बन्ध हो सकता है। प्रमाद अवस्था में भी जब प्राणातिपात आदि पापों का सेवन होता है, तब असाता वेदनीय कर्म अधिक बँधता है। दूसरे शब्दों में पहले गुणस्थान से लेकर छठे गुणस्थान तक असाता वेदनीय कर्म का बन्ध होता है। अप्रमत्त दशा में असातावेदनीय कर्म का बन्ध नहीं होता है।

पहले से छठे गुणस्थान में साता तथा असाता दोनों में से कोई एक कर्म-प्रकृति का बन्ध होता है। यह नियम है कि एक अन्तर्मुहूर्त्त तक असाता बँधती है तथा अगले अन्तर्मुहूर्त्त में साता बँधती है। इस प्रकार असाता-साता अन्तर्मुहूर्त्त-अन्तर्मुहूर्त्त में बदल-बदल कर जीवों के बँधती रहती है। इसका कारण यह है कि जीव के परिणामों में संक्लेश, विशुद्धि, उतार-चढ़ाव चलता रहता है। अन्तर्मुहूर्त्त में जीवों के परिणाम बदल ही जाते हैं, अतः असाता-साता वेदनीय का बन्ध बदल-बदल कर होता रहता है।

जिज्ञासा— असाता वेदनीय कर्म का बन्ध किन-किन जीवों के कितनी-कितनी स्थिति का होता है?

समाधान— असाता वेदनीय का समुच्चय रूप में कहें तो जघन्य स्थिति बन्ध एक सागरोपम का 3/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम का होता है, जबकि उत्कृष्ट स्थिति बन्ध 30 कोटाकोटि सागरोपम

का होता है। इसमें भी अलग-अलग जीवों की अपेक्षा विचार करें तो ज्ञात होता है कि एकेन्द्रिय जीवों में असाता वेदनीय का जघन्य स्थिति बन्ध एक सागरोपम के सात भागों में से तीन भाग के बराबर अर्थात् एक सागरोपम का 3/7 भाग में पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम का होता है तथा उत्कृष्ट स्थिति बन्ध एक सागरोपम का 3/7 भाग के बराबर होता है।

द्वीन्द्रिय जीवों में उत्कृष्ट स्थिति बन्ध 25 सागरोपम का 3/7 भाग अर्थात् 75/7 सागरोपम का, त्रीन्द्रिय जीवों में 50 सागरोपम का 3/7 भाग अर्थात् 150/7 सागरोपम का, चतुरिन्द्रिय जीवों में 100 सागरोपम का 3/7 भाग अर्थात् 300/7 सागरोपम का, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों में 1000 सागरोपम का 3/7 भाग अर्थात् 3000/7 सागरोपम का होता है। द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों का असाता वेदनीय का जघन्य स्थिति बन्ध अपने-अपने उत्कृष्ट स्थिति बन्ध में से पत्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम समझना चाहिए।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों में जघन्य स्थिति बन्ध अन्तः कोटाकोटि सागरोपम का तथा उत्कृष्ट 30 कोटाकोटि सागरोपम का होता है। उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीवों में मिथ्यात्व गुणस्थान में उत्कृष्ट संक्लेश के परिणामों में ही होता है।

जिज्ञासा— व्यावहारिक उदाहरणों से असाता वेदनीय कर्म के बन्ध को कैसे समझ सकते हैं ?

समाधान— 1. कोई अपने माता, पिता, परिजन आदि को तीखे, कटु एवं आघात पहुँचाने वाले वचन बोलता है, मारपीट आदि करता है तो उसके असाता वेदनीय कर्म बाँधता है।

2. यदि कोई धर्म गुरु, पूज्य पुरुष अथवा बड़ों की अवज्ञा करता है, तिरस्कार करता है तो वह असाता वेदनीय कर्म बाँधता है।

3. घरों में खटमल, मच्छर, चींटी आदि छोटे-छोटे जीवों को जो मारता है, दुःखी करता है, वह भी असाता वेदनीय कर्म बाँधता है।

4. जो क्षमा, नम्रता, निर्लोभता आदि सदुणों का पालन नहीं करता, अपनी समाचारी का सही ढंग से पालन नहीं करता है तो वह भी असाता वेदनीय कर्म बाँधता है।

5. जो देव-गुरु-धर्म की भक्ति में, वन्दना में, सत्कार-सम्मान में लापरवाही करता है, आलसी बना रहता है वह भी असाता वेदनीय कर्म का बन्ध करता है।

6. जो व्रत नहीं लेते हैं, नियम ग्रहण नहीं करते हैं, व्रत-नियमों की बात पर हँसते हैं, मजाक उड़ाते हैं, वे भी असाता वेदनीय कर्म का बन्ध करते हैं।

7. जो दूसरों को, क्षमायाचना करने वालों को क्षमा नहीं करते हैं, वैर भावना बनाये रखते हैं, वे भी असाता वेदनीय कर्म बाँधते हैं।

जिज्ञासा— असातावेदनीय कर्म का उदय कितने प्रकार से होता है ?

समाधान— असाता वेदनीय कर्म के उदय को मुख्य रूप से आठ प्रकार से बतलाया है—

1. **अमनोज्ञ शब्द**—मन को अच्छे नहीं लगने वाले अप्रिय, कटु एवं तीखे शब्दों को सुनने का अनुभव।
2. **अमनोज्ञ रूप**—शरीर के अङ्ग-उपाङ्ग, चेहरे आदि का रूप-रंग-आकार मनोनुकूल प्राप्त नहीं होने का अनुभव।
3. **अमनोज्ञ गन्ध**—खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने आदि में दुर्गन्ध का अनुभव।
4. **अमनोज्ञ रस**—मनोनुकूल स्वाद, रस वाले पदार्थों का अनुभव।
5. **अमनोज्ञ स्पर्श**—तीखे, नुकीले, कठोर एवं अशुभ स्पर्श वाली सामग्री का अनुभव।
6. **मन का दुःख**—मन के प्रतिकूल व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति आदि से दुःख की स्थिति का अनुभव।
7. **वचन का दुःख**—कर्कश, कठोर, अहितकर वाणी से दुःख न अनुभव।
8. **काया का दुःख**—अस्वस्थ, कमजोर एवं हीन संहनन वाले शरीर से दुःख का अनुभव।

जिज्ञासा— देव गति और मनुष्य गति में असाता का

उदय किस प्रकार होता है ?

समाधान- देवियों, रत्नों आदि के अपहरण, देवियों का वियोग, पद-प्रतिष्ठा में कमी, अपमान जनक स्थितियाँ, आपस में ईर्ष्या, द्वेष, घृणादि भावनाएँ उत्पन्न होना आदि के कारण देवगति में असाता का उदय हो जाता है।

मनुष्य गति में बन्धन, वध, विपन्नता, अपयश, शारीरिक पीड़ा, प्रतिकूल परिस्थितियाँ, बीमारियाँ, महामारियाँ, दुष्काल, बाढ़, ईति-भीति आदि के कारण असाता का उदय होता है।

जिज्ञासा- नरक गति में साता का उदय कब होता है ?

समाधान- नरक गति में जीवों को प्रायः असाता का उदय अधिक रहता है, फिर भी निम्नांकित अवसरों पर अति-अल्प समय के लिए साता का अनुभव उन जीवों को होता है-

1. तीर्थंकर भगवन्तों के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान और निर्वाण कल्याणकों के अवसर पर।
2. किसी मित्र देव की सहायता प्राप्त होने पर।
3. सम्यक्त्व की प्राप्ति होने पर।
4. जब तक परमाधार्मिक देवकृत वेदना प्राप्त नहीं हो तब तक।
5. अल्पकालीन साता वेदनीय कर्म का उदय होने पर।

जिज्ञासा- क्या असाता वेदनीय कर्म के उदय में दुःखी होना आवश्यक है ?

समाधान- यद्यपि असातावेदनीय के उदय से दुःख जन्य परिस्थितियाँ, प्रतिकूलताएँ प्राप्त होती हैं, किन्तु उनमें दुःखी होना अनिवार्य नहीं है। सामान्यतः रूप से देखें तो असाता में दुःख का तथा साता में जीव सुख का अनुभव करने लगता है। किन्तु जो समझदार, विवेकी, ज्ञानी साधक सजग होते हैं वे असाता को, प्राप्त दुःखों को स्वकृत कर्मों का परिणाम मानते हैं, किसी पर भी दोषारोपण नहीं करते हैं, वरन् स्वयं की पूर्वकृत भूलों का परिणाम समझकर समत्व भाव रखते हैं। यहाँ तक कि असाता को कर्म निर्जरा का अपूर्व अवसर मानकर प्रसन्नतापूर्वक, शान्तिपूर्वक, आनन्द पूर्वक सहन करते हैं।

वैसे भी देखा जाये तो सुख-दुःख मिलना वेदनीय कर्म के उदय का परिणाम है जबकि सुखी-दुःखी होना मोहनीय कर्म के उदय का परिणाम है। अतः मोह को कम करने से, आसक्ति को घटा देने से, राग-द्वेष का त्याग कर देने से दुःखद परिस्थिति में भी समता में रहा जा सकता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

चिन्ता की बात

श्री अशोक जैन श्रीश्रीमाल

विवाह समारोह, वैवाहिक वर्षगाँठ, जन्मदिवस या अन्य समारोहों पर आयोजित सहभोज में पाश्चात्य सभ्यता को दिखाने हेतु आजकल कुछ ऐसे नामों का उपयोग खाने की स्टालों में करते हैं जो बोलने में मांसाहारी होते हैं। हॉट डॉग, हराभरा कबाब, पनीर टिक्का कबाब, बिरयानी/ हैदराबादी बिरयानी, फिंगर चिप्स, कोफ्ता मुगलई, कोफ्ता अकबरी, काठी कबाब, छैना मुर्गी, हरियाली कबाब, कस्तूरी कबाब, हनी चिल्ली पोटेटो इत्यादि जैसे नामों का प्रयोग किया जाने लगा है, जो बच्चों की जुबान

पर भी चढ़ गए हैं। इन नामों पर रोक लगाना अति आवश्यक है। ऐसे खाद्य पदार्थों की स्टालों के नामों को तुरन्त प्रभाव से प्रतिबन्धित किया जाना चाहिए, जिससे हमारे समाज के बच्चे इन मांसाहारी नामों का एवं शाकाहारी नामों का अन्तर समझ सकें।

कल्पना करें जब आप बाजार में बच्चों के साथ जाएं और किसी मांसाहारी दुकान पर बोर्ड पर यह नाम लिखा हुआ मिलेगा और बच्चे ने अनजाने में इसे खाने की माँग कर ली तो आप पर क्या बीतेगी ? अभी भी समय है सम्भल जाइए समाज में बढ़ती इस कुप्रथा को तुरन्त रोकिए।

-एडवोकेट, जयपुर (राजस्थान)

जैन भोजन-पद्धति और उसकी महत्ता

डॉ. अनिल कुमार जैन

खाद्य/अखाद्य, भक्ष्य/अभक्ष्य सम्बन्धी जितना विवेचन जैन ग्रन्थों में मिलता है, सम्भवतः उतना अन्य धर्म-ग्रन्थों में नहीं मिलता। क्या खाना चाहिये, क्या नहीं खाना चाहिये, कब खाना चाहिये, कब नहीं खाना चाहिये, कितना खाना चाहिये, भोजन कब और कैसे बनाना चाहिये आदि विषयों को जैनाचार से सम्बन्धित ग्रन्थों में संगृहीत किया गया है। जैनाचार-सम्बन्धी नियम ऊपर-ऊपर से तो कठिन प्रतीत होते हैं, कुछ लोगों का मत यह भी है कि इन कठिन नियमों के कारण ही जैन समाज प्रायः अल्पसंख्यक रहा है। लेकिन यदि हम इन सब नियमों पर सूक्ष्म दृष्टि डालें तो पाते हैं कि ये सारे नियम अहिंसा, करुणा और जीव-दया से प्रेरित तो हैं ही, साथ ही स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम आगे इनकी चर्चा करेंगे।

जैन शास्त्रों में वर्णित अभक्ष्य पदार्थ

जैन शास्त्रों में अभक्ष्य पदार्थों को मुख्यतः पाँच भागों में विभक्त किया गया है। जिन पदार्थों में निम्न पाँच में से कोई एक बात आती हो वे अभक्ष्य हैं—(1) त्रसजीव घात-ऐसे पदार्थ जिनमें द्वीन्द्रिय या उससे अधिक इन्द्रिय वाले जीवों का घात होता हो, (2) अनन्तकायिक स्थावर जीवघात-ऐसे पदार्थ जिनमें अनन्त स्थावर जीवों का घात होता हो, (3) जो प्रमाद बढ़ाने वाले हों, (4) जो अनिष्टकारक या रोग बढ़ाने वाले हों तथा (5) वे पदार्थ जिनके सेवन से अपने देश, समाज और धर्म वाले लोग बुरा मानें। यहाँ यह स्पष्ट है कि जैनधर्म में उन पदार्थों के सेवन का निषेध है जिनमें त्रस जीवों का घात होता हो, स्थूल हिंसा होती हो तथा जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हों। इनसे रहित पदार्थों का ही सेवन करना चाहिये।

तामसिक, राजसिक और सात्त्विक भोजन

भोजन का विचारों एवं जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसी आधार पर प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में भोजन को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है—तामसिक, राजसिक और सात्त्विक। ऊपर जिन अभक्ष्य पदार्थों का जिक्र किया है, वे प्रायः तामसिक और राजसिक भोजन में आ जाते हैं।

जिस भोजन को करने से हिंसक भाव पैदा हों, जीवन में दया का अभाव अनुभव हो और क्रूरता बढ़े वह तामसिक भोजन है। अण्डा, मांस, मदिरा आदि पदार्थ इस श्रेणी में आते हैं। इस भोजन में त्रस जीवों का घात होता है तथा ऐसा भोजन चित्त में मूढ़ता पैदा करता है, जिसके कारण व्यक्ति विवेकहीन एवं कर्तव्य शून्य हो जाता है। मांसाहारी भोजन करने से कई प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

राजसिक भोजन से तात्पर्य उस भोजन से है जो इन्द्रियों का पोषण करे, विलासिता की ओर ले जाये तथा प्रमाद उत्पन्न करे। इस प्रकार के भोजन को निरन्तर करते रहने से व्यक्ति जिह्वा का गुलाम हो जाता है तथा खान-पान के विवेक को खोने लगता है।

सात्त्विक भोजन से तात्पर्य उस भोजन से है जिसमें ऐसी वस्तुओं का ग्रहण हो, जिनकी प्राप्ति के लिए न तो त्रस जीवों का घात हो, न स्थूल हिंसा करनी पड़े तथा साथ ही वह प्रमाद को बढ़ाने वाला भी न हो। ऐसा सात्त्विक भोजन साधना और स्वास्थ्य दोनों दृष्टियों से उत्तम है।

प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में मात्र सात्त्विक भोजन करने पर जोर दिया गया है। सात्त्विक भोजन के अन्तर्गत तो सभी प्रकार की वनस्पतियाँ, अन्न, दूध, घी, तेल आदि आ जाते हैं। लेकिन जैनाचार में इस सात्त्विक

भोजन को भी दो वर्गों में बाँटा गया है—एक वह जिसमें अनेक सूक्ष्म-स्थावर जीवों की हिंसा होती हो तथा दूसरा वह जिसमें सूक्ष्म-स्थावर जीवों की हिंसा कम होती हो। जैनाचार्यों ने इस दूसरे प्रकार के सात्त्विक भोजन को ग्रहण करने को कहा है तथा गृहस्थों के लिए एक आचार-संहिता भी बनायी है। इसी कारण उपर्युक्त पाँच अभक्ष्यों को ग्रहण न करने के लिए कहा गया है। इस प्रकार की आचार-संहिता के पीछे मूल भावना रही है कि छोटे से छोटे त्रस जीवों की भी विराधना न हो, स्थावर जीवों की हिंसा भी न हो या कम हो तथा स्वास्थ्य भी ठीक रहे।

यह बात प्रायः देखने में आती है कि जो व्यक्ति इस प्रकार का सात्त्विक भोजन या गरिष्ठ भोजन करते हैं वे बीमार पड़ जाते हैं। बीमार पड़ जाने की स्थिति में फिर डॉक्टर उन्हें सात्त्विक भोजन करने की ही सलाह देते हैं। जिसको हृदयरोग आदि बीमारी हो तो मांस, मदिरा एवं गरिष्ठ (राजसिक) भोजन तो उसके लिए ज़हर के समान ही है। यदि जीव-दया एवं करुणा की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए अपना रुझान सात्त्विक भोजन की ओर बना लें तो सम्भवतः कभी बीमार भी न पड़ें।

मर्यादित भोजन

विज्ञान के युग में आज हम सभी जानते हैं कि यदि कोई खाद्य पदार्थ एक निश्चित समय-सीमा से ज्यादा पुराना हो जाये तो वह खराब हो जाता है तथा खाने योग्य नहीं रहता है। इसका मुख्य कारण है कि उस खाद्य पदार्थ में बैक्टीरिया आदि अपनी वंश-वृद्धि करने लगते हैं। यदि ऐसे पुराने भोजन को कोई ग्रहण करता है तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आजकल बाजार में जितने भी पैकड खाद्य पदार्थ आते हैं उन सबमें एक्सपायरी डेट लिखी रहती है।

जैनाचार्यों को भी इस बात का विशेष ज्ञान था कि खाद्य पदार्थों में कितने समय बाद सूक्ष्म जीव अपनी वंश-वृद्धि करने लगते हैं। अतः इन सूक्ष्म जीवों की विराधना न हो तथा स्वास्थ्य भी ठीक बना रहे, इस दृष्टि से उन्होंने विभिन्न खाद्य पदार्थों की एक समय-सीमा

(मर्यादा-काल) तक तय की। यह आचार-संहिता भी तय कर दी गई कि मर्यादित-काल वाला भोजन ही खाने योग्य है। इसके पश्चात् वाला सात्त्विक भोजन भी अखाद्य की श्रेणी में आ जाता है। मर्यादा-काल मौसम बदलने के साथ बदलता रहता है। कुछ खाद्य पदार्थों का मर्यादा-काल निम्न प्रकार है—

क्र.सं.	खाद्यपदार्थ	सर्दी	गर्मी	बरसात
(1)	रोटी व पकी दाल	6 घण्टे	6 घण्टे	6 घण्टे
(2)	पकी सब्जी	12 घण्टे	12 घण्टे	12 घण्टे
(3)	तले पदार्थ	24 घण्टे	24 घण्टे	24 घण्टे

इसी प्रकार मसाले आदि पदार्थों के भी मर्यादा-काल जैन ग्रन्थों से जान लेना चाहिये। हालाँकि विशेष सावधानी बरतने पर, नमी रहित शुष्क डिब्बों आदि में इन पदार्थों को रखा जाये तो इनकी मर्यादा किञ्चित् बढ़ सकती है, लेकिन श्रेयस्कर यही है कि हम प्रमाद को त्याग कर इन मर्यादा-काल का समुचित ध्यान रखें।

आज के युग में यदि कोई गृहस्थ इस प्रकार के मर्यादा-काल का ध्यान रखते हुए भोजन करता है तो अपरिचित लोग उसका मजाक उड़ाते हैं तथा उन्हें क्रियाकाण्डी कहते हैं। इस कारण हम उस वस्तु-स्थिति को नज़र-अन्दाज़ कर देते हैं जो हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती है। जो प्रिजर्वेटिव छोटे-छोटे जीवों को हानि पहुँचाते हैं, वस्तुतः वे हमारे स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाते हैं। वे एक प्रकार का ज़हर ही तो है जिसे हम प्रिजर्वेटिव के रूप में ग्रहण कर जाते हैं।

फ्रिज का प्रचलन भी आज प्रायः सभी घरों में है। यदि खाद्य-पदार्थों को इनमें रख दिया जाता है तब भी उनका मर्यादा-काल कुछ समय के लिए ही बढ़ाया जा सकता है। अधिक दिनों तक उसमें रखे पदार्थ स्वतः ही बेस्वाद होने लगते हैं। कुल मिलाकर निष्कर्ष तो यह ही निकलता है कि प्रमाद को छोड़कर मर्यादा-काल को ध्यान में रखकर यदि भोजन किया जाए, तो वह जीवों की हिंसा से रहित, स्वास्थ्यवर्धक एवं स्वाद वाला होगा।

छने जल का प्रयोग

जैन ग्रन्थों में प्रासुक किये गये एवं छने जल को प्रयोग में लाने के लिए विशेष जोर दिया गया है। जल को जीव-रहित करना प्रासुक कहलाता है। जल को प्रासुक करने की विधि भी दी गयी है। यदि कच्चे जल को मोटे सूती कपड़े से छान लिया जाए तो वह स्थूल त्रस जीवों से मुक्त हो जाता है। ऐसे छने हुए कच्चे जल को गृहस्थ प्रयोग में लेते हैं। इस छने जल में यदि लोंग, हरड़ या जीरा पीसकर मिला दिया जाये (या धोवन किया जाए) तो इसके सेवन की मर्यादा बढ़ जाती है। यदि कच्चे छने जल को गरम कर लिया जाये तो उसके ग्रहण की भी मर्यादा अधिक हो जाती है। साधु को तो इस प्रकार उबले जल का प्रयोग करना चाहिए, लेकिन गृहस्थ एवं श्रावकों को भी ऐसे जल का प्रयोग करना ही उत्तम है।

हम सभी जानते हैं कि जल में हानिकारक बैक्टीरिया आदि सूक्ष्म जीव हों तो उसके प्रयोग से अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं। इसी कारण आज कई लोगों ने अपने घरों में बैक्टीरिया दूर करने की मशीन लगा ली है या फिर पानी को उबाल कर तथा फिल्टर करके पीना प्रारम्भ कर दिया है। बोतल बन्द पानी का प्रयोग भी आज बहुत बढ़ चुका है, उसका भी मुख्य कारण जीव-रहित शुद्ध जल का प्रयोग करना ही है।

इस प्रकार प्रासुक और छने हुए जल का प्रयोग करने से पानी जीव-रहित तथा शुद्ध हो सकता है, अतः जल के कारण होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है। कुछ दशकों पहले तक जैनों की यह पहचान थी कि वे छना एवं प्रासुक पानी ही पीते हैं। अब भी यह परम्परा न्यूनाधिक रूप से प्रचलित है। कुछ लोग इस प्रक्रिया की भले ही अवहेलना करें, लेकिन यह विधि पूर्ण वैज्ञानिक है। स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐसा जल प्रयोग में लाना ही उत्तम है।

रसोई की शुद्धता

भोजन बनाने के लिए आवश्यक सामग्री मर्यादा-काल के अन्तर्गत वाली ही हो, लेकिन रसोईघर शुद्ध न

हो तब भी भोजन अभक्ष्य की श्रेणी में आ जाता है। जैन विचारकों ने भोजन बनाने के लिए यह भी निर्देश दिये हैं कि भोजन को शुद्ध रसोईघर में ही बनाना चाहिए। बर्तन एवं खाद्य-पदार्थ स्वच्छ होने चाहिये। भोजन बनाने वाला भी स्वच्छता का ध्यान रखकर ही भोजन बनाये। आज बहुत से लोग इन क्रियाओं को नहीं पालते हैं और इन्हें क्रियाकाण्ड कहकर उपहास करते हैं। लेकिन जो लोग सामान्य विज्ञान से परिचित हैं वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि पूरी तरह स्वास्थ्यपरक बनाने के लिए इन सब क्रियाओं का सख्ती के साथ पालन किया जाना चाहिए। डॉक्टर जब मरीज का ऑपरेशन करते हैं, वे इस प्रकार की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हैं।

इस प्रकार ये क्रियाएँ क्रियाकाण्ड नहीं हैं। हालाँकि जैनाचार्यों ने ये नियम जीवदया की दृष्टि से बनाये थे, लेकिन आज हम सभी यह जानते हैं कि इस प्रकार की स्वच्छता के साथ बना भोजन पूर्णरूपेण स्वास्थ्यपरक एवं स्वास्थ्य-वर्धक होगा। कोई व्यक्ति ऐसे भोजन को खाकर कभी बीमार नहीं पड़ सकता है।

रात्रि-भोजन का निषेध

जैनाचार्यों ने रात्रिभोजन त्याग के लिए भी कहा है। गृहस्थों को न तो रात्रि में भोजन बनाना चाहिये और न ही खाना चाहिये। रात्रि के समय दिन से कम तापमान रहता है तथा नमी अपेक्षाकृत अधिक होती है। इस कारण रात्रि में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है। यदि रात्रि में भोजन बनाया जाये या फिर खाया जाये तो जीवों की विराधना अधिक होगी। अतः जीवों की इस हिंसा से बचने के लिए दिन में ही भोजन करना चाहिये।

भोजन पचने में कुछ समय लगता है। यदि भोजन दिन में कर लिया जाये तो सोने से पहले उसे पचने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसके विपरीत यदि भोजन रात्रि में किया गया है तो उसे पचने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है। भोजन ठीक से न पचने के कारण व्यक्ति बीमार पड़ सकता है तथा दूसरे अन्य रोग

भी उस पर आक्रमण कर सकते हैं।

दिन में बना भोजन अधिक स्वास्थ्यकर होता है, इसमें जीव-हिंसा न्यूनतम होती है। दिन में भोजन करने से स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। दूसरे धर्मों में भी दिन में भोजन करने को श्रेष्ठ माना गया है। विदेशों में कई जातियाँ प्राचीन समय से दिन में ही भोजन करना पसन्द करती हैं तथा वे अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ पायी गई हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन भोजन-पद्धति एक सुविकसित वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित है। इस पद्धति द्वारा जीवों की हिंसा से बचा जा सकता है, साथ ही शुद्ध, हाइजैनिक एवं स्वास्थ्य-वर्धक भोजन भी प्राप्त किया जा सकता है। साधना की दृष्टि से एवं नीरोगता की दृष्टि से भी जैन पद्धति द्वारा भोजन करना ही श्रेयस्कर है।

अवशिष्ट

भोजन कब, कितना, कैसा और कब करना चाहिये, ये बहुत ही अहम् प्रश्न हैं, क्योंकि इनका सम्बन्ध न केवल धर्म से है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य से भी है। अनेक दार्शनिकों ने इन प्रश्नों पर प्रकाश डाला है। जैनधर्म में विशुद्ध शाकाहारी रहने एवं भूख से थोड़ा कम भोजन खाने का उपदेश दिया गया है। इसका मूल उद्देश्य जीव दया एवं करुणा से प्रेरित है। साथ ही यह भी कहा गया है कि ऐसा करने से साधना में एकाग्रता बढ़ती है। अन्य कई धर्मों में भी शाकाहारी भोजन करने की प्रेरणा दी गई है। योग-साधना की दृष्टि से भी शाकाहारी भोजन अच्छा माना गया है।

विश्व में कई ऐसे वर्ग और समुदाय हैं जो परम्परागत तरीके से शाकाहारी भोजन करते हैं। जापान और रूस जैसे देशों में जहाँ मांसाहार का प्रचलन अधिक है, वहाँ भी यह आम धारणा है कि जो लोग शाकाहारी भोजन करते हैं उनकी आयु प्रायः सौ वर्ष से अधिक की होती है, जो कि वहाँ के लोगों की औसत आयु से अधिक है। रूस और जापान में कई ऐसे समुदाय हैं जो कि प्रायः पहाड़ों पर प्रकृति के मध्य में रहते हैं तथा

शाकाहारी भोजन करते हैं। इनकी औसत आयु सौ वर्ष से अधिक होती है।

आज के वैज्ञानिक भी शाकाहारी भोजन को मांसाहार की तुलना में श्रेष्ठ बताते हैं। वैज्ञानिकों की यह दृष्टि स्वास्थ्य के आधार पर बनी है। इसी कारण विदेशों में शाकाहार के प्रति लोगों में दिलचस्पी बढ़ी है। अकेले इंग्लैण्ड में प्रति सप्ताह लगभग पाँच हजार नये शाकाहारी बनते जा रहे हैं।

भोजन कब और कितना करना चाहिये? इस पर भी अनेकों विचार उपलब्ध हैं। जैन धर्मानुसार भोजन सूर्य की रोशनी रहने के दौरान ही करना चाहिये। सूर्यास्त के पश्चात् भोजन कभी नहीं करना चाहिये। इस विचार के पीछे मूल भावना अहिंसा और जीव दया की ही है। सूर्यास्त के पश्चात् अनेकों सूक्ष्म जीव पैदा हो जाते हैं। जो कि सूर्य की रोशनी में नहीं रहते हैं। यदि कोई रात्रि में भोजन करता है तो ये सूक्ष्म जीव उसके भोजन में मिल जाते हैं तथा मर जाते हैं। अतः जीवों की रक्षा की दृष्टि से रात्रि-भोजन का त्याग अनिवार्य है।

‘महाभारत’ में रात्रि भोजन निषेध की झलक देखने को मिलती है। इसमें कहा गया है कि सुबह का भोजन राजाओं जैसा, दोपहर का भोजन गरीबों जैसा तथा सायं का भोजन फकीरों जैसा होना चाहिये। एक प्रकार से यहाँ कहा गया है कि शाम को भोजन न बनायें, यदि आवश्यकता हो तो दिन के बचे हुए भोजन से ही काम चला लेना चाहिये।

देश में कई ऐसे हिस्से हैं जहाँ प्रायः सूर्यास्त के साथ ही लोग भोजन समाप्त कर लेते हैं। कुछ समय पूर्व तक गुजरात में प्रायः यही परम्परा थी। इस प्रकार की परम्परा विदेशों में भी कई स्थानों पर प्रचलित रही है। कइयों को शायद यह जानकर आश्चर्य हो कि रूस में सभी होटल प्रायः साढे छह-सात बजे बन्द हो जाते हैं। वहाँ तो एक प्रसिद्ध दिलचस्प कहावत भी है ‘सुबह में भोजन अकेले खाओ, दोपहर में बाँटकर खाओ और रात में (डिनर) दुश्मन को खिलाओ।’ इस लोकोक्ति में

रहस्य छिपा हुआ है। हमें उसे समझना चाहिये। कोई भी व्यक्ति अपने मित्र का अनिष्ट नहीं चाहेगा। यदि किसी का कोई अनिष्ट चाहता है तो निश्चित ही वह उसका शत्रु होगा। डिनर (रात्रि भोजन) निश्चित रूप से कुछ अनिष्ट करता है। इसीलिये यह लोकोक्ति प्रसिद्ध हुई। रात्रि भोजन कई बीमारियों को आमन्त्रित करता है। रात्रि भोजन से बीमारियाँ इतनी धीमी रफ्तार से बढ़ती हैं कि हम उनके दुष्प्रभाव को महसूस भी नहीं कर पाते हैं। लेकिन यह अनेक बीमारियों की जड़ तो है ही। आज स्वास्थ्य वैज्ञानिक एवं डॉक्टर भी सलाह देते हैं कि रात्रि में सोने से पहले कम से कम पाँच घण्टे पहले भोजन समाप्त कर लेना चाहिये।

रात्रिभोजन-त्याग

बहुत से लोगों को देखा है कि रात्रि को अपना व्यवसाय बन्द करके घर आते हैं तथा फिर रात्रि में भोजन नौ-दस बजे खाना खाते हैं और सो जाते हैं। वस्तुतः ये लोग अपना ही अनिष्ट कर रहे हैं और स्वयं अपने ही शत्रु बन रहे हैं। कई बीमारियाँ धीमी गति से उनके शरीर

में घर बना लेती हैं। कई जैन लोगों के यहाँ विवाह आदि के अवसर पर देखा गया है कि वे इन मौकों पर अपने मित्र लोगों को बुलाते हैं तथा रात्रि में भोजन कराते हैं। रात्रि में भोजन करने के दुष्परिणाम का अनुमान इससे भी लगा सकते हैं कि ये लोग अक्सर कहते हुए भी मिल जाते हैं कि कल रात को दावत में चला गया था, इसलिये आज थोड़ी कब्ज हो गई। यह तो रात्रि भोजन का तुरन्त दिखने वाला असर है। जो असर धीमी गति से होता है, वह तो दिखता भी नहीं है। इस प्रकार हम अपने मित्रों को रात्रि में खिलाकर उनसे दुश्मनों जैसा व्यवहार करते हैं।

इस प्रकार हमें कम से कम स्वास्थ्य की दृष्टि से रात्रि भोजन का त्याग कर देना चाहिये और यदि हम जैन धर्म पर श्रद्धा रखने के कारण रात्रिभोजन का त्याग करते हैं तो हमें दोहरा लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य तो ठीक रहेगा ही, जीव दया और करुणा की भावना भी बलवती होगी, जो कि अहिंसा महाव्रत का ही हिस्सा है।

-डी-197, मोती पार्क के सामने, मोती मार्ग, बापू नगर, जयपुर-302015 (राज.)

एकता में ही सुनहरा कल है

श्री त्रिलोकचन्द्र जैन

अस्तित्व तो बून्द का भी होता है
एक तिनका भी अपनी कहानी कहता है
कीमत तो एक सेकण्ड की भी रही है
एक बीज में भी तो सम्भावनाएँ कम नहीं हैं
पर यह भी तो सुना होगा
अनेक बून्दों का समन्वय महासागर का विरुद पाता
तिनकों से बना घोंसला आश्रय स्थल कहलाता
इतिहास एक युग का ही तो बनता है
बीज भी धान्यराशि रूप में क्षुधा शान्त करता है
एक, एक है और न ही किसी से कम है
पर यह भी सच है कि एकता में दम है
बाधाएँ आती नहीं अथवा कमजोर पड़ जाती हैं

कदम मिलाकर चलने से मज्जिलें झुक जाती हैं
अकेले दाने यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखर रहे
अहं के वहम से अपनी वास्तविक कीमत खो रहे
अकेले को परेशानी महाकाय नज़र दिखती
जब साथ हो संगी तो वही सूक्ष्मता को वरती
साथ चलो, साथ ले के चलो,
व्यक्तित्व निखर जायेगा
एकता से सम्भवतः हर समस्या का हल निकल आयेगा
देह से अकेले रहने पर भी विचारों का समन्वय करो
सब मेरे हैं, मेरे समान हैं, इन भावों को अन्तर धरो
एकता में बल है, एकता में हल है,
एकता में सम्बल है, एकता में ही सुनहरा कल है।

-37/67, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020
(राजस्थान)

चातुर्मास : आत्म उन्नति का सर्वोत्तम उपक्रम

श्री पदमचन्द्र गाँधी

भारतीय संस्कृति त्याग, संयम और अध्यात्म की संस्कृति है। धर्म हर व्यक्ति को आत्मदर्शी बनने की प्रेरणा देता है। पवित्र मन और विचारधारा का जीवन में विशेष महत्त्व होता है और जैनधर्म में इसकी पुष्टि हेतु चातुर्मास कल्प का विधान किया है। चातुर्मास प्रतिवर्ष हमारे जीवन में नवदीप जलाने, नये संकल्पों को प्रबल बनाने के लिए स्वर्णिम प्रभात की अगवानी लेकर उपस्थित होता है।

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तई।

धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइओ।।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि धर्म आराधना में व्यतीत रात्रियाँ ही सफल हैं। चातुर्मास का समय वीतराग वाणी का स्वर्णिम संयोग लेकर आता है, जिसका श्रावकों को पूर्ण लाभ उठाकर बीते समय को सुधारते हुए अपने आपको धार्मिक क्रियाओं में, शुभचिन्तन में लगाकर अध्यात्म का पथिक बनना है। श्रावक इस समय धर्म ध्यान की लड़ी लगा कर आस्रव द्वार को बन्द करके संवर में समय बिताते हुए अपने कर्मों की निर्जरा करे।

जैनधर्म आत्मवादी धर्म है और आत्मा का केन्द्रीय तत्त्व धर्म है। आत्मा मूल स्वरूप में शुद्ध, अमूर्त, ज्योतिर्मय और निरामय है, इसका एक स्वरूप अशुद्ध, मूर्त और अन्धकारमय भी है। आत्मा अपने सुख-दुःख का विधाता स्वयं है। धर्म का प्रभाव ही आत्मा में स्थित कषाय और विकारों को नष्ट करके हमारे मन को पवित्र बनाता है। चातुर्मास आत्मा को सात्त्विक खुराक देने वाला मौसम है तथा स्वकल्याण का सुनहरा अवसर है। साधक इस अवधि में अज्ञान के अन्धेरे को मिटाकर जीवन में नयी रोशनी लाने का प्रयत्न करता है तथा अहिंसा एवं अपरिग्रह के मार्ग को प्रशस्त करते हुए

जीवन का अन्तःकरण से पर्यवलोकन करता है। यह वर्षावास अनुशासन, साधना, संयम तथा आत्मोन्नति की राह प्रशस्त करता है, जिसकी साधना करते हुए साधक के मानस पटल पर संस्कृति एवं सदाचार प्रस्फुटित होते हैं। कल्पसूत्र में कहा है कि यह आध्यात्मिक पर्व है जो आत्मा को जगाता है।

वर्षा ऋतु को जीवोत्पत्ति की जननी कहा गया है, क्योंकि इस ऋतु में अन्य ऋतुओं की अपेक्षा सूक्ष्म, स्थूल, त्रस एवं स्थावर जीवों की अधिकतम उत्पत्ति होती है तथा उनका आवागमन भी अधिक होता है। इन जीवों की विराधना नहीं हो, हिंसा नहीं हो, इसलिये 'श्रमण-श्रमणी' एक स्थान पर स्थिर हो जाते हैं तथा श्रावक भी पूर्ण विवेक रखते हुए स्थिर रहने का प्रयास करता है। हमारे कारण इन सूक्ष्म-बादर प्राणियों को ठेस नहीं पहुँचे, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है।

चातुर्मास आत्मचिन्तन का एक मानसून लेकर आता है, क्योंकि इस अवधि में साधक अपना मूल्यांकन कर सकता है कि इन चार माह में हमारे में कितना परिवर्तन आया? भीतर पनप रहे राग-द्वेष का निवारण किया या नहीं? जिसको क्षमा करना है उसे क्षमा किया या नहीं? दुश्मन को गले लगाया या नहीं? त्रस और स्थावर जीवों की रक्षा के लिए कदम बढ़ाया या नहीं? आत्मा को पवित्र बनाने के लिए व्रत नियम या प्रत्याख्यान को अपनाया या नहीं? जीवदया, स्वधर्मी सेवा, मानव सेवा के लिए तत्पर रहा या नहीं? इन सबकी ओर मेरा चिन्तन कितना रहा, कितना सफल हुआ? इस प्रकार का आकलन जीवन को आध्यात्मिक एवं उन्नत बनाता है। ऐसी बातों से ही चातुर्मास ऐतिहासिक के साथ आध्यात्मिक बन पाता है।

चातुर्मास 'स्व-पर' कल्याण करने का स्वर्णिम

अवसर है क्योंकि साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाएँ इसमें साधना-आराधना, त्याग-तपस्याएँ करते हैं। श्रमण हमें इस अवधि में जिनवाणी का रसास्वादन कराते हैं और हमें नित्य प्रति जीवन को जैनत्वमय बनाने का सन्देश देते हैं। सन्तों के जीवन का एक भी संदेश यदि आचरित हो जाये तो हमारा जीवन बदल जाता है, हमारी सोच बदल जाती है और एक नई दिशा जीवन को मिल जाती है। सन्त हमारी विरासत हैं, हमारे जीवन के पथ प्रदर्शक हैं, हमारे मार्गदर्शक हैं, इसलिये चातुर्मास में इनसे सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय बन जाता है जिससे हमें सही जीवन जीने की कला को आत्मसात् करने का अवसर प्राप्त होता है। कहते हैं, बसन्त ऋतु सृष्टि को खिला देती है और सन्त हमारे अन्तर्मन की छवि को खिला देते हैं। बरसात का पानी और सन्तों की अमृतवाणी हमारे जीवन को खुशहाल बना देती है।

सन्तों का संग किस्मत से मिलता है,
इनका आशीष युग-युग तक फलता है।
थाम लेते हैं जिनका हाथ गुरुवर,
बिगड़ा नसीब उनका तेजी से बदलता है।।

सन्तों के अध्यात्म एवं शुद्धता से अनुप्राणित आभामण्डल समूचे वातावरण को शान्तिमय, ज्योतिर्मय एवं आनन्दमय बना देता है, इनसे हमारे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। सन्त हमारी चेतना पर कर्म संस्कारों के रूप में परत दर परत जमी राख को हटा देते हैं। इससे हमारे जीवन रूपी सभी रास्ते उजालों से भर जाते हैं। लोक चेतना, शारीरिक-मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त होकर संवेदनशील भावनात्मक स्वस्थता प्राप्त करते हैं। सन्त धरती के कल्पवृक्ष होते हैं। संस्कृति के प्रतीक, जीवन कला के मर्मज्ञ और ज्ञान के रत्नदीप होते हैं। उनके सान्निध्य में संस्कृति, परम्परा, धर्म और दर्शन का प्रशिक्षण लिया जाता है। उनका उपदेश किसी की ज्ञान चेतना को जगाता है तो किसी की विवेक चेतना को विकसित करता है। इतना ही नहीं वे हमें हमारे भीतर उत्पन्न संवेदनाओं एवं करुणाशीलता के फैलाव के लिए

जागरूक एवं तत्पर बनाते हैं। ये सभी इस अवधि और साधना का ही प्रभाव है कि श्रावक की संवेदनशीलता इतनी गहरी और पवित्र हो जाती है, जिससे वह अपने सुख की खोज में किसी को सुख से वञ्चित नहीं करता। किसी के प्रति अन्याय, अनीति और अत्याचार नहीं होने देता। यहाँ तक कि वह हरे-भरे वृक्ष को भी नहीं काटता है और पर्यावरण को दूषित करने से भी बचता है। यह तभी सम्भव है जबकि वह महावीर का सच्चा साधक, अनुयायी एवं उपासक हो, अन्यथा वह आडम्बरजनित परम्परा को निभाने वाला, जड़हीन मानवीय लक्षणों वाला निरीह प्राणिमात्र है, जो केवल जीवन ढोता है- जीता नहीं। जिससे वह स्वयं ही दुःखी एवं अन्यों को भी दुःखी करता है। इसलिए चातुर्मास हमें सच्चे श्रमणोपासक बनने की प्रेरणा देते हुए हमारा कल्याण करता है।

वर्षावास हमें आत्मा से परमात्मा की ओर, वासना से उपासना की ओर, अहम् से अहम् की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर, भोग से योग की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर तथा बाहर से भीतर की ओर आने की राह दिखाता है। वह श्रावक श्रेष्ठ साधक बन जाता है जो इनको आचरित करता है।

वह क्षेत्र भी धन्य हो जाता है तथा सौभाग्यशाली बन जाता है जहाँ साधु-साध्वी का वर्षावास होता है, जिनके आध्यात्मिक प्रवचन की अमृत ज्ञान-गंगा से जीवन के मन्त्र, जीवन के सूत्र मिलते हैं। प्रत्येक साधक साधना एवं स्वाध्याय करता है। समाज को साधर्मिक सेवा एवं सुपात्र दान का अवसर प्राप्त होता है। साधक अपने जीवन का आत्मबोध प्राप्त कर मिथ्यात्व को मिटाता है तथा सत्य की राह पर चलने का प्रयत्न करता है। वह सत्य को समझ कर सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर सकता है। फिर वह सम्यग्दर्शन को आत्मसात् करते हुए सम्यक् चारित्र में लीन हो जाता है। सत्य को समझना सम्यग्ज्ञान है। सत्य की शोध करना सम्यग्दर्शन है तथा सत्य का अनुभव प्राप्त कर आत्मरमण करना सम्यक् चारित्र है। सत्ता में पड़े हुए कर्मों का कम समय में क्षय करने की

कला सम्यक् तप है। यह सभी ज्ञान हमें चातुर्मास में आसानी से प्राप्त हो सकता है।

चातुर्मास एक ऐसा सुन्दर अवसर है, जहाँ हम एक स्थान पर रहकर आत्मदर्शन, आत्मज्ञान का पोषण करते हुए आत्मरमण का पराक्रम करते हैं। इस अवधि में आभ्यन्तर तप प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान एवं व्युत्सर्ग की ओर तथा बाह्यतप में अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रस-परित्याग, कायक्लेश और प्रतिसंलीनता की ओर क्रम बढ़ाकर हम हमारे जीवन को निर्मल एवं पवित्र बनाते हैं।

मौसम की आर्द्रता और वातावरण की प्रेरकता के कारण दीर्घ दिवसों की कठिन तपस्या भी सहज रूप से सम्पन्न हो जाती है। सन्तों के धर्मोपदेश के माध्यम से सम्पूर्ण वातावरण जप, तप, त्याग, तपस्या, दया, धर्म एवं दान इत्यादि से ओत-प्रोत हो जाता है। व्यक्ति की सहज में ही प्रवृत्तियाँ धार्मिक बन जाती हैं। नियमित प्रवचन एवं धर्म ग्रन्थों के अध्ययन और श्रवण से संघस्थ त्यागीजनों में ज्ञान, धैर्य, अध्ययनशीलता, वाक्पटुता, प्रवचन कला आदि का विकास होता है।

चातुर्मास पर्वों को लेकर आता है जो सद्भावना एवं सौहार्द की सौगात हमें दे जाता है। प्रकृति की बिखरी हुई छटा पर्यावरण का पाठ पढ़ा देती है। रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, दीपावली इसी वर्षावास में आती हैं, ये सभी त्यौहार न केवल रिश्तों की मिठास को बढ़ाते हैं वरन् एक दूसरे का सम्मान, आदर तथा भाईचारे के रिश्तों की नींव को मजबूत करते हैं। सबसे बड़ा पर्व पर्युषण महापर्व इसी वर्षावास में आता है जो जीवन में आध्यात्मिक

क्रान्ति को उजागर करता है। यह पर्व हमारे भीतर छुपी हुई क्षमता तथा भीतरी गुणों को बाहर लाकर निखारता है। 'पर' से 'स्व' के भीतर जाकर आत्मा को उज्ज्वल बनाने का प्रयास करता है। भीतर में व्याप्त कषायों को ढूँढ़कर, उन्हें क्षीण-क्षीण करता है। दान, शील, तप एवं भावना को उत्कृष्ट बना कर उसे पावन एवं पवित्र बनाता है। सांवत्सरिक महापर्व हमें क्षमा का पाठ पढ़ाता है जो विनय, निर्मलता एवं सरलता से सम्भव है। इससे दुश्मन भी गले लग जाता है, शत्रु भी मित्र बन जाता है, क्योंकि क्षमा में वह ताकत है जो तलवार में नहीं, धन में नहीं और बल में नहीं। क्षमा वीरों का आभूषण है। इसलिए कहा है 'क्षमा वीरस्य भूषणम्।' सरलता से क्षमा का जन्म होता है और सरलता व्यक्ति को महान बनाकर उसके जीवन को हल्का एवं सरल कर देती है। यही गुण मोक्ष की ओर ले जाते हैं। सांवत्सरिक पर्व हमें चौरासी लाख जीवोनियों में सूक्ष्म-बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त जीवों की रक्षा के लिए मन-वचन-काया से अठारह लाख चौबीस हजार एक सौ बीस प्रकार से उनकी रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

यह भी सत्य है कि यदि हमारा अध्यात्म उन्नत है तो हमारा जीवन उन्नत है और इससे हमारा खान-पान, आचरण, हमारी विचारधारा, हमारे रिश्ते तथा हमारी समझ भी उन्नत बन जाती है। अतः हम चातुर्मास को समझें, धर्म को जीवन में उतारें, जिससे हमारा मानसिक उत्थान तो होगा ही साथ में सच्चे श्रमणोपासक भी बन सकेंगे।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

आवश्यकता

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर में स्थित 'आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार एवं शोध प्रतिष्ठान' के लिए सेवाभावी, शिक्षित एवं समर्पित व्यवस्थापक की आवश्यकता है, जो धार्मिक शास्त्रों, पुस्तकों की देखरेख एवं प्रतिलेखना आदि कार्य कर सके। वेतन योग्यतानुसार। सम्पर्क सूत्र-श्री सुरेशचन्द्र कोठारी, ट्रस्टी आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, लाल भवन-चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.) मोबाइल 9314501627, फोन नं. 0141-2312414

सविधि गुरुवन्दन से लाभ

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

विधिपूर्वक वन्दन प्रभावशाली

जब कभी हम सन्त मुनिराज के सान्निध्य में जाते हैं अथवा मुनिराज हमें सामने दिखाई देते हैं तो हम तिकखुत्तो के पाठ का उच्चारण कर वन्दन करते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? वन्दन तो शान्त रहकर, बिना बोले भी किया जा सकता है। तिकखुत्तो के उच्चारण के साथ किया गया विधिपूर्वक भाव वन्दन क्यों प्रभावशाली हो जाता है? यह शोध का विषय है।

गुरुवन्दन का पाठ एवं उसका भावार्थ

तिकखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि, वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

भावार्थ-भगवन्! दाहिनी ओर से आपकी तीन बार प्रदक्षिणा करता हूँ। आपको मैं वन्दना करता हूँ, नमस्कार करता हूँ, सत्कार करता हूँ, सम्मान करता हूँ। आप कल्याण रूप हैं, मंगल रूप हैं, देव स्वरूप हैं, चैत्य स्वरूप यानी ज्ञान स्वरूप हैं। मैं आपके चरण कमलों में मन, वचन और काया से पर्युपासना करता हूँ तथा मस्तक झुकाकर वन्दना करता हूँ।

तिकखुत्तो के पाठ में चयनित शब्दों का रहस्य

गुरुवन्दन हेतु अभिव्यक्ति के लिए तिकखुत्तो के पाठ में विनय के सूचक चार शब्द हैं। नमंसामि का अर्थ है-मैं शरीर से झुकता हूँ। वंदामि का अर्थ है-मैं वाणी द्वारा आपके गुणों का गुणगान करता हूँ। मन से गुरु के प्रति सक्कारेमि, अहोभाव का सूचक है तो सम्माणेमि का तात्पर्य गुरु को देखकर प्राथमिकता उनके समीप आकर झुकते हुए सम्मान देने की है। इस प्रकार के भावपूर्वक वन्दन करने से मन, वचन और काया तीनों का तालमेल हो जाता है। वाणी से गुरु का गुणगान करने

एवं उनको कल्याणकारी, मंगलकारी, देव स्वरूप कहने से उनके प्रति श्रद्धा, आदर, बहुमान की अभिव्यक्ति होती है और मन चुम्बक की भाँति गुरु के प्रति आकर्षित होने लगता है, जिससे वन्दन करने वाले में भावात्मक बदलाव आ जाता है। इसके साथ ही उसमें रेकी और प्राणिक हीलिंग के सिद्धान्तानुसार गुरु की ऊर्जा, आशीर्वाद की तरङ्गों का प्रवाह होने लगता है। फलतः व्यक्ति की अशुभ लेश्याएँ शुभ में परिवर्तित होने लगती हैं। आभा मण्डल शुद्ध होने लगता है। दूसरों के जिन गुणों का हम बखान करते हैं, वे हमारे अन्दर भी विकसित होने लगते हैं। अर्थात् गुणानुवाद से वन्दनकर्ता में भी सद्गुण बढ़ने लगते हैं। परिणाम स्वरूप वन्दनकर्ता भय, तनाव, दुःख, नकारात्मक सोच आदि भावों से मुक्त होने लगता है तथा उसमें अभय, सन्तोष, प्रसन्नता एवं उत्साह का प्रादुर्भाव होने लगता है। आत्मा कर्मों के आवरण से मुक्त एवं हल्की होने लगती है। हल्की वस्तु ऊपर उठती है। अतः सही विधि से गुरुवन्दन पाठ के द्वारा गुरुवन्दन करने से नीच गोत्र का बन्ध नहीं होता। ग्रन्थ इस बात का प्रमाण देते हैं कि एक बार श्री कृष्ण ने भगवान अरिष्टनेमि के सन्त-मुनिराजों को बिना किसी कामना से वन्दन कर अपने नरक भव के बन्धन कम कर दिए। वन्दन करते समय दृष्टि गुरु की ओर हो, भावों में गुरु के प्रति श्रद्धा एवं विनय तथा वाणी में गुरु के गुणों के प्रति प्रमोदभाव की अभिव्यक्ति हो। वन्दन बिना किसी स्वार्थ एवं कामना के अहोभाव पूर्वक होना चाहिए अन्यथा वह मात्र द्रव्य वन्दन ही होगा, जिससे अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा। चिन्तनपूर्वक समझकर की गई धार्मिक क्रियाओं से लाभ बहुत बढ़ जाता है। तिकखुत्तो के पाठ में उच्चरित प्रत्येक शब्द के रहस्य का चिन्तन करते हुए यदि शारीरिक क्रिया करें, तो वह क्रिया कभी

भार स्वरूप नहीं लगती। गुरु-वन्दन से कषाय मन्द होते हैं। प्रमाद दूर होता है और संयमित जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। फलतः अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होता है और रोगों से मुक्ति मिलती है। रोग भी दुःख, तनाव, भय एवं अशान्ति के प्रमुख कारण हैं।

विनय गुण का विकास

मानसिक स्तर पर नमस्कार विनय का प्रतीक है, ज्ञान का आधार है। तिक्रुत्तो का उच्चारण स्वाध्याय का ही रूप है। अतः इसके उच्चारण से ज्ञानावरणीय अशुभ कर्मों का क्षय होता है एवं स्मरणशक्ति अच्छी होती है।

वन्दन करने से अहं दूर होता है। विनयवान् व्यक्ति की बात प्रत्येक व्यक्ति सहर्ष बिना आनाकानी के स्वीकार करने लगता है, जिससे उसको मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। मानसिक तनाव ही रक्तचाप, मधुमेह, हृदयाघात आदि रोगों का मुख्य कारण होता है। यही मानसिक शान्ति स्वास्थ्य का मूलाधार होती है।

वन्दन तीन बार क्यों

गुरुदेव को जितना वन्दन करें कम है। पाँचवें पद पर विराजमान गुरुदेव 27 गुणों के धारक होते हैं। अतः यदि उनके एक-एक गुण स्वरूप एक-एक बार भी गुरुवन्दन करें तो भी 27 बार वन्दन करना चाहिए, जो प्रायः सम्भव नहीं होता। परन्तु उनके ज्ञान, दर्शन, चारित्र के प्रतीक के रूप में कम से कम तीन बार तो वन्दन करना ही चाहिए।

गुरुवन्दन की विधि में समाया हमारा स्वास्थ्य

गुरुवन्दन हेतु जब दोनों हाथ जोड़कर, पैर मिलाकर खड़े होते हैं तो दोनों पगथलियों पर दबाव पड़ने से, एक्यूप्रेशर की सुजोक एवं फुट रिफ्लेक्सोलॉजी के सिद्धान्तानुसार सभी अङ्गों-उपाङ्गों से सम्बन्धित प्रतिवेदन बिन्दुओं पर भी दबाव आता है। फलतः उनसे सम्बन्धित शरीर के भागों में चेतना का प्रवाह बराबर होने लगता है एवं उनकी कार्य क्षमता बढ़ने लगती है। हम प्रायः अनुभव करते हैं कि सोने की अवस्था की

अपेक्षा बैठने तथा बैठने की अपेक्षा खड़े रहने पर व्यक्ति अधिक सक्रिय होता है, प्रमाद अपेक्षाकृत कम आता है।

नमस्कार के साथ तीन बार आवर्तन करने से कन्धों में आयी जड़ता दूर होने लगती है और कन्धे स्वस्थ तथा सक्रिय होने लगते हैं। कन्धों से गुजरने वाले हृदय, मस्तिष्क (पेरिकार्डियन), फेफड़ों, छोटी आँत, बड़ी आँत और ट्रिपल वार्मर (मेरुदण्ड) आदि से सम्बन्धित मेरेडियन की ऊर्जा प्रवाह में आया अवरोध दूर होने लगता है और ये सभी अङ्ग सक्रिय होकर कार्य करने लगते हैं जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

पञ्चाङ्ग नमस्कार से शरीर के सभी प्रमुख जोड़ों में खिंचाव आता है। गले में खिंचाव से थॉयराइड ग्रन्थि में, कमर में खिंचाव से पेट एवं प्रजनन अङ्गों में, घुटनों को मोड़ने से घुटनों का जोड़, पगथली में ऐडी के पीछे खिंचाव से लसिका तन्त्र (जिसका कार्य शरीर के विभिन्न भागों में उत्पन्न विजातीय तत्त्वों को हटाना होता है) एवं अंगुलियों पर खिंचाव से पूरा नाड़ी तन्त्र सजग एवं सक्रिय होता है। वंदामि से मत्थण वंदामि तक सीधी कमर बैठने से वज्रासन जैसा होता है, जिससे वीर्य विकार दूर होते हैं एवं शरीर की रोग-प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ती है। प्रथम नमस्कार के पश्चात् पुनः खड़े होते ही सारे शरीर में सक्रियता का अनुभव होने लगता है। यही प्रक्रिया दूसरी एवं तीसरी वन्दना के बाद भी की जाती है।

वन्दन-नमस्कार करते समय हाथ जोड़ने पर, दोनों हथेलियों का स्पर्श होने से चन्द्र और सूर्य स्वर सम होने लगता है और सुषुम्ना स्वर चलने लगता है। फलतः वात, कफ और पित्त आदि विकारों पर अंकुश लगने लगता है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार वात, कफ एवं पित्त के असन्तुलन से ही रोगों की उत्पत्ति होती है। दोनों हाथ जोड़ने एवं पैरों का आपस में स्पर्श होने से शरीर के बायें-दाहिने भाग का आभामण्डल सन्तुलित होने लगता है, जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है और वन्दनकर्ता पर संक्रामक रोगों का

अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ता है।

हथेली में सुजोक एवं हैण्ड रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेसर के सिद्धान्तानुसार शरीर के प्रत्येक भाग के प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं और जब दोनों हथेलियों को मिलते हैं तो सभी अङ्गों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह सन्तुलित होने लगता है, आवेग शान्त होने लगते हैं। मन की चञ्चलता शान्त होती है, श्वास की गति मन्द हो जाती है। जिससे अहं का विसर्जन एवं क्रोध शान्त होता है। सकारात्मक सोच विकसित होने लगती है। इसी कारण हमारे यहाँ एक लोकोक्ति है—“हाथ जोड़ो-गुस्सा छोड़ो” अर्थात् हाथ जोड़कर क्रोध नहीं किया जा सकता।

हथेली की पाँचों अंगुलियाँ पञ्च महाभूत तत्त्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का प्रतिनिधित्व करती हैं। अतः हाथ जोड़ने से बायें-दायें

पञ्च तत्त्वों का सन्तुलन होने लगता है। पञ्च तत्त्वों का असन्तुलन ही अधिकांश रोगों का मूल कारण होता है।

श्रद्धेय उग्रविहारी गुणवन्त मुनिजी महाराज साहब के अनुसार वन्दन करने से चलने की थकावट दूर होती है। जैन साधु पैदल विहार करते हैं और विहार के पश्चात् थकान होना स्वाभाविक है। यदि वे गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के पश्चात् अपनी शक्ति के अनुसार विधिपूर्वक वन्दन कर लें तो उनकी थकान शीघ्र दूर हो जाती है।

इस प्रकार सही विधि एवं सही उच्चारण के अनुसार तिक्रुत्तो के पाठ से वन्दन करने से शारीरिक और मानसिक विकार दूर होते हैं और व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता है। परिणामतः शरीर में सक्रियता, मन में शान्ति और साधना में सुगमता होती है।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर,
जोधपुर-342003(राज.)

माँ की दखलंदाजी

श्री एस. कन्हैयालाल गोलेच्छा

एक लड़की अपनी माँ के साथ पुलिस स्टेशन में अपने पति और ससुराल वालों के खिलाफ शिकायत करने जाती है। वहाँ महिला ऑफिसर लड़की से पूछती है—1. क्या तुम्हारा पति तुमको मारता है? 2. क्या वह तुम्हें खाने के लिए भोजन और पहनने को वस्त्र नहीं देता है? 3. क्या वह तुमसे तुम्हारे माता-पिता से कुछ माँग कर लाने के लिए कहता है? 4. क्या तुम्हारे ससुराल वाले तुम्हें कुछ भला-बुरा कहते हैं? 5. क्या तुम्हारा पति तुम्हारा खयाल नहीं रखता?

इन सब सवालियों का जवाब लड़की ने ‘नहीं’ में दिया और कहा कि ऐसी कोई बात नहीं है। इस पर लड़की की माँ बोली कि मेरी बेटी बहुत परेशान है, वे इसे परेशान करते हैं।

अफसर समझ गयी। उसने लड़की की माँ से पूछा—“बहनजी! क्या आप घर में दही जमाती हो।” लड़की की माँ ने कहा—“हाँ।” अफसर ने कहा, तो

जब दही जमाती हो तो बार-बार दही को ऊँगली डालकर जाँचती हो क्या? लड़की की माँ ने कहा—जी अगर बार-बार ऊँगली डालकर जाँचूगी तो दही कहाँ जमेगा? वह तो खराब हो जायेगा। फिर अफसर ने कहा—बहनजी! इस बात को समझिये शादी से पहले लड़की दूध थी। अब उसको जमकर दही बनना है। आप बार-बार ऊँगली डालेंगी तो वह ससुराल में जमेगी कैसे? आपकी लड़की ससुराल में परेशान नहीं है। आपकी दखलंदाजी ही उसके घर की परेशानी का कारण है। उसे उसके ससुराल में व्यवस्थित होने की शिक्षा दीजिए। हमेशा फोन, मोबाइल से हालचाल पूछना बन्द कीजिए। अपनी बेटी को सामञ्जस्य की सलाह दीजिए। माँ तो वह है जो संस्कारों का बीजारोपण करती है। नई पीढ़ी को संस्कार देना निहायत जरूरी है। यह काम मूल रूप से माँ को करना है। माँ के द्वारा दी गई शिक्षा बेटी के लिए अमूल्य धरोहर होगी। अच्छी हितकारी शिक्षा से वह संकटों, विपत्तियों के क्षणों में विचलित नहीं होगी।

-7/25, कामराज साले आर. ए. पुरम, चेन्नई

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



डॉ. धर्मचन्द जैन

पञ्चशती प्रबोध(प्रबन्ध)सम्बन्धः (प्रबन्ध पञ्चशती)-लेखक-श्री शुभशीलगणि, हिन्दी अनुवादक-गौतमचन्द जैन। **प्रकाशक**-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017, दूरभाष 0141-2520230, Email : prabharati@gmail.com, **प्रथम संस्करण**-2022, **पृष्ठ**-31 + 516, **मूल्य**-950/- रुपये।

जैनागमों में धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत अनेक धर्मकथाएँ संयम, तप, विनय, क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि गुणों को पुष्ट करती हैं। आगमों में निर्युक्ति, भाष्य, चूर्ण आदि व्याख्या-साहित्य में भी कथाओं का प्रयोग किया गया है। इनके अनन्तर भी प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में आचार्यों के द्वारा कथा-साहित्य लिखा जाता रहा। उसी क्रम में विक्रम सम्वत् 1521 में मुनि श्री शुभशीलगणि ने प्रस्तुत ग्रन्थ पञ्चशती प्रबोध सम्बन्ध की रचना की। इस ग्रन्थ के चार अधिकारों में कुल 624 कथानक/दृष्टान्त/घटना प्रसङ्ग उपलब्ध हैं। यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है, किन्तु कहीं-कहीं प्राकृत एवं देशी स्थानीय भाषा का भी प्रयोग किया है।

मित्रप्रवर श्री गौतमचन्दजी जैन ने इस कथाग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करके इसे हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ बना दिया है। अनुवाद सरलभाषा में एवं प्रवाहशील है। कथाभाग में आए प्राकृत एवं संस्कृत पद्यों का मूल पाठ भी रखा गया है।

इस ग्रन्थ में अनेक ऐतिहासिक कथानक हैं। आचार्य जिनप्रभसूरि एवं सुल्तान मोहम्मद तुगलक के चामत्कारिक प्रसङ्ग के अतिरिक्त जगद्गुहाह के द्वारा भीषण अकाल में खोली गई दानशालाओं से लाखों लोगों की प्राणरक्षा, चालुक्यवंशीय राजा सिद्धराज जयसिंह, कुमारपाल, मन्त्री शान्तनु मेहता, उदयन,

सज्जन, आम्बड़, आभड़ आदि के ऐतिहासिक कथानक भी इसमें उपलब्ध हैं। इस तरह से इस कथाग्रन्थ में जैनाचार्यों, सम्राटों, राजा-महाराजाओं, जैन मन्त्रियों और जैन श्रेष्ठी श्रावकों से सम्बन्धित कथानकों का वर्णन मिलता है। जैन मन्दिरों एवं धर्मशालाओं, तीर्थयात्राओं, जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा आदि के भी घटना प्रसङ्ग हैं। दया, करुणा, परोपकार, सेवा, तपस्या, विनम्रता, सत्संगति, कर्मफल, पुनर्जन्म, धर्म के प्रति दृढ़ता आदि मूल्यों के प्रेरक कथानक भी समाहित हैं। जातिप्रथा एवं पशुबलि के विरोध में भी कथाएँ हैं। इसमें अज्ञात तथ्यों को प्रकट करने वाली अनेक कथाएँ हैं। श्रेष्ठिपुत्र और सार्थवाह के व्यापार, गणिकाओं के बुद्धिचातुर्य, शिथिल होने वाले साधुओं, पुनः सन्मार्ग में आरूढ़ होने वाले सन्तों, राजा के विरोध का सामना करने वाले श्रमणों आदि का भी वर्णन हुआ है। प्रचलित लोककथाओं एवं किंवदन्तियों का भी उल्लेख हुआ है।

भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर इस कथाग्रन्थ से प्रकाश पड़ता है। प्राकृत भारती अकादमी के द्वारा इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद से यह कृति सर्वसुलभ हो गई है। पुस्तक की भूमिका माननीय पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा ने लिखी है। पुस्तक की उपयोगिता असंदिग्ध है। अनुवादकर्ता श्री गौतमचन्दजी ने जिला रसद अधिकारी के पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात् यह अकादमिक कार्य करके अपनी योग्यता एवं रुचि का प्रशस्त परिचय दिया है। उन्हें हार्दिक बधाई।

आवश्यकनिर्युक्ति-(आचार्य हरिभद्रसूरि रचित वृत्ति सहित) **भाग 1-12**, सम्प्रेरक, संयोजक एवं प्रमुख सम्पादक-श्री सुमन कुमारजी म.सा. 'प्रज्ञामहर्षि', अनुवादक प्रथम भाग-प्रो. (डॉ.) दामोदर शास्त्री, द्वितीय से द्वादश भाग-श्रीमती प्रेमलता सुराणा, **प्रकाशक**-आचार्यश्री सोहनलाल जैन ग्रन्थ प्रकाशन, श्री महावीर जैन भवन, बाजार बस्तीराम, अम्बाला शहर-134003 (हरियाणा), **अन्य प्राप्ति स्थान**-श्री

महावीर जैन स्वाध्याय पीठ, जैन स्थानक, एस.एस. जैन संघ, 17 बर्किट रोड़, टी नगर, चेन्नई-600017 (तमिलनाडु), **संस्करण**-प्रथम भाग 2010 द्वितीय से द्वादश भाग 2017-2020, **पृष्ठ**-लगभग 3700 (सभी 12 भाग के), **मूल्य**-पठन-पाठन (केवल डाक व्यय)

आवश्यकनिर्युक्ति की रचना आचार्य भद्रबाहु द्वितीय के द्वारा कृत मानी जाती है। आगम-व्याख्या में नय, निक्षेप आदि का आलम्बन लेकर उन्होंने प्राकृत पद्यों में 10 निर्युक्तियों की रचना की थी। उनमें आवश्यकनिर्युक्ति महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। सूत्र एवं अर्थ का सम्यक् निर्णय करने में निर्युक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आवश्यक निर्युक्ति को आधार बनाकर ही जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने प्राकृत में विशेषावश्यकभाष्य की रचना की तथा आचार्य हरिभद्रसूरि ने इस पर संस्कृत में वृत्ति का आलेखन कर इसकी महत्ता प्रतिपादित की। भद्रबाहु द्वितीय महान् ज्योतिर्विद वराहमिहिर के भ्राता थे।

हरिभद्रसूरि (700-770 ईस्वी) द्वारा आवश्यकनिर्युक्ति पर वृत्ति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस वृत्ति का हिन्दी अनुवाद प्रथम बार प्रकाश में आया है। इसके प्रथम भाग में आवश्यक निर्युक्ति की 79 गाथाओं, जो पीठिका के रूप में हैं, पर वृत्ति का हिन्दी अनुवाद विशेषार्थ के साथ प्रकाशित हुआ है। यह अनुवाद प्राकृत एवं संस्कृत के मर्मज्ञ प्रौढ़ विद्वान् प्रो.

दामोदरजी शास्त्री द्वारा किया गया है। प्रथम भाग में पाँच ज्ञानों का विवेचन हुआ है। भाग-2 से 12 तक वृत्ति का हिन्दी अनुवाद विदुषी श्रीमती प्रेमलताजी सुराणा ने किया है। इन भागों में मूल का सर्वग्राह्य सरल अनुवाद किया गया है, जिससे वृत्ति के मर्म को समझने में सहायता मिलती है।

मूलतः बीकानेर निवासी श्रीमती प्रेमलताजी सुराणा सम्प्रति पालीताणा में रहकर प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रन्थों का तत्परतापूर्वक अनुवाद कार्य कर रही हैं। श्वेताम्बर परम्परा में ऐसी विदुषी नारियों का अभाव सा है जो इस प्रकार के विद्वत्तापूर्ण कार्यों में संलग्न हों। लाडनूँ में अवश्य समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने निर्युक्तियों एवं भाष्यों के अनुवाद का उल्लेखनीय कार्य किया है।

आवश्यक निर्युक्ति पर हरिभद्रसूरि की वृत्ति को हिन्दी में समझने की दृष्टि से ये पुस्तकें उपादेय हैं। इसके लिए उत्तर भारतीय प्रवर्तक प्रज्ञामहर्षि मुनि श्री सुमनकुमारजी का संयोजन एवं सम्प्रेरणा निमित्त रही है। अब प्रवर्तक श्री नहीं रहे हैं किन्तु उनका यह कार्य उन्हें यशस्वी बनाए रखेगा। भण्डारी मुनि श्री सुमन्तभद्रजी म.सा. (बाबाजी) ने भी उनका सहयोग किया है।

एस 1, 28, आयुवानसिंह नगर, महाराज्जी फार्म, दुर्गापुर, जयपुर-302018 (राज.)

साधना

डॉ. रमेश 'मयंक'

आँखें-उजाला हो तो देख पायेंगी
मन की बेचैनी के कारण पलकें बन्द रह जायेंगी
हो गया सवेरा बुद्धि जगाएगी।
पाया-चेतना का ज्ञान
तो बन्द दरवाजा-खिड़कियाँ खुल जायेंगी
तभी ताजी हवा आएगी।
ज्ञानी की रोशनी दर्शन-तप-मोक्ष रूप में
भव कल्याण का पथ बताएगी।

आत्म-चिन्तन किया तो दोषों-पापों
कमजोरियों-गलतियों की जानकारी हो जाएगी।
तब साधक को
पूर्ण रूप से निर्मल-निर्दोष
बनने की स्थिति के लिए
अनन्त शक्तियाँ उपलब्ध हो पायेंगी
साधना निवृत्ति प्रधान हो जायेगी।
आत्मशक्ति
सद्गुणों को प्रकाश में लाएगी।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

10 जुलाई 2022

जिनवाणी 68

ISSN 2249-2011

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम सम्वत् 2079, ईस्वी सन् 2022)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा विक्रम सम्वत् 2079 सन् 2022 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है- **सम्पादक**

1. महामन्दिर, जोधपुर (राज.)

श्रद्धेय परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

श्रद्धेय महान् अध्यक्षसायी परमश्रद्धेय भावी आचार्य प्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ठाणा 9

नोट- सेवा कार्य की आवश्यकतानुसार कतिपय सन्तों के लिए पावटा-महामन्दिर में आना-जाना खुला रहेगा।

चातुर्मास-स्थल- श्री ओसवाल समाज भवन (जैन स्कूल), (संभावित) महामन्दिर, जोधपुर-342001(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुभाषजी गुन्देचा-अध्यक्ष, 676-ए, दसवीं 'सी' रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), मोबाइल: 93147-00972
2. श्री नवरतनमलजी गिड़िया-मन्त्री, मो. 94141-00759
3. श्री उम्मेदमल जी लोढा, मो. 98291-16236
4. श्री लोकेश जी कुम्भट, मो. 98280-27770, 80033-41180
5. श्री रौनक जी डाकलिया, मो. 94141-41493

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल जोधपुर मुख्य

रेलवे स्टेशन से 5 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टैण्ड से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

2. मदनगंज-किशनगढ (राज.)

श्रद्धेय मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजीम.सा.

श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-ओसवाल स्थानक, ओसवाली मौहल्ला, सब्जी मण्डी, पो. मदनगंज-किशनगढ-305801, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री कैलाशचन्द जी पीपाड़ा, अध्यक्ष, मो. 91669-06981
2. श्री अरविन्द जी मोदी, मंत्री, बी.एम. मोदी कॉम्प्लेक्स, जयपुर रोड, पो. मदनगंज-किशनगढ-305801, जिला-अजमेर (राज.)
3. श्री प्रमोद जी मोदी, मो. 94140-12077
4. श्री राजेन्द्र जी डांगी, मो. 94140-12286

आवागमन के साधन-मदनगंज-किशनगढ दिल्ली-अहमदाबाद मार्ग पर रेलवे स्टेशन है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 4 किमी. तथा बस स्टैण्ड से 2 किमी. दूरी पर है।

3. प्रतापनगर-जयपुर (राज.)

श्रद्धेय सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा.

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल-श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन, गुलाब विहार के पास, सेक्टर-6, प्रतापनगर, श्योपुर रोड, टॉक रोड, सांगानेर, जयपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोद जी महनोत-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, मो. 98290-52094
2. श्री प्रेमचन्द जी दफ्तरी, अध्यक्ष, मो. 9414689575
3. श्री ऋषभकुमार जी जैन, मन्त्री, 191/92, सेक्टर-19, प्रतापनगर, जयपुर-302033 मो.9982049866
4. श्री सुशील कुमार जी जैन, मो. 9413023374
5. श्री योगेश जी जैन, मो. 9166698899

आवागमन के साधन-प्रतापनगर स्थानक जयपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 16 कि.मी., दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 7 कि.मी., गांधीनगर रेलवे स्टेशन से 9 कि.मी., सिंधी केम्प बस स्टेण्ड से 17 किमी. तथा सांगानेर एयरपोर्ट से 1.5 कि.मी.की दूरी पर स्थित है।

4. मेड़ता सिटी, जिला-नागौर (राज.)

- ❧ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेयश्री प्रमोदमुनिजी म.सा.
- ❧ नवदीक्षित श्रद्धेय श्री सुनीलमुनि जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षित श्रद्धेय श्री आनन्दमुनि जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनयमुनि जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षित श्रद्धेय श्री कर्त्तव्यमुनि जी म.सा.

ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- वीर भवन, पुराने सरकारी अस्पताल के पास, मीरा मंदिर, पो. मेड़तासिटी-341510, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री जबरचन्द जी चोरडिया, अध्यक्ष
2. श्री हस्तीमलजी डोसी, डोसी ब्रदर्स, डी-3, कृषि मण्डी, पो. मेड़तासिटी-341510, जिला-नागौर (राज.), मो. 94133-68997, 82900-97353
3. श्री विमलकुमारजी बागमार, मो. 94137-59647
4. श्री गजेन्द्र जी दुधेड़िया, मो. 94135-80031

आवागमन के साधन-मेड़ता सिटी के लिए समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड जंक्शन है। जहां जोधपुर, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, जयपुर की रेलों का ठहराव है। मेड़ता रोड से मेड़ता सिटी के लिए रेलबस प्रायः उपलब्ध रहती है। बस व रेलवे स्टेशन से स्थानक 1किमी दूर है।

5. पावटा-जोधपुर (राज.)

- ❧ व्याख्यानी श्रद्धेयश्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
 - ❧ श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.
 - ❧ श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.
 - ❧ श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ठाणा 4
- नोट- सेवा कार्य की आवश्यकतानुसार कतिपय संतों के लिए पावटा-महामंदिर में आना-जाना खुला रहेगा।

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 फोन 0291-2550146, अतिथि भवन- फोन 0291-2550147

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. 1 के (1) व (2) के अनुसार।
3. श्री महेन्द्र जी सुराणा, मो. 74148-37760
4. श्री ओपेक जी गोलिया, मो. 93523-52919

आवागमन के साधन-पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 4 किमी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से आधा किमी. दूरी पर स्थित है।

6. राधा निकुंज, जयपुर (राज.)

- ❧ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.
- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा.
- ❧ महासती श्री मंजुलताजी म.सा.
- ❧ महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा.
- ❧ महासती श्री मैत्रीप्रभा जी म.सा.
- ❧ महासती श्री प्रियदर्शना जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षिता महासती श्री दक्षिता जी म.सा.

ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, आचार्य हीरा मार्ग, प्लॉट नं. 115, कृष्णा सागर, गुलाबगढ़ के पास, राधा-निकुंज क्षेत्र, मुहाना मण्डी रोड, जयपुर-302029 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदजी महनोत-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, मो. 98290-52094
2. श्री गौतमकुमार जी जैन, मो. 94609-89644
3. श्री प्रजनलाल जी जैन, मो. 80944-83321
4. श्री रवि कुमार जी जैन, मो. 99291-12624
5. श्री नेमीश्वर जी जैन, मो. 98870-32938

आवागमन के साधन-चातुर्मास स्थल जयपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 10 किमी., दुर्गापुरा स्टेशन से 6.5 किमी., बस स्टैण्ड (सिन्धी कैम्प) से लगभग 12 किमी. पर स्थित है। नज़दीक रेलवे स्टेशन दुर्गापुरा एवं गाँधीनगर है।

7. पुष्कर रोड़, अजमेर(राज.)

❧ विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.

❧ महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रभावतीजी म.सा.

❧ महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, अरिहन्त कॉलोनी के बाहर, महावीर कॉलोनी के पास, पुष्कर रोड़, अजमेर-305001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विवेकजी महनोत, फोन नं. 0145-2420571 मो. 98291-54156
2. श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, 53, नवग्रह कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर-305002 (राज.), फोन नं. 0145-2621819, 94142-81050
3. श्री राजेन्द्र जी रांका, मो. 94140-04142
4. श्री हेमन्त जी नाहर, मो. 94142-58920

आवागमन के साधन-पुष्कर रोड़ स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से तथा बस स्टैण्ड से 2.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

8. नई शम्भूगढ, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजीम.सा.

❧ महासती श्री कौशलयावतीजी म.सा.

❧ महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक गणेश चौक, जैन मौहल्ला, पो. नई शम्भूगढ-311204, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भंवरलाल जी डूंगरवाल, अध्यक्ष, मो. 97842-89848
2. श्री माणकचन्द जी डूंगरवाल, मंत्री, जैन मौहल्ला, पो. नई शम्भूगढ-311204, जिला-भीलवाड़ा (राज.), मो. 99823-55837
3. श्री विनोद कुमार जी सिंघवी, मो.99820-37728
4. श्री उत्तमचन्द जी डूंगरवाल, मो. 99826-37339

आवागमन के साधन- नई शम्भूगढ ग्राम के लिए भीलवाड़ा से दोपहर 2 बजे तथा सायं 6 बजे बस उपलब्ध है। ब्यावर से 45 किमी तथा विजयनगर से 30 किमी की दूरी पर है।

9. शक्तिनगर-जोधपुर (राज.)

❧ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.

❧ महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री शारदाजी म.सा.

❧ महासती श्री लीलाकँवरजी म.सा.

❧ महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर छट्टी गली, पावटा 'सी' रोड़, जोधपुर-342006 (राज.), मो. 98281-66067

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. 1 के (1) व (2) के अनुसार।
2. श्री अमरचन्द जी चौधरी, मो. 94141-30024
3. श्री अशोक जी मेहता, मो. 94144-75904

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 5 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टैण्ड से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

10. नागौर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा.

❧ महासती श्री विमलावतीजी म.सा.

✚ महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री रिद्धिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- सामायिक स्वाध्याय भवन, बोड़ा की पोल, गणेश चौक, नागौर-341001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मनोजजी कांकरिया, अध्यक्ष, 94609-54401
2. श्री निर्मलचन्द्रजी सुराणा, मंत्री, सांवा गली, नागौर-341001 (राज.), मो. 93517-39183
3. श्री अजीत जी भंडारी, मो. 94602-23162
4. श्री कमलचन्द्र जी सुराणा, मो. 94141-18624

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल बस स्टेण्ड एवं रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी की दूरी पर है।

11. सरवाड़, जिला-अजमेर (राज.)

✚ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री रक्षिताजी म.सा.

✚ महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान् जैन स्थानक, पो. सरवाड़-305403, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री गुमानचन्द्र जी कक्कड़-अध्यक्ष, मो. 96102-69621
2. श्री वीरेन्द्रकुमार जी कक्कड़-मन्त्री, महावीर भवन के पास, पो.सरवाड़-305403, जिला-अजमेर (राज.), मो. 94606-15980, ईमेल-vkjain1861@gmail.com
3. श्री विमलचन्द्र जी कक्कड़, मो. 92144-54861, 63752-47626
4. श्री सुरेन्द्र कुमार जी कक्कड़, मो. 94145-55699

आवागमन के साधन- सरवाड़ ग्राम का नजदीकी रेलवे स्टेशन नसीराबाद तथा अजमेर है। अजमेर से सरवाड़ 65किमी तथा नसीराबाद से 45 किमी है। अजमेर, कोटा, जयपुर, ब्यावर आदि स्थानों से सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

12. महामन्दिर- जोधपुर (राज.)

✚ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.

✚ महासती श्री शशिकलाजी म.सा.

✚ महासती श्री कांताजी म.सा.

✚ नवदीक्षिता महासती श्री सुप्रियाश्रीजी म.सा.

ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, बाबू लक्ष्मणसिंह पार्क के पास, पहली पोल, महामन्दिर जोधपुर-342001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. 1 के (1) व (2) के अनुसार।
2. श्री उम्मेदराज जी लोढा, मो. 98291-16236
3. श्री अंकित जी लोढा, मो. 93527-75694

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 5 एवं बस स्टेण्ड से लगभग 2 किमी. की दूरी पर स्थित है।

13. रायचूर (कर्नाटक)

✚ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.

✚ महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री तितिक्षाश्री जी म.सा.

✚ महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल-Shri Vardhman Sthanakwasi Jain Shrawak Sangh, Jain Sthanak, Mahaveer Chowk, Raichur-584101 (K.T.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Parasmal Ji Sukhani, President, Bikaner House, Gandhi House, Raichur-584101 (K.T.) Mob. 94481-94289
2. Sh. Sanjay Ji Sancheti, Mob. 94480-22511
3. Sh. Dinesh Ji Daftari, Mob. 92432-34578
4. Sh. Sunil Ji Bhandari, Mob. 94484-19575

आवागमन के साधन-रायचूर देश के लगभग सभी राज्यों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 2.5 किमी तथा बस स्टेण्ड से 1 किमी. दूरी पर स्थित है।

14. हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
 ✚ महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा.
 ✚ महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा.
 ✚ महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.
 ✚ महासती श्री प्रणतिश्रीजी म.सा.
 ✚ नवदीक्षिता महासती श्री मान्याप्रभाजी म.सा.
 ✚ नवदीक्षिता महासती श्री प्रार्थीप्रभाजी म.सा.

ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, 16/557, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, लवकुश संस्थान के पास, जोधपुर-342010 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. 1 के (1) व (2) के अनुसार।
3. श्री संदीपजी मेहता, मो. 93147-10218
4. श्री महेन्द्र जी सेठिया, मो. 92145-94476

आवागमन के साधन- हा. बोर्ड स्थानक जोधपुर रेलवे स्टेशन से 7 किमी. तथा राईकाबाग बस स्टेण्ड से 8 किमी दूरी पर स्थित है।

15. बाइमेर (राज.)

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
 ✚ महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री सुब्रतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, पुरानी गुमा टान्सपोर्ट के पास, माल गोदाम रोड, स्टेशन रोड, बाइमेर-344001

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री ताराचन्द्रजी चौपड़ा-अध्यक्ष, 94141-06125
2. श्री मूलचन्द जी घोषड़-मंत्री, मैसर्स रेमण्ड हाउस, हॉटल कैलाश सरोवर के नीचे, स्टेशन रोड, बाइमेर-344001 (राज.), मो. 94602-78351
3. श्री जितेन्द्र जी बांठिया, मो. 99297-60675,

94603-89689

4. श्री अनुराग जी गांग, मो.98299-91333

आवागमन के साधन- जोधपुर से बाइमेर के लिए रेल तथा रोडवेज एवं प्राइवेट बस सेवा उपलब्ध है। जोधपुर से बाइमेर 200 किमी तथा बालोतरा से 100 किमी दूर है।

16. वर्धमान नगर-नागपुर (महा.)

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
 ✚ महासती श्री भावनाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.
 ✚ महासती श्री गरिमाश्री जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वर्धमान भवन, 46, वर्धमान नगर, श्रेयांस स्कूल के सामने, नागपुर-440008 (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री दिनेश जी बेताला, अध्यक्ष, मो. 93731-03303
2. श्री नरेश जी भरूट, मंत्री, मो. 98817-40926
3. श्री मनोज जी बोहरा, 134-हैण्डलूम मार्केट, गांधी बाग, नागपुर-440008 (महा.), मो. 94230-63477
4. श्री अजित जी बाफना, मो. 94221-46750

आवागमन के साधन- नागपुर में चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन तथा बस स्टेण्ड से 5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

17. कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

- ✚ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.

✚ महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री दीपिकाश्री जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल-Sri S.C.S. Jain Sangh, 765, Oppanakara Street, Coimbatore-641001 (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Rajesh Ji Bohra, Mob. 94437-56422

2. Sh. Sunil Kuamr Ji Hinger, 72- Jamedar Street, V.H. Road, Coimbatore-641001 (T.N.), Phone-0422-4372419, 98430-71619

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी एवं बस स्टैण्ड से 4 किमी. की दूरी पर स्थित है।

18. सोजत रोड, जिला-पाली (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री कोमलश्री जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, बगड़ी रोड, तिलक मार्ग, पो. सोजत रोड-306103, जिला-पाली (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री केवलचन्द जी खिंवरसरा-अध्यक्ष, मो. 95497-60114
2. श्री कुशलचन्द जी जैन-मंत्री, मैसर्स-बादरमल नथमल, मैन बाजार, पो. सोजत रोड-306103 जिला-पाली (राज.), मो. 94138-77444
3. श्री संतोषकुमार जी पोकरणा, मो. 96360-86040
4. श्री राजेशकुमार जी गुन्देचा, मो. 98292-17672

आवागमन के साधन- सोजत रोड दिल्ली-अहमदाबाद रेल मार्ग पर स्थित है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से आधा किमी तथा बस स्टैण्ड से पाव किमी. की दूरी पर है।

19. गंगावती (कर्नाटक)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री देवांगनाजी म.सा.

❧ महासती श्री अंजनाजी म.सा.

❧ महासती श्री सुभद्राजी म.सा.

❧ महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- सालेचा स्वाध्याय भवन, गौड़ी महादेवप्पा कॉलोनी, प्यारामौट प्रिन्टर्स के पीछे, पो. गंगावती-583227, जिला-कोप्पल (कर्नाटक)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री गणपतराज जी श्रीश्रीमाल, अध्यक्ष, मो. 94483-

02801

2. श्री कांतिलाल जी लुणिया, मंत्री, गृहवैभव, शिवे टॉकिज के पास, पो. गंगावती-583227, जिला-कोप्पल (कर्नाटक), मो. 93424-31951

3. श्री भंवरलाल जी गोगड़, मो. 94807-27769

4. श्री कैलाशचन्द जी कोठारी, मो. 94490-81373

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 3 किमी एवं बस स्टैण्ड से 2 किमी की दूरी पर स्थित है। कोप्पल से 50 किमी, गदग से 100 किमी तथा हुबली से 165 किमी की दूरी है।

20. हिण्डौन सिटी (राज.)

❧ सेवाभावी महासती श्री विमलेश प्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री निमिषाजी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री रम्यप्रभाजी म.सा.

ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नई मण्डी के पीछे, जैन कॉलोनी, पो. हिण्डौन सिटी-322230, जिला-करौली (राज.),

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मचन्द जी जैन, अध्यक्ष, मो.94606-28715, 70145-57626
2. श्री प्रवीणकुमार जी जैन, मंत्री, नई मण्डी के पीछे, जैन कॉलोनी, पो. हिण्डौन सिटी-322230, जिला-करौली (राज.), मो. 94604-41798
3. श्री राहुल कुमार जी जैन, मो. 94143-64958, 82786-32717
4. श्री संजय कुमार जी जैन, मो. 94146-24096

आवागमन के साधन- हिण्डौन सिटी दिल्ली-मुम्बई मार्ग पर रेलवे स्टेशन है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से एवं बस स्टैण्ड से 1 किमी. की दूरी पर स्थित है।

21. खोह, जिला-अलवर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.

❧ महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

❧ महासती श्री निरंजनाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, पो. खोह-321203, वाया रोणिजाथान, जिला-अलवर (राज.),

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुशील कुमार जी जैन, अध्यक्ष, मो.98283-32330
2. श्री गौरवकुमार जी जैन, पो. खोह-321203, वाया रोणिजाथान जिला-अलवर (राज.), मो. 98288-11889
3. श्री प्रसून कुमार जी जैन, मो. 97838-96601
4. श्री नवीन कुमार जी जैन, मो. 99839-53655

आवागमन के साधन- खोह ग्राम हेतु नजदीकी रेलवे स्टेशन खेरली तथा मण्डावर है। लक्ष्मणगढ से प्राइवेट बस चलती है। खोह लक्ष्मणगढ से 12 किमी. तथा अलवर से 45 किमी दूरी पर स्थित है।

22. ऊटी (तमिलनाडू)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

❧ महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री रचनाश्रीजी म.सा.

ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- Sri S.S. Jain Sangh, Jain Sthanak Bhawan, Lower Bazaar, Ooty-643001, Dist. Nilgiri (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Heeralal Ji Bothra, President, 266-Main Bazaar, Ooty-643001, Dist. Nilgiri (T.N.), Phone : 0423-2443061, 94867-73322, heeralalooty@gmail.com
2. Sh. Jaichand Ji Kotadia, Secretary, Phone : 0423-2446897, Mo. 93601-01661
3. Sh. V. Navratanmal Kothari, Mob. 88381-

96131,94438-97728

4. Sh. G. Suresh Ji Bothra, Mob. 94420-83826

आवागमन के साधन-ऊटी तमिलनाडू का प्रसिद्ध शहर है तथा देश के सभी राज्यों से जुड़ा हुआ है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन तथा बस स्टेण्ड से आधा किमी पर स्थित है।

23. कुन्नूर (तमिलनाडू)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- Sri S.S. Jain Society, Near Mountain Home School, Sait Line, Tent Hill, Balaclava, Post- Coonoor -643102, Dist. Nilgiri (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Gowthamchand Ji Pipada, President, Mob.94434-75615
2. Sh. Ranjith Ji Chordia, Secretary, 86-Balacava, Coonoor-643102, Dist. Nilgiri (T.N.) Mo. 93601-01860, Email : ranjit_ranjit6@yahoo.com
3. Sh. M. Mahesh Ji Jhabakh, Mob. 98940-70740

आवागमन के साधन-कुन्नूर तमिलनाडू में नीलगिरी जिलान्तर्गत शहर है। नजदीकी रेलवे स्टेशन मेट्टूरपालयम् तथा कोयम्बटूर है जो 35 तथा 70 किमी दूरी पर स्थित है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन तथा बस स्टेण्ड से 1 किमी पर स्थित है।

24. बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.

❧ महासती श्री विदेहाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री विरक्ताश्री जी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री वनिताप्रभाजी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री निकिताप्रभाजी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री अदितिप्रभाजी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री श्रुतिप्रभाजी (छोटे)
म.सा. टाणा 8

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, 45-इन्द्रा
कॉलोनी, टॉक रोड, बजरिया, सवाईमाधोपुर-302001

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मुकेश कुमार जी जैन 'पान वाले', मो. 94142-04721
2. श्री पदमचन्द जी जैन 'गोटेवाला' मैसर्स आर.पी. ज्वैलर्स, 42-टॉक रोड, बजरिया, सवाईमाधोपुर-302001 (राज.), मो. 94140-30572
3. श्री गणपतलाल जी जैन, मो. 94148-39258
4. श्री बाबूलाल जी जैन, मो. 94603-17013

आवागमन के साधन- बजरिया-सवाईमाधोपुर रेलवे स्टेशन दिल्ली-मुम्बई मार्ग पर स्थित है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैण्ड से 400 मीटर की दूरी पर स्थित है।

25. शेन्दूर्णी (महा.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा.

❧ महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.

❧ महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. टाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन श्वे. स्थानक, मारवाड़ी गल्ली, पो. शेन्दूर्णी-424204, ता. जामनेर, जिला-जलगांव (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री शांतिलाल चम्पालाल जी ओस्तवाल, मो. 94201-08951
2. श्री सागरमल मिश्रीलाल जी वैदमुथा, रेडिमेड दुकान, बाजार पेठ, पो. शेन्दूर्णी-324204, ता. जामनेर, जिला-जलगांव (महा.), मो. 94216-12856
3. श्री शिवलाल शांतिलाल जी रांका, मो. 73852-46589
4. श्री संदीप ब्रिजलाल जी ललवाणी, मो. 94218-37937

आवागमन के साधन- जलगांव जिलान्तर्गत शेन्दूर्णी ग्राम जामनेर तालुका में स्थित है। नजदीकी रेलवे स्टेशन पाचोरा

तथा जलगांव है। जलगांव, पाचोरा, भुसावल से वाया पहर सीधी बस उपलब्ध है।

26. चौथ का बरवाड़ा (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री भविताश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा.

❧ नवदीक्षिता महासती श्री समीक्षाप्रभाजी म.सा.

टाणा 4

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक भवन, सब्जी मण्डी की गली, पो. चौथ का बरवाड़ा-322702, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री रतनलाल जी जैन 'कामदार'-अध्यक्ष, मो. 97028-06231
2. श्री महेन्द्रकुमार जी जैन-मंत्री, रेलवे स्टेशन के पास, पो. चौथ का बरवाड़ा-322702, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)
3. श्री भैरूलाल जी जैन, मो. 94612-37952
4. श्री नीरजकुमार जी जैन, मो. 89520-45829

आवागमन के साधन- चौथ का बरवाड़ा जयपुर-सवाईमाधोपुर रेलवे मार्ग पर स्थित है। जयपुर से 110 किमी तथा सवाईमाधोपुर से 25 किमी दूर है। सवाईमाधोपुर से हर आधे घंटे में बस व कार सेवा उपलब्ध है।

27. मेड़ता सिटी, जिला-नागौर (राज.)

❧ व्याख्यात्री महासती श्री लक्षितप्रभा जी म.सा.

❧ महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा.

❧ महासती श्री कल्पयशाजी म.सा.

❧ महासती श्री स्तुतिश्रीजी म.सा. टाणा 4

चातुर्मास-स्थल- स्वाध्याय भवन, दाणियों का मौहल्ला, श्रीमालों की गली, पो. मेड़ता सिटी-341510, जिला-नागौर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र- क्र.सं. 4 के अनुसार

आवागमन के साधन- क्र.सं. 4 के अनुसार

10 जुलाई 2022

जिनवाणी 76

ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सूर्यनगरी जोधपुर में पदार्पण से जोधपुरवासियों में उत्साह-उमङ्ग

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्ति नगर, छठी गली एवं व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 समीपवर्ती श्री बरलोटाजी के मकान में सुखे-समाधौ जोधपुर में विराजित हैं।

परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त मुनिमण्डल सहित 20 मई, 2022 को शक्तिनगर-जोधपुर पधार गए थे। तब से प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी में धर्मरुचिपूर्वक भरपूर उपस्थिति एवं सहभागिता से धर्मोल्लासयुक्त पर्युषण जैसा वातावरण बना हुआ है। तप-त्याग, धर्म-ध्यान, ज्ञानार्जन आदि के विभिन्न आयाम गतिशील हैं।

महान् अध्यवसायी भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. दोपहर 2.00 से 3.00 बजे तक श्रमणसूत्र पर वाचनी फरमाते हैं। प्रार्थना श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. एवं प्रवचन सन्त-भगवन्त यथासमय एवं यथा प्रसङ्ग फरमाते हैं।

चातुर्मास घोषणा-पूर्व घोषित सवाईमाधोपुर नगरपालिका क्षेत्र के चातुर्मास में व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का स्थान निर्धारण करते हुए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, शाखा-बजरिया को स्वीकृति प्रदान की गई एवं बाड़मेर चातुर्मास हेतु सिंघाड़ा प्रमुख का परिवर्तन कर व्याख्यात्री महासती विनीतप्रभाजी म.सा. के स्थान पर व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. को सिंघाड़ा प्रमुख बनाया गया। तदनन्तर साधु मर्यादा के समस्त आगारों सहित 3 जून, 2022 को आचार्य भगवन्त ने निम्नाङ्कित चातुर्मासों की स्वीकृति फरमाई-

- (1) जिनशासन गौरव आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा - महामन्दिर-जोधपुर (पैदल चलकर जाने की स्थिति में प्राथमिकता रहेगी)
- (2) सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा - प्रताप नगर-जयपुर (राज.)
- (3) विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा - पुष्कर रोड़-अजमेर (सकारण)
- (4) विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा - जोधपुर (स्थान घोषणा बाद में)
- (5) व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा - जोधपुर (स्थान घोषणा बाद में)
- (6) व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा - कुन्नूर (तमिलनाडु)

26 मई को श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा जोधपुर से विहार कर भोपालगढ़ पधारे एवं लौटकर 8 जून, 2022 को पुनः गुरुचरणों में पधारकर 9 जून को श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. की सेवार्थ बासनी, जोधपुर पधार गये तथा व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 पावटा, लक्ष्मीनगर फरसकर शक्तिनगर छठी गली में विराजित हैं। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. पावटा, घोड़ों का चौक, सरदारपुरा, न्यू पावर हाउस रोड़ होते हुए, इन्द्रा कॉलोनी आदि जोधपुर के उपनगर फरस रहे हैं। व्याख्यात्री

महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा-3 ने 1 जून को जोधपुर से बाड़मेर की ओर एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 ने 5 जून को जोधपुर के उपनगरों को फरसते हुए सोजत रोड़ की ओर विहार किया।

ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी, 13 जून को क्रियोद्धारक आचार्य पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. का 177वाँ स्मृति दिवस एवं आषाढ़ कृष्णा द्वितीया, 16 जून को 226वाँ क्रियोद्धारक दिवस तप-त्याग एवं धर्म-ध्यान पूर्वक मनाये गये तथा क्रियोद्धारक आचार्य पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के गुण स्मरण कर, उनके बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा की गई।

रविवार 19 जून को श्रमण संघीय उपाध्याय श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा-2 पधारे, दर्शन-वन्दन कर पूज्य आचार्य भगवन्त के सान्निध्य का लाभ लिया एवं श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषि म.सा. ने आशीर्वचन फरमाने का निवेदन किया, जिस पर परमाराध्य आचार्य भगवन्त ने फरमाया-“आचार-विचार की निर्मलता ही साधक के साथ जाती है, बाकी सब यहीं रह जाता है। निर्मलता के साथ आगे बढ़ते रहें।”

पूर्व में 9 मई को विहार में बुचकला के रास्ते में श्रमण संघीय उपाध्यायप्रवर श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी 'शास्त्री' आदि ठाणा-2 से सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ एवं परस्पर सुखसाता की पृच्छा की गई।

शक्तिनगर-जोधपुर पदार्पण उपरान्त से श्रावक-श्राविकाओं में तप-त्याग, धर्म-ध्यान, ज्ञानार्जन, जिनवाणी श्रवण के साथ-साथ तपाराधन क्रम में अनेकों एकान्तर तप, उपवास, आयम्बिल आदि विविध तपाराधनाएँ लड़ीवत् चल रही हैं। श्राविकाओं, युवतियों में ज्ञानार्जन एवं धर्म रुचि का नियमित क्रम गतिशील है। सुश्री सुनीताजी सुपुत्री श्री स्वरूपचन्द्रजी हुण्डीवाल ने आयम्बिल का अठाई तप किया।

दर्शनार्थ श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन निरन्तर चल रहा है। जून में जयपुर, तिरपुर, सूरत, पाली, दिल्ली, बरगमाँ, वैल्लूर, नागौर, पीपाड़, गोटन, इन्दौर, मेड़तासिटी, मुम्बई, विजयनगर, खोह, नागपुर, ब्यावर आदि स्थानों से श्रद्धालुओं का आवागमन अनवरत बना रहा।

विशेष-हृदय रोग विशेषज्ञ सर्जन डॉ. धीरेन एस. शाह अपने सहयोगियों के साथ अहमदाबाद से जोधपुर पधारे तो सीधे आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यश्री आदि चारित्रात्माओं के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की। भावी आचार्यश्री ने फरमाया-“सन्त-सेवा कर्म निर्जरा का कार्य है।” विनयवन्त हो झुककर डॉ. साहब बोले-संघ ने मुझे यह अवसर प्रदान किया, यह मेरा सौभाग्य है।

14 जून, 2022 को श्राविका मण्डल, जोधपुर की 90 श्राविकाओं ने पूज्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्य भगवन्त एवं सभी चारित्रात्माओं के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण किया। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने श्राविकाओं को संघ-समूह का महत्त्व बताया एवं छोटे-छोटे त्याग-प्रत्याख्यान, नियम के द्वारा आत्मोत्थान की प्रेरणा की। श्राविकाओं ने छोटे-छोटे 36 नियम ग्रहण किये।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के तत्त्वावधान में 19 जून को कार्यशाला का आयोजन हुआ। जोधपुर संघाध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा की टीम, युवक परिषद्, श्राविका संघ के साथ सतत सक्रिय हैं एवं सन्त-सतियों की सेवा सम्भाल में रत हैं।

-गिराज जैन

किशनगढ़ (अजमेर)-जिनशासन गौरव व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 जयपुर से दूढ़, किशनगढ़ शहर, मदनगंज होते हुए अजमेर पधारे। अजमेर के

उपनगरों में वे जहाँ भी विराजे, वहाँ चातुर्मास जैसी रौनक रही। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी आदि में श्रावक-श्राविकाओं का अपार उत्साह दिखाई दिया। आबालवृद्ध ने धार्मिक क्रियाओं में पूर्ण तन्मयता से भाग लिया। पुष्कर रोड़ स्थित आराधना भवन में महिलाओं के पञ्चदिवसीय धार्मिक शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें सभी महिलाओं ने श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में कई प्रेरणादायी उद्बोधनों के माध्यम से ज्ञानार्जन किया। अभी मुनिश्री अजमेर से विहारकर किशनगढ़ शहर में विराज रहे हैं, जहाँ धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है।

-प्रमोद कुमार मोदी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का पदाधिकारी प्रशिक्षण शिविर जयपुर में सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का पदाधिकारी प्रशिक्षण शिविर 25-26 जून, 2022 को अणुविभा केन्द्र, जयपुर में आयोजित हुआ। संघ में प्रथम बार आयोजित इस प्रकार के शिविर में रत्नसंघ के संरक्षक मण्डल, शासन सेवा समिति के सदस्यों सहित संघ एवं उसकी सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा विभिन्न ग्राम-नगरों में सञ्चालित रत्नसंघ की शाखाओं के प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त हुआ। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने दोनों दिवस प्रातःकालीन सामूहिक सामायिक के समय 'रत्नसंघ की सामाचार्य एवं अन्य परम्पराओं से सम्बन्ध' विषय पर उद्बोधन दिया। संघ सदस्यों को इस प्रकार की सामूहिक जानकारी पहली बार प्राप्त हुई। यह जानकारी होने से साध्वाचार के पालन में श्रावक सदस्य अधिक सहायक बन सकते हैं। प्रशिक्षण शिविर का कार्यक्रम प्रातः 10.00 बजे प्रारम्भ हुआ। जिसमें श्राविका मण्डल के द्वारा कृत मंगलाचरण के पश्चात् श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत ने समस्त अतिथियों एवं सदस्यों का स्वागत किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया ने प्रशिक्षण शिविर के उद्देश्यों के साथ संघनिष्ठा, समर्पण आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए समस्त आगन्तुकों का अभिनन्दन किया। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, संघ संरक्षक श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत, संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना आदि ने भी संघनिष्ठा, समर्पण, सहयोग, सक्रियता, भाईचारा, कार्यकुशलता एवं गौरव अभिवृद्धि पर प्रेरक उद्बोधन दिया। श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने रत्नसंघ का इतिहास प्रस्तुत करते हुए पूर्व आचार्यों का परिचय दिया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने संघ एवं सहयोगी संस्थाओं की कार्य प्रणाली पर प्रकाश डालते हुए विधान एवं नियमावली के अध्ययन हेतु प्रेरणा की। आपने छात्रवृत्ति योजना एवं प्रोफेशनल फार्म की कार्य प्रणाली से भी सबको अवगत करवाया तथा सहयोगी संस्थाओं के पारस्परिक समन्वय एवं जुड़ाव पर बल दिया। संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता ने शाखाओं, सम्पर्कसूत्रों, क्षेत्रीय प्रधानों, संघसेवा सोपान और विभिन्न समितियों के सम्बन्ध में प्रेरक जानकारी प्रदान की। संघ के संयुक्त महामन्त्री श्री प्रकाशजी सालेचा ने विहार, चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, दीक्षा, वीर परिवार, स्वधर्मी वात्सल्य आदि की जानकारी दी तथा कषाय रहित रहकर संघ की सेवा करने की प्रेरणा की। संघ के उपाध्यक्ष श्री कुशलजी गोटेवाला ने चातुर्मास नियमावली पर विस्तृत प्रकाश डाला। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने सामायिक-स्वाध्याय, निर्व्यसनता, रात्रि-भोजन त्याग, नैतिक-धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण, धोवन पानी, गोचरी सेवा, विहार सेवा,

व्रत धारण आदि विषयों पर प्रकाश डाला तथा पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का श्रावक, कार्यकर्ता एवं पदाधिकारियों के सम्बन्ध में चिन्तन प्रस्तुत किया। संघ महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया ने प्रधान कार्यालय से सम्बन्धित विषयों पर जानकारी प्रदान की। सूचना प्रौद्योगिकी समिति के संयोजक श्री विकासजी गुन्देचा ने रत्नसंघ की एप्प के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण एवं रोचक जानकारी से सबको अवगत कराया तथा इस एप्प के सभी फीचर का लाभ लेने की प्रेरणा की।

दोनों दिवस विचार व्यक्त करने के लिए खुला मञ्च का आयोजन हुआ, जिसमें सभी को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। विभिन्न वक्तव्यों के मध्य में भी वाञ्छित जानकारी एवं सही समझ की दृष्टि से प्रश्नोत्तर भी हुए। अन्त में संघ महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया के द्वारा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, मन्त्री श्री संजीवजी कोठारी सहित समस्त कार्यकर्ताओं को सुन्दर व्यवस्था एवं तत्परता हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया। जयपुर संघ के मन्त्री श्री संजीवजी कोठारी ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा प्रदान किये गये इस अवसर हेतु आभार ज्ञापित किया तथा इस व्यवस्था में सहयोग हेतु स्थानीय संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया। -*धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जोधपुर में सम्पन्न विविध धार्मिक आयोजन

सन्त-सती वृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार में जोधपुर संघाध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा, राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, चिकित्सा समिति उपाध्यक्ष श्री मनमोहनजी कर्णावट की प्रशंसनीय सेवाएँ रहीं। सेवा-आदर्श के इतिहास में एक उत्कृष्ट अध्याय जुड़ा है, जिसमें मेडीपल्स हॉस्पिटल के मालिक एवं प्रबन्धक श्री शशिकान्तजी सिंघवी अहमदाबाद से पधारे, डॉ. धीरेन एस. शाह एवं उनकी टीम, डॉ. राजीवजी गहलोत, जोधपुर एवं उनकी टीम ने सन्त-सतीवृन्द की चिकित्सा सेवा में अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय सेवाएँ प्रदान की।

सन्त-सती सेवा एवं स्वधर्मी वात्सल्य आदि की सतत सेवायें करने वाले सुश्रावक श्री अनिलजी टाटिया, सुश्रावक श्रीमान् जितेन्द्रजी टाटिया की सेवाएँ भी अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रही। उनके सेवाओं को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के तत्त्वावधान में 26वाँ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर 30 मई से 12 जून तक आयोजित किया गया, जिसमें 850 बच्चों को 60 शिक्षक/शिक्षिकाओं के द्वारा अध्ययन-अध्यापन करवाया गया। शिविर महावीर पब्लिक स्कूल, अजीत कॉलोनी में एवं समापन समारोह हनवंत गार्डन, पावटा बी रोड़ में आयोजित हुआ। शिविर के दौरान रविवार 30 मई, 5 जून, 12 जून को क्रमशः श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा, श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा, श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने जीवन उपयोगी धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों को आचरण में लाने की प्रभावशाली प्रेरणा की।

शिविर समापन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् प्रकाशजी टाटिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री धनपतजी सेठिया, मुख्य अतिथि के रूप में श्री बुधमलजी चौपड़ा (पुरस्कार प्रायोजक) पधारे। श्री सुभाषजी गुन्देचा, श्री नवरतनजी गिड़िया, श्री जिनेन्द्रजी ओस्तवाल, श्रीमती सुमनजी सिंघवी, श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, श्रीमती श्वेताजी कर्णावट, श्री प्रकाशजी सालेचा, श्री अमरचन्द्रजी चौधरी सहित वर्तमान एवं पूर्व राष्ट्रीय तथा स्थानीय पदाधिकारियों सहित शिविरार्थियों के अभिभावकगण की सहभागिता एवं उपस्थिति रही।

आयोजक- युवक परिषद्, जोधपुर के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा एवं संघ कार्यालय प्रभारी युवा साथी श्री कमलेशजी मेहता द्वारा कथामय, काव्यमय कार्यक्रमों के माध्यम से भगवान महावीर के जीवन चरित्र एवं संस्कार

प्रदान करने वाली सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों द्वारा प्रशिक्षक श्री चक्रेशजी मेहता के निर्देशन में सुन्दर मञ्चन हुआ एवं शिविरार्थियों द्वारा दी गई परीक्षाओं के परिणाम घोषित कर यथा योग्यता वरीयता पुरस्कार सभी को प्रदान किये गये। सुश्री नेहलजी लोढ़ा, सुश्री भवीजी कुम्भट ने कार्यक्रम का सुन्दर सञ्चालन किया।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल शाखा जोधपुर द्वारा 16 जून से 22 जून तक नेहरू पार्क में शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 115 श्राविकाओं ने भाग लिया एवं शिविर में प्रथम से लेकर ग्यारहवीं तक की आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षाओं के पाठ्यक्रम का अध्यापन करवाया गया तथा जीवन को संस्कारित करने हेतु प्रेरक कक्षाएँ लगाई गईं। 22 जून को समापन कार्यक्रम अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी द्वारा मंगलाचरण के पश्चात् विभिन्न गीत, भजन एवं धार्मिक उत्साह अभिवर्द्धक प्रस्तुतियों के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के तत्त्वावधान में 19 जून, 2022 को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न केन्द्रों से पधारे हुए लगभग 150 केन्द्राधीक्षकों, निरीक्षकों एवं परीक्षकों ने भाग लिया। शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में गुणात्मक सुधार के लिए चिन्तन के साथ अनेक सुझाव प्राप्त किये गये। कार्यशाला में पधारे सहभागियों को जोधपुर संघ द्वारा प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द्रजी जैन ने किया।

उपर्युक्त तीनों कार्यक्रमों में भाग लेने वाले महानुभावों ने निर्धारित कार्यक्रमानुसार परमाराध्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्य भगवन्त एवं चारित्रात्माओं के दर्शन, वन्दन, प्रवचन, मांगलिक श्रवण करने का लाभ प्राप्त किया।

सन्त-सतियों के विचरण विहार में श्री अमरचन्द्रजी चौधरी, श्री पारसजी गिड़िया एवं उनकी टीम तथा श्री पुनवानचन्द्रजी ओस्तवाल एवं अनेक बुजुर्ग-युवा श्रावक-श्राविकाओं की विहार सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं।

सभी कार्यक्रमों के प्रतिभागियों, दर्शनार्थी श्रद्धालुओं एवं श्री संघों के आवास-निवास, भोजन व्यवस्था में शक्तिनगर, जोधपुर के संयोजक श्री अशोकजी मेहता एवं नेहरू पार्क के संयोजक श्री नरेन्द्रजी बाफना एवं उनकी पूरी टीम की सेवाएँ उत्तम एवं प्रशासनीय रही। जीवदया के क्षेत्र में भी शक्तिनगर कार्यकर्ताओं की सेवाएँ अनुपम हैं।

-नवरत्न गिरड़िया, मन्त्री

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला जोधपुर में सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों की समीक्षा करने, उनमें गुणवत्ता लाने तथा आने वाली समस्याओं का समाधान करने हेतु एक दिवसीय कार्यशाला सूर्यनगरी, जोधपुर में 19 जून, 2022 को आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में पोरवाल क्षेत्र-28, पल्लीवाल क्षेत्र-12, मेवाड-4, पंजाब-हरियाणा-3, म.प्र.-2, जोधपुर-93, मारवाड़ क्षेत्र-6, जयपुर-3, इस प्रकार कुल 151 अधीक्षकों, निरीक्षकों, प्रश्न-पत्र निर्माताओं तथा उत्तरपुस्तिका जाँचकर्ताओं ने भाग लिया।

कार्यशाला में पधारे सभी महानुभावों ने प्रातः 08:30 बजे से सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्ति नगर, छठी गली में विराजित जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 एवं व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 के दर्शन-वन्दन के साथ ही प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त किया।

दोपहर में लगभग 12:45 बजे नेहरू पार्क में कार्यशाला का प्रथम सत्र प्रारम्भ किया गया। इनमें राष्ट्रीय

संघाध्यक्ष पूर्व न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, राष्ट्रीय संघ महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, संघ संरक्षक श्रीमान् प्रसन्नचन्दजी बाफना, युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री श्रेयांसजी भाण्डावत, जोधपुर रत्न संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा सहित अनेक गणमान्य महानुभावों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया, राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने कार्यशाला में पधारे महानुभावों को सम्बोधित करते हुए शिक्षण बोर्ड के महत्त्व को रेखांकित किया। साथ ही संघ की विभिन्न गतिविधियों में सक्रियता से जुड़ने की प्रभावी प्रेरणा प्रदान की।

द्वितीय सत्र में शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों पर चर्चा-वार्ता एवं सुधार हेतु सुझाव आमन्त्रित किये गये-1. पाठ्यक्रम संशोधन सम्बन्धी। 2. प्रश्न-पत्र निर्माण सम्बन्धी। 3. प्रोत्साहन पुरस्कार सम्बन्धी। 4. परीक्षार्थियों की संख्या बढ़ाने सम्बन्धी। 5. कर्म सिद्धान्त के पाठ्यक्रम एवं परीक्षा सम्बन्धी। अनेक महानुभावों से उपर्युक्त विषयों पर बहुत उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए हैं।

शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों की वर्तमान व्यवस्था की जानकारी देते हुए कार्यशाला के प्रथम एवं द्वितीय सत्र का सञ्चालन श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार, शिक्षण बोर्ड द्वारा किया गया। मोटिवेशनल स्पीकर श्री श्रीकान्तजी गुप्ता-जोधपुर ने परीक्षा का महत्त्व एवं जीवन मूल्यों की जानकारी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

शिक्षण बोर्ड के सचिव श्री आकाशजी चौपड़ा ने सभी अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद प्रस्तुत किया। साथ ही जोधपुर संघ द्वारा की गई उत्तम व्यवस्था के लिए भी हार्दिक आभार प्रकट किया। -आकाश चौपड़ा, सचिव

‘आधुनिक विश्व में जैन इतिहास और दर्शन’ विषय पर बेंगलूरु में राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

जैन डीम्ड विश्वविद्यालय बेंगलूरु के द्वारा 6 से 8 जून, 2022 को जैन ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन के परिसर में भारतीय इतिहास परिषद् के अर्थसहयोग से ‘आधुनिक विश्व में जैन इतिहास और दर्शन’ विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। संगोष्ठी में लगभग 70 शोधपत्र प्रस्तुत हुए एवं 110 लोगों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। 6 जून को आयोजित उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. अरविन्द जामखेड़कर, चांसलर डक्किन कॉलेज-पुणे थे। विशिष्ट अतिथि प्रो. भागचन्द जैन ‘भास्कर’-नागपुर रहे। प्रो. प्रेमसुमन जैन-उदयपुर, प्रो. एस. पी. शर्मा-अलीगढ़, प्रो. धर्मचन्द जैन-कुरुक्षेत्र, प्रो. नरेन्द्र भण्डारी-अहमदाबाद, प्रो. रेणुका पोरवाल-मुम्बई, प्रो. सुदर्शनलाल जैन-वाराणसी सम्माननीय अतिथि थे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के इतिहास विषय पर प्रो. फूलचन्द जैन ‘प्रेमी’, वाराणसी ने आमुख वक्तव्य दिया तथा जैनदर्शन विषय पर प्रो. धर्मचन्द जैन-जयपुर ने आमुख वक्तव्य (Keynote address) दिया। भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् के शोधनिदेशक डॉ. विनोद जोशी ने भी विचार प्रस्तुत किये। संगोष्ठी के उद्देश्यों पर संगोष्ठी संयोजक डॉ. तृप्ति जैन ने प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सञ्चालन संगोष्ठी के सह-संयोजक डॉ. अरिहंत जैन ने किया। त्रिदिवसीय इस संगोष्ठी में प्रो. नरेन्द्र भण्डारी-अहमदाबाद, प्रो. भागचन्द जैन-नागपुर, प्रो. एस. पी. शर्मा-अलीगढ़, प्रो. प्रेमसुमन जैन-जयपुर, प्रो. प्रताप संचेती-जोधपुर, प्रो. रेणुका पोरवाल-मुम्बई, प्रो. मीनल कातरनीकर-मुम्बई, प्रो. जितेन्द्र जैन-उदयपुर, प्रो. जय कुमार उपाध्ये-श्रवण बेलगोला, प्रो. सुदर्शनलाल जैन-भोपाल, प्रो. धर्मचन्द जैन-कुरुक्षेत्र, प्रो. सुषमा सिंघवी-जयपुर, प्रो. फूलचन्द जैन ‘प्रेमी’-वाराणसी, प्रो. धर्मचन्द जैन-जयपुर, प्रो. अशोक कुमार जैन-वाराणसी, प्रो. शुभचन्द्र जैन-

मैसूर, प्रो. प्रियदर्शना जैन-चेन्नई, प्रो. विजय कुमार जैन-लखनऊ, प्रो. प्रद्युम्नशाह-वाराणसी, डॉ. जीवराज जैन-जमशेदपुर, डॉ. अशोक कुमार जैन-ग्वालियर, श्रमणी कुसुम प्रज्ञाजी-लाडनूँ आदि ने विशेष वक्तव्य प्रदान किये अथवा सत्रों की अध्यक्षता की। डॉ. अमितराय जैन-बड़ौत, डॉ. दिलीप धींग-चेन्नई, डॉ. तेजराज सिंघवी-मैसूर, आदि ने भी संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत किये तथा नयी पीढ़ी के उत्साही युवकों ने भी भाग लेकर संगोष्ठी को सफल बनाया। संगोष्ठी का आयोजन भव्य सभागार में अत्यन्त शालीनता के साथ हुआ तथा विद्वानों के आवास की व्यवस्था भी संगोष्ठी स्थल के निकट में ही की गई। चान्सलर डॉ. चैनराज रोयचन्द जैन के मार्गदर्शन में आयोजित यह संगोष्ठी अत्यन्त सफल रही। उन्होंने भी अपने विचारों से विद्वानों को लाभान्वित किया। संगोष्ठी संयोजक डॉ. तृप्ति जैन एवं सह-संयोजक डॉ. अरिहन्त जैन को टीम सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहयोग किया।

-तृप्ति जैन, संयोजक-राष्ट्रीय संगोष्ठी

वाराणसी में 'श्रमण परम्परा की इतिहास-दृष्टि और इतिहास-लेखन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के द्वारा भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के अर्थसहयोग से 14 से 16 मई, 2022 तक 'श्रमण परम्परा की इतिहास-दृष्टि और इतिहास-लेखन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजित की गयी। संगोष्ठी में लगभग 40 विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किये। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. अतुल कुमार सिन्हा-बरेली के द्वारा प्रेषित आधार वक्तव्य अर्पिता चटर्जी-वाराणसी ने प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि प्रो. वैद्यनाथ लाभ, कुलपति नालन्दा महाविहार ने बौद्ध और जैन परम्परा की इतिहास दृष्टि पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सीताराम दुबे-वाराणसी ने करते हुए दोनों परम्पराओं के ऐतिहासिक सन्दर्भों का उल्लेख किया। संगोष्ठी में आयोजित विभिन्न सत्रों के अन्तर्गत प्रो. चन्द्रदेवसिंह-अमरकंटक, प्रो. धर्मचन्द जैन-जयपुर, प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'-वाराणसी, डॉ. अर्चना शर्मा-वाराणसी, प्रो. मारुतिनन्दन तिवारी-वाराणसी, प्रो. सी. मार्गबन्धु-नई दिल्ली, डॉ. शान्तिस्वरूप सिन्हा-वाराणसी आदि के विद्वत्पूर्ण व्याख्यान हुए। इतिहास की दृष्टि से अभिलेख, साहित्य और यात्रा वृत्तान्त उपयोगी होते हैं। जैन और बौद्ध परम्परा में इन दोनों की उपलब्धि भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन में सहायक है। जिनवाणी सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन ने 15 मई के प्रातःकालीन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्राचीन काल में सदियों का इतिहास लिखा गया उसके पश्चात् दशकों का और अब हर घटना के एक-एक क्षण का इतिहास लिखा जाता है। इतिहास जहाँ पहले स्थूल दृष्टि लिये हुए था अब विज्ञान के कारण उसमें सूक्ष्म दृष्टि का प्रवेश हो गया है।

-डॉ. एस. पी. पाण्डे

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में वर्ष 2022-23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में प्रवेश हेतु सत्र 2022-23 के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं। कक्षा 7वीं से 12वीं एवं स्नातक प्रथम वर्ष में अध्ययन की इच्छुक छात्राएँ आवेदन कर सकती हैं। छात्रावास में बालिकाओं के लिए निःशुल्क आवास, भोजन एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था है। शैक्षणिक अध्ययन हेतु प्रवेश लेने वाली छात्राओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देना अनिवार्य है। छात्रावास में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखते हुए समय-समय पर मोटिवेशनल क्लासेज, सेमिनार, वेबिनार, गृह कौशल, पर्सनलिटी डवलपमेंट जैसी

विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं। प्राप्त आवेदनों में वरीयता क्रम के अनुसार चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जायेगा। प्रवेश पाने वाली छात्राओं को संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण पालन करना अनिवार्य है। इच्छुक छात्राएँ अपना आवेदन पत्र भर कर संस्थान में जमा करा सकती हैं।

आवेदन-पत्र प्राप्त करने एवं जमा कराने हेतु सम्पर्क सूत्र-श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.), मो. 9314506509 E-mail-sjratangirlssansthan@gmail.com

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

39. श्रीमती मंजूजी-श्री पृथ्वीराजजी धारीवाल, मुम्बई

(48वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में)

48,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID : 35288297 निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित

अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजैक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : **Saving**, Account Number : **51026632997**, Bank Name : **SBI**, Branch : **Bapu Bazar, Jaipur**, Ifsc Code : **SBIN0031843** निवेदक : **अशोक कुमार सेठ, मन्त्री**। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 17 जुलाई, 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा दिनांक 17 जुलाई 2022, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

जो परीक्षार्थी परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं, किन्तु अभी तक वे आवेदन-पत्र नहीं भर पाये हैं, उनसे निवेदन है कि वे आवेदन-पत्र भरकर परीक्षा में अवश्य भाग लें।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.) 291-2630490, व्हाट्सएप्प नं. 7610953735 Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

जैन प्रतिभाओं का सम्मान

जैन जज, आई.ए.एस., आई.पी.ए., आई.आर.एस., एवं डॉक्टर्स का अभिनन्दन

जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा के तत्त्वावधान में दिल्ली अणुव्रत भवन में जैन प्रतिभाओं का अभिनन्दन किया गया। समारोह में इस वर्ष परीक्षा में आई.ए.एस बनने वाले तथा 7वीं रैंक प्राप्त श्री सम्यक् जैन, 14वीं रैंक प्राप्त श्री अभिनव जैन तथा 17वीं रैंक प्राप्त सुश्री महक जैन का समाज ने अभिनन्दन किया। इसी प्रकार आयकर विभाग में कार्यरत कमिश्नर, सहायक कमिश्नर इत्यादि पदों पर कार्यरत श्री अभिषेकजी, श्री वैभवजी एवं सुश्री प्रियंकाजी जैन के साथ में दिल्ली में अतिरिक्त उपायुक्त (Addl. DCP) श्री राजाजी बाँठिया एवं डिस्ट्रिक्ट जज श्री संजीवजी जैन का भी समाज ने अभिनन्दन किया। इस अवसर पर समाज सेवा में अपनी अग्रणी भूमिका निभाने वाले डॉ. एस. के. सौगानी (Neuro Surgeon) डॉ. नागेशजी जैन (Surgeon) एवं डॉ. बिमिलजी जैन (Heart Specialist) का भी समाज ने स्वागत किया और उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता भाव व्यक्त किए।

स्वागत समारोह में नई प्रतिभाओं को सम्बोधित करते हुए पुलिस के पूर्व अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, श्री शान्तिजी जैन, सेवानिवृत्त आई.ए.एस. श्री विनोदजी जैन तथा सेवानिवृत्त मुख्य आयकर कमिश्नर श्री के. सी. जैन ने सफलता के सूत्र बताते हुए कहा- “ध्यान रखें कि किसी के साथ अन्याय न हो। दुःखी, पीड़ित की समस्या को सुन लेने से ही उसका आधा दर्द खत्म हो जाता है।” समारोह में नई प्रतिभाओं ने भी अपने-अपने अनुभव प्रकट करते हुए कहा कि हमारी उपलब्धि हमारे माता-पिता तथा भगवान के आशीर्वाद और लगातार मेहनत से प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि ‘मेहनत का कोई विकल्प नहीं है।’ समारोह की अध्यक्षता जैन समाज के वरिष्ठ नेता, अजातशत्रु श्री माँगीलालजी सेठिया ने की।

-प्रो. रत्नलाल जैन, महासचिव

संक्षिप्त समाचार

सूरत-श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन सूरत में 22 से 29 मई तक 8 दिवसीय धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 4 वर्ष से लेकर 22 वर्ष की आयु के लगभग 110-120 बच्चों तथा युवक-युवतियों ने भाग लिया। शिविर का समय सुबह 8.30 से 11 बजे तक रखा गया तथा शिविरार्थियों को सामायिक एवं प्रतिक्रमणसूत्र का अध्यापन करवाया गया। 29 मई को शिविर के समापन समारोह में सेवा देने वाले सभी अध्यापकों तथा शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया।
-सुनील गाँधी, संघ सेवक

चेन्नई-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों के लिए आयोजित अष्ट दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर का समापन 29 मई, 2022 को प्रातः 8.30 बजे स्वाध्याय भवन, साहुकार पेट में सम्पन्न हुआ। इसमें प्रतिदिन 300 शिविरार्थियों ने शिविर में शामिल होकर ज्ञानार्जन किया। समापन समारोह का सञ्चालन युवक परिषद् के मन्त्री श्री सुनीलकुमारजी सांखला ने किया। अध्यक्ष श्री माँगीलालजी चोरड़िया ने अपने स्वागत भाषण में शिविरार्थियों को बताया कि आज का युग भौतिकता का युग है जिसकी चकाचौंध से हमने अपनी वास्तविक संस्कृति को भुला दिया है। आज हमारी संस्कृति और संस्कार स्वप्न बनकर रह गए हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सद्प्रेरणा से विगत कई वर्षों से ग्रीष्मकालीन शिविरों एवं धार्मिक पाठशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा सभी शिविरार्थियों को सामायिक बैग, मेडल, प्रमाण-पत्र एवं अध्यापकों को चाँदी के सिक्कों से सम्मानित किया गया।
-माँगीलाल चोरड़िया

सवाईमाधोपुर-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया एवं महासचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट 27 जून, 2022 को व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनार्थ बजरिया स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पधारे। उन्होंने नगर परिषद् क्षेत्रीय पदाधिकारियों एवं सदस्य श्राविकाओं से आध्यात्मिक, चारित्रिक, सदाचार, निर्व्यसनता, सामायिक, स्वाध्याय, सदस्यों में भगिनी भाव, लेखन गायन, वक्तृत्व कला, बच्चों में सुसंस्कार के विकास पर पारस्परिक संवाद किया। देशभर में सञ्चालित राष्ट्रीय कार्यक्रमों की जानकारी दी। सवाईमाधोपुर प्रवास के बाद राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अलीगढ़ में व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-8 के दर्शन-वन्दन का भी लाभ लिया और स्थानीय श्राविकाओं की सभा को सम्बोधित किया।
-धनसुरेश जैन

बेंगलूरु-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बेंगलूरु के अन्तर्गत सञ्चालित गत चौदह माह से सक्रिय और सतत गतिमान आचार्य हस्ती सेवा फण्ड द्वारा आचार्य श्री हीरा के 32वें आचार्य पद चादर दिवस के उपलक्ष्य में 31 मई, 2022 को मानव सेवा और शिक्षा सेवा का महनीय कार्य किया। होसकोटे ग्राम में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में यहाँ के स्वामी विवेकानन्द स्कूल की दोनों इकाइयों में लगभग 1500 बालक-बालिकाओं को नशामुक्ति और तम्बाकू त्याग की कन्नड भाषा में शपथ (प्रतिज्ञा) दिलाई गई। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों को नोट बुक, पैन, पेन्सिल और मिठाई आदि का यथायोग्य वितरण किया गया। सांकेतिक तौर पर तम्बाकू एवं नशा निषेध के सर्टिफिकेट भी विद्यार्थियों को प्रदान किये गये।

आचार्य हस्ती सेवा फण्ड बेंगलूरु द्वारा 29 अप्रैल, 2022 को मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा के जैन भागवती

दीक्षा महोत्सव-2022 के शुभ मंगलमय उपलक्ष्य में जीवदया और मानव सेवा कार्य किया गया एवं श्री इन्द्रमूर्ति गौतम जीवदया ट्रस्ट शूले को जीवदया सेवा बाबत अर्थसहयोग भी प्रदान किया गया। इस प्रसङ्ग पर जीवदया ट्रस्ट होसकोटे गौशाला में भी अर्थसहयोग प्रदान कर जीवदया का कार्य सम्पादित किया गया। -गौतमचन्द अरेस्तवाल

बधाई



जयपुर-प्रतिभासम्पन्न युवारत्न श्री आयुषजी जैन सुपौत्र श्री हरकचन्दजी-श्रीमती प्रेमलताजी जैन तथा सुपुत्र श्री सुधीरजी-श्रीमती अनीताजी जैन, महारानी फार्म-जयपुर ने संघ लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में 178वीं रैंक प्राप्त की है। उन्होंने एम.एन.आई.टी., जयपुर से 2016 में बी.टेक करने के पश्चात् एक वर्ष कैम्पनी में कार्य किया तथा फिर भारतीय वनसेवा में अधिकारी बने। अभी उन्हें भारतीय पुलिस सेवा में नियुक्ति मिलने की सम्भावना है।



जयपुर-सुश्री गुंजनजी सुपुत्री श्रीमती वीणाजी-श्रीपालचन्दजी सुराणा (मूल निवासी नागौर) हाल मुकाम जयपुर ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर राजस्थान से कक्षा 12वीं कॉमर्स सन् 2021-22 में 97.40 प्रतिशत से उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

बेंगलूर-अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी सुश्राविका श्रीमती भीखीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. पूनमचन्दजी लुणावत का 10 अप्रैल, 2022 को 98 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 10 के वर्ष 2004 के शान्तिनगर-बेंगलूर पदार्पण पर श्रीमती भीखीदेवीजी लुणावत की अगुवाई में समस्त लुणावत परिवार भ्राताओं ने सामाजिक वैवाहिक स्नेह भोज में जमीकन्द रहित 31 व्यञ्जनों की मर्यादा स्वीकार की थी। पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग करते हुए लुणावत परिवार ने वर्ष 2008 में शान्तिनगर-बेंगलूर में सात मञ्जिला भव्य जैन स्थानक और जैन भवन का निर्माण करवाकर श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शान्तिनगर को सुपुर्द किया। वर्ष 2010 में रत्नसंघीय दीक्षाओं में लुणावत परिवार की संघ में महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। लुणी-बेंगलूर आदि अनेक छोटे-बड़े क्षेत्रों में जीव-दया, मानव-सेवा, चिकित्सा और शिक्षा के साथ बेंगलूर में सामायिक-स्वाध्याय भवन के निर्माण में मुक्त-हस्त से उदारता के साथ अर्थसहयोग प्रदान किया। आदरणीय श्री छगनलालजी शान्तिलालजी लुणावत वर्तमान में गजेन्द्र निधि ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण लुणावत परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है।

-धन्यत सेठिव्य, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती नीलिमाजी धर्मसहायिका श्री दीपकजी सामसुखा का 13 जून, 2022 को देवलोक गमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी चात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप चात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित



परिवारों में से एक है। आपने अपने जीवनकाल में छोटी-बड़ी कई तपस्याएँ कीं। आपके धर्मसहायक श्री दीपकजी सामसुखा सन्त-सतीमण्डल के नियमित दर्शन-वन्दन एवं विहार सेवा में सदैव तत्पर रहकर अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान करते हैं।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

नाइसर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती आयचुकीदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्दजी लोढ़ा का 8 जून, 2022 को



देहावसान हो गया। आपकी सभी त्यागी-वैरागी तपस्वी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। नाइसर ग्राम में किसी भी सम्प्रदाय के सन्त-सतीवृन्द के पधारने पर निरन्तर सेवा में तत्पर रहती थी तथा गाँव में पधारने वाले प्रत्येक सन्त-सतीवृन्द का प्रवचन करवाने की आपकी पूरी प्रबल भावना बनी रहती थी। नाइसर, भोपालगढ़, बारनी, रजलानी आदि क्षेत्रों में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवा में दर्शन-प्रवचन-माँगलिक श्रवण, विहार सेवा में आप परिवार सहित पधारती थी। आपने 2007 के भोपालगढ़ चातुर्मास में पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की पावन निश्रा में मासखमण किया था। आपने ग्यारह, तीन अठाई, अनेक तेले की तपस्याओं के साथ 40 वर्षों से रात्रि चौविहार त्याग, प्रतिदिन 7 सामायिक-साधना आदि धार्मिक क्रियाएँ की। हाल ही में श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-10 पूरे शेखेकाल में 29 दिनों तक नाइसर में विराजे तब भी आपने तेले की तपस्या की। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री प्रकाशचन्दजी लोढ़ा (नाइसर के पूर्व सरपंच) बड़े सेवाभावी, द्वितीय सुपुत्र स्व. श्री शान्तिलालजी, बेंगलूरु में प्रतिष्ठित श्रावक रहे तथा तृतीय सुपुत्र श्री महावीरचन्दजी चेन्नई में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रावक है। आपके पौत्र श्री रिखबराज सुपुत्र श्री प्रकाशचन्दजी लोढ़ा और सुनीलजी सुपुत्र स्व. श्री शान्तिलालजी लोढ़ा भी बेंगलूरु में धार्मिक कार्यों में अग्रणी हैं। आपकी सुपुत्री श्रीमती लीलादेवीजी धर्मपत्नी श्री गौतमचन्दजी खिंवसरा, चेन्नई भी बड़ी सेवाभावी है। आप अपने पीछे दो सुपुत्र, पाँच सुपौत्र, तीन सुपौत्रियाँ, चार पड़पौत्र एवं छह पड़पौत्रियाँ आदि से संस्कारवान भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।

-अशोक लोढ़ा, नाइसर

रायपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरलादेवीजी धर्मसहायिका श्री कमलकिशोरजी कटारिया का 14 जून, 2022 को संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आपका धर्ममय जीवन अपने आप में अनूठा रहा है। आप सन्त-सतियों की सेवा-शुश्रूषा का लाभ बराबर लेती थीं।

-प्रकाश सालेचा, संयुक्त महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ प्रमुख रत्न व्यवसायी सुश्रावक श्री चम्पालालजी सुपुत्र स्व. श्री हजारीमलजी बोथरा का 24 मई,



2022 को 92 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप मधुर व्यवहारी, दृढ़ निश्चयी, हँसमुख तथा सरल स्वभाव के धनी थे। देव, गुरु एवं धर्म प्रति पूर्णतः समर्पित श्रावकरत्न सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणीय रहते थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित वरिष्ठ परिवारों में से एक है। आपने स्वयं ने संस्कारी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया था। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपने अभूतपूर्व कार्य सम्पादित किये। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप उदारमना थे तथा कई संस्थाओं को सहयोग देकर आपने कार्य को आगे बढ़ाया।

-सरदारसिंह बोथरा, जयपुर

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रकाशकँवरजी धर्मसहायिका वरिष्ठ स्वाध्यायी स्व. श्री नैनचन्दजी बाफना का



09 मई, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था। आप प्रतिदिन 5-7 सामायिक किया करती थी। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी आपने समभाव बनाए रखा। आपके सुपुत्र श्री शान्तिलालजी बाफना गुजरात शाखा संयोजक के रूप में स्वाध्याय संघ को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।



धनोप-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मानकँवरबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री गुलाबचन्दजी मारू का 2022 को 85 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप बहुत ही सरल स्वभावी और उदारमना थी। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। सभी धार्मिक क्रियाओं में आपकी अभिरुचि थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



नवसारी-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री दिलीपजी सुपुत्र स्व. श्री सज्जनसिंहजी लोढ़ा (मूल निवासी फूलियाकलाँ) का 1 जून, 2022 को देहावसान हो गया। आप संघसमर्पित, ऊर्जावान् एवं कर्तव्यनिष्ठ होने के साथ सन्त-सतियों की विहार सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



आदर्शनगर-सवाईमाधोपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री चौथमलजी जैन (करेला वाले) का 26 मई, 2022 को 77 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप सौम्य, सरल एवं मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी थे। आपका जीवन त्याग, तप एवं प्रत्याख्यानो से परिपूर्ण रहा है। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी थे। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री रामबाबूजी जैन वर्तमान में पाँच्यावाला-जयपुर के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। आप अपने पीछे भरापूरा एवं संस्कारवान् परिवार छोड़कर गए हैं। -हेमन्त जैन, जयपुर



चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री महावीरचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री किशनलालजी बाफना (भोपालगढ़ वाले) का 30 मई, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी थे, जैसी कथनी वैसी करनी कहावत को सार्थक करने वाले थे। आप अपने पीछे तीन पुत्र-पुत्र वधुएँ, पौत्र-पौत्री से भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री राजेशजी बाफना चेन्नई में युवक परिषद् के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।



बालोतरा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गौतमचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री तखतमलजी लालण (नगर वाला) का 8 जून, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आपका स्वभाव सरल एवं धार्मिक प्रवृत्ति का था। आप व्यसन के विरोध में थे एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहते थे। आपके बड़े भ्राता श्री उत्तमचन्दजी मेहता सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते हैं। -सरोहनलाल जैन, बालोतरा



मुम्बई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मनोहरबाईजी धर्मसहायिका श्री सोहनलालजी धारीवाल (मूल निवासी पाली) का 8 मई, 2022 को 98 वर्ष की वय में संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन त्याग-तपस्या से परिपूर्ण था। अभी हाल ही में आपने पूर्ण शान्तभाव के साथ 41 उपवास की तपस्या पूर्ण की थी। कैंसर जैसी असाध्य बीमारी होने पर भी आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पौरसी, संवर आदि की साधना में रत रहती थीं, तथा दान-पुण्य के कार्यों में अग्रणी थीं। आपकी सभी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थीं एवं उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। -बिन्दु चौधरी, मुम्बई



मुम्बई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पुरुषोत्तममलजी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री अभयमलजी भण्डारी का 11 जून, 2022 को मुम्बई में स्वर्गवास हो गया। आपकी धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा एवं आस्था थी। आपने परिवार में वरिष्ठ होने की वजह से पूरे परिवार को एक सूत्र में पिरोकर रखा था। आप सरलता, सहजता, कर्तव्य परायणता, विनम्रता एवं कर्मठ सेवा भावना में हर समय समर्पित रहते थे। सहनशीलता आप में कूट-कूट कर भरी थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक	
16318	श्री अशोककुमारजी लोढ़ा, जयपुर (राजस्थान)
16319	सौ. पायल वृषभजी लोढ़ा, गुरुग्राम (हरियाणा)
16320	श्रीमती रितुजी धारीवाल, मुम्बई (महाराष्ट्र)
16321	श्री ओमप्रकाशजी सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)
16322	श्रीमती चैनारानीजी बरमेचा, मायावरम (तमिलनाडु)
16323	श्री रणजीतराजजी जैन, बैंगलौर (कर्नाटक)
जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार	
11000/-	श्री श्रेणिकराजजी, सुनीलकुमारजी, सौरभजी, गौरवजी धोका, मैसूर, चि. सौरभजी धोका का विवाह सौ. कां. हर्षिता के सङ्ग होने के उपलक्ष्य में।
11000/-	श्री अनिलजी भण्डारी, मुम्बई, पूज्य पिताजी श्री पुरुषोत्तममलजी सुपुत्र स्व. श्री अभयमलजी भण्डारी का 11 जून, 2022 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
5100/-	श्री हरकचन्दजी, दिनेशकुमारजी जैन (बिलोता वाले), जयपुर, चि. आयुषजी सुपुत्र श्रीमती अनीता सुधीरजी जैन के भारतीय पुलिस सेवा में चयनित होने की खुशी में।
5000/-	श्री शरदकुमार जी बोथरा, जयपुर, श्री चम्पालालजी बोथरा का 24 मई, 2022 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
5000/-	श्रीमती बिन्दूजी गजराजजी चौधरी, मुम्बई, पूज्या मातुश्री श्रीमती मनोहरबाईजी पत्नी श्री सोहनलालजी धारीवाल का 98 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक देवलोकगमन होने पर पुण्य-स्मृति में।
5000/-	श्री दीपकजी शामसुखा, जयपुर, श्रीमती नीलिमाजी शामसुखा का 13 जून, 2022 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
3100/-	श्री महेन्द्रकुमारजी जैन, मुम्बई, सुपुत्र चि. शुभमजी संग सौ.कां.सुष्मिताजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
2100/-	श्री सुरेन्द्रकुमारजी लूंकड़, कोटा, वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
2100/-	श्री अनोपचन्दजी, पंकजजी, संदीपजी बाघमार (कोसाना वाले), चेन्नई, श्रीमती मंजूदेवीजी पत्नी श्री अनोपचन्दजी बाघमार के द्वितीय वर्षीय पारणा पीपाइशहर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
1100/-	श्री कमलेशकुमारजी जैन, देई, सुपौत्र जन्म के उपलक्ष्य में।
1100/-	श्री विजयसिंहजी, महेन्द्रसिंहजी बोहरा (रेलमंगरा) मुम्बई, चि. शुभम सुपुत्र स्व. श्री मंगलसिंहजी बोहरा का शुभविवाह सौ.कां. दिव्याजी सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द्रजी चौधरी बारडोली (पहुँना) के संग 9 मई, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।
1100/-	श्री ताराचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी, मनीषकुमारजी मारू, धनोप-भीलवाड़ा, मातुश्री श्रीमती मानकँवर बाईजी पत्नी स्व. श्री गुलाबचन्दजी मारू का 21 मई, 2022 को निधन हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
1100/-	श्री गौतमचन्दजी, पुरुषोत्तमजी, जिनेन्द्रकुमारजी, अशोककुमारजी, अनिलकुमारजी जैन (चौरू वाले) जयपुर, चि. अविनाशजी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी का शुभविवाह सौ.कां. हेमलताजी सुपुत्री श्री अमोलकचन्दजी सुमेरगंजमण्डी के संग 2 मई, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।
1100/-	श्री चौथमलजी, ओमप्रकाशजी, विमलकुमारजी, पदमचन्दजी, गिरिशजी जैन (गावड़ा वाले) इन्दौर, चि. ऋषभ (सनल) सुपुत्र श्री विमलकुमारजी का शुभविवाह सौ.कां. प्रियाजी सुपुत्री श्री योगेशकुमारजी जैन, आटून वाले के संग 12 मई, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।
1100/-	श्री रामबाबूजी, मुकेशजी, बृजेशजी जैन (करेला वाले) आदर्श नगर-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री चौथमलजी जैन की पुण्य-स्मृति में।
1100/-	श्री धर्मचन्दजी, सुरेशचन्दजी, नरेशचन्दजी, मुकेशचन्दजी, दिनेशचन्दजी, राजेशकुमारजी, योगेश कुमारजी जैन, कुशतला-सवाईमाधोपुर, चि. आशीषजी का शुभविवाह सौ.कां. रितुजी सुपुत्री श्री विजयकुमारजी जैन, सौप के संग 5 जून, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।
1100/-	श्री हनुमानप्रसादजी, रविन्द्रजी, आनन्दजी, गौरवजी

जैन (चकेरी वाले) सवाईमाधोपुर, चि. मोहित (श्रेयांश) सुपुत्र श्रीमती सन्तोषजी-आनन्दजी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. दीपिकाजी (पूनम) सुपुत्री श्री बाबूलालजी जैन डांगरवाड़ा वाले-सवाईमाधोपुर के साथ 8 जून, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री गणपतलालजी पोरवाल जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर गुरु चरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री विमलकुमारजी, ऋषभजी, विनोदजी, हेमन्तजी जैन, उनियारा-टोंक, श्रीमती सन्तराबाईजी के वर्षीतप पारणा के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

2100/- श्री ईश्वरचन्दजी सिंघवी, नयी दिल्ली, स्व. श्रीमती

रतनकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्दजी सिंघवी एवं स्व. श्रीमती रीताजी धर्मपत्नी श्री चंचलचन्दजी सिंघवी की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि / गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार

(1) श्री कीर्तिजी सुराणा सुपुत्र श्री विनोदजी सुपौत्र श्री पी. एस. सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु)।

(2) श्री डी. अरुण कुमारजी जैन सुपुत्र श्री दुलीचन्दजी बाघमार, चेन्नई (तमिलनाडु)।

(3) श्रीमती शारदादेवीजी, छगनचन्दजी, प्रदीप कुमारजी जैन, खोह-अलवर (राजस्थान)।

(4) श्री जिनेश कुमारजी श्रीमती कुमकुमजी जैन (डेहरा वाले), अर्जुन नगर-जयपुर (राजस्थान)।

आर्यता की ओर बढ़ें

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'

संस्कारमय शिक्षा से, सन्तानों को गढ़ना चाहिए। आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए। ध्रुव।।

जड़ बिना एक पेड़ का, अस्तित्व क्या कभी है रहा? संस्कृति है जड़ हमारी, पूर्वजों ने है कहा। 'इसकी रक्षा-निज सुरक्षा', लक्ष्य जगना चाहिए, आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।1।।

पश्चिमी देशों से जीवन, शैली जो है उधार ली, संस्कृति निज नष्ट करने की, क्यों हमने ठान ली? निज पतन के शिखर पे क्यों, व्यर्थ चढ़ना चाहिए? आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।2।।

निज सुखों के निमित्त से, निज संस्कृति न नष्ट हो, जल-हवा-पृथ्वी रूपी, न प्रकृति को कष्ट हो। शुभ भाव झरना ये हृदय में, नित्य बहना चाहिए, आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।3।।

संस्कार और सद्गुण बिना, प्रगति कभी होती नहीं,

इनकी सत्-शिक्षा बिना, प्राप्ति कभी होती नहीं। सन्तान सुशिक्षा प्रणाली, से ही पढ़ना चाहिए, आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।4।।

युग प्रतिस्पर्धा का है, पर दूसरों से क्यों करें? हो प्रतिस्पर्धा स्वयं से, आज और बेहतर बनें। अब नकारात्मक विचारों, से ही लड़ना चाहिए, आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।5।।

है नहीं कल्याणकारी, ज्ञान केवल पुस्तकीय, कार्य-प्रायोगिक अनुभव, हैं बढ़ाते नित्य ही। सिद्धान्त के उपयोग की, युक्ति समझना चाहिए, आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।6।।

केन्द्र सुशिक्षा के हैं, गुरुकुल हमारी थाती हैं, आचरण-निर्माण वाली, शिक्षा यहाँ दी जाती है। संस्कृति से विकृति को, अब उखड़ना चाहिए, आर्य हैं हम आर्यता की, ओर बढ़ना चाहिए।।7।।

-स्री 16/1, कृष्ण-कुञ्ज, हलेड़ रोड़, भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

मस्तिष्क की क्षमता को कैसे बढ़ाएँ?

श्री शुभम बोहरा

मानव शरीर में एक अमूल्य अङ्ग है-मानव मस्तिष्क। मानव-मस्तिष्क जैसा श्रेष्ठ और विकसित मस्तिष्क और किसी भी प्राणी के पास नहीं है। क्योंकि मानव मस्तिष्क बौद्धिक प्रतिभा, मानसिक चिन्तन एवं आध्यात्मिक शक्ति के जागरण का मूल आधार है। प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में एक जैसी रचना होने पर भी ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के कारण किसी की स्मरण शक्ति कम होती है तो किसी की ज्यादा, कोई ज्ञान जल्दी ग्रहण कर लेता है तो किसी को ग्रहण करने में अधिक समय लगता है। बहुत सारे लोग एक बार देखी हुई, सुनी हुई या पढ़ी हुई बात को बिना किसी कठिनाई के याद रख लेते हैं। बहुत सारे लोग बहुत श्रम करने के बावजूद भी याद रख पाने में असफल रहते हैं, इस समस्या के कारण पर विचार करते हैं।

प्रत्येक आत्मा में अनन्त ज्ञान की क्षमता होने से सबको स्मरण शक्ति की समान सामर्थ्य है। सबका मस्तिष्क अनन्त शक्ति का भण्डार है, भले ही क्षयोपशम की विचित्रता से विभिन्न प्रकार की स्मरण शक्ति हो

सकती है। समस्या मस्तिष्कीय क्षमता की नहीं है, अपितु समस्या है मस्तिष्कीय क्षमता का सही उपयोग नहीं करने की। कम्प्यूटर तो सबके पास है, एक ही कम्पनी का एवं एक जैसी गुणवत्ता वाला, फिर भी यदि उसका उचित उपयोग करना न आए तो कम्प्यूटर का क्या दोष?

जो व्यक्ति अपने मस्तिष्क का सही रूप में उपयोग करना जानता है, वह मस्तिष्क की असीम क्षमताओं का लाभ उठा सकता है। जो व्यक्ति मस्तिष्क का समुचित उपयोग करना नहीं जानता वह स्वयं सामर्थ्यवान होते हुए भी दरिद्र ही बना रहता है। बहुत सारे लोग मस्तिष्क का सही उपयोग नहीं करके उसका दुरुपयोग करने में निपुण (Expert) होते हैं। मस्तिष्क का यदि गलत रास्ते पर, गलत विचारों में, गलत तरीके से उपयोग करेंगे तो हम मस्तिष्क की क्षमता कम कर रहे हैं, ऐसा मानना चाहिए। मस्तिष्क की क्षमता को कमजोर होने के कुछ कारण निम्नलिखित हैं-

(1) भूतकाल की स्मृतियाँ एवं भविष्य की कल्पना-अधिकांश लोग भूतकाल की व्यर्थ स्मृतियों एवं भविष्य की कल्पनाओं में डूबे रहते हैं। भूतकाल जो हमारे हाथ से चला गया है और भविष्य जो हमसे दूर है, इन दोनों पर अपना कोई भी अधिकार नहीं है। इन दोनों अवस्थाओं

का चिन्तन मस्तिष्क का दुरुपयोग है। सिर्फ वर्तमान हमारे हाथ में है। उस वर्तमान समय को यदि सम्भाल लिया जाए, उसका यदि सही उपयोग कर लिया जाए तो वही वर्तमान हमारे लिए उज्ज्वल भविष्य का आधार बन जाता है। भविष्य के बारे में सोचने से भविष्य उज्ज्वल नहीं बनता, उससे तो वर्तमान अमूल्य क्षण भी नष्ट हो जाता है, किन्तु यदि वर्तमान का सही-सही उपयोग कर लिया जाए तो वर्तमान तो सुधरता ही है, भविष्य भी सुखद और समृद्ध बनता है। आज के मनुष्य का मन भूत-भविष्य की व्यर्थ विचारधारा में खोया-खोया सा रहता है। प्रश्न हो सकता है तो क्या सिर्फ वर्तमान में ही रहें? भविष्य की योजनाएँ, कार्यक्रम न बनाएँ? ऐसा नहीं है। वर्तमान में आप जब कोई काम कर रहे हैं, उस काम को सही रीति से सम्पन्न करें। मान लो आप भोजन कर रहे हैं, भोजन विधि का ध्यान नहीं रखकर उस समय भविष्य की योजना बनाना उचित नहीं है।

वर्तमान में आप भविष्य की योजनाएँ बना सकते हैं, किन्तु उस समय आप अन्य किसी काम में लगे हुए नहीं होने चाहिए। जब आप भविष्य की योजनाओं पर चिन्तन-मनन करें तब पूर्ण एकाग्रता इसी पर रखें। अतः वर्तमान में जीने का तात्पर्य है कि जब आप जो कार्य कर रहे हैं, वह समग्रता से पूरी भावक्रिया के साथ मनोयोगपूर्वक करें। फिर चाहे उस कार्य का सम्बन्ध वर्तमान के साथ हो या भूत-भविष्य के साथ। वास्तव में व्यक्ति को भूत-भविष्य की व्यर्थ बातें सोचने की एक आदत-सी पड़ जाती है। वह आदत इतनी गहरी हो जाती है कि यह वर्तमान के कार्य में भी व्यवधान डालती रहती है। इस आदत को बदलना बहुत जरूरी है। व्यर्थ विचार करने की आदत से बचने के लिए, भूत-भविष्य की अनेकों स्मृतियों और कल्पनाओं से मुक्त होने के लिए तथा वर्तमान क्षण में जीने के लिए दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी है।

इसके लिए प्रतिदिन प्रातःकाल नवकारसी से पूर्व अथवा रात्रि में सोने से पूर्व ध्यान की मुद्रा में सुखासन,

पद्मासन अथवा वज्रासन में बैठिए। दोनों हाथ ज्ञानमुद्रा या जिनमुद्रा में रखिए। आँखें कोमलता से बन्द कीजिए। रीढ़ की हड्डी और गर्दन सीधी एवं तनाव मुक्त रहे। श्वास लेते वक्त पेट के फूलने तथा सिकुड़ने का अनुभव करें। 5 मिनट प्रयोग करें। फिर चित्त को नाभि से हटाकर दोनों नथुनों के भीतर एकाग्र करें। वहाँ आते-जाते श्वास को सहजता से देखते रहिए। बीच में मन कहीं चला जाए तो जैसे ही याद आए पुनः उसे श्वास पर लगाए। 5 मिनट तक इस क्रिया को करें।

इसका नियमित अभ्यास करने से मुख्य पाँच लाभ होते हैं—(1) मन की एकाग्रता बढ़ती है। (2) स्मरण-शक्ति का विकास होता है। (3) जो पाठ तीन घण्टे में याद होता है, वह डेढ़ घण्टे में याद होने लगता है। यानी ग्रहण शक्ति का विकास होता है। (4) क्रोध और उत्तेजना शान्त होती है। (5) थकान एवं कमजोरी दूर होती है।

(2) ज्यादा टी.वी. देखना—निःसन्देह अधिक टी.वी. देखने से व्यक्ति का मन चञ्चल बनता है और एकाग्रता घटती है। इन्द्रियाँ एवं मस्तिष्क थककर निष्क्रिय-सा हो जाता है। ग्रहण शक्ति घटने लगती है। बुरे विचार आने लगते हैं और स्मरण-शक्ति भी घटती है। बच्चों को चाहिए कि वे सिर्फ रविवार को छोड़कर टी.वी. न देखने का संकल्प करें। अच्छा तो यह हो कि वे अपना टी.वी. देखने का समय खेलने-कूदने में लगाए। व्यक्ति को स्वयं यह सोचना चाहिए कि मेरा उज्ज्वल भविष्य समय का सदुपयोग करने में निहित है। समय को नष्ट करना, भविष्य को स्वयं के हाथों अन्धकारमय बनाना है। विद्यार्थी को अपनी जीवनचर्या निर्धारित करनी चाहिए।

(3) तनाव, चिन्ता, भय एवं क्रोध—ये सारे संवेग मन को असन्तुलित, मस्तिष्क को विक्षिप्त एवं न्यूरोन (मस्तिष्कीय कोशिकाओं) को नष्ट करते हैं। व्यक्ति को आत्म-विश्वास के साथ गहरा अध्ययन करना चाहिए। व्यक्ति यदि मनोयोगपूर्वक प्रारम्भ से ही

अध्ययन/पढ़ाई करे तो उसे चिन्ता, भय एवं तनाव पालने की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी। क्रोध को शान्त रखने के लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह प्रतिकूल परिस्थितियों में तत्काल प्रतिक्रिया न करे। शान्त एवं मौन रहे। तनाव की स्थिति आ भी जाए तो थोड़ी देर के लिए लेटकर कायोत्सर्ग का अभ्यास कर लेना चाहिए।

इन सारे निर्देशों का यथायोग्य पालन किया जाए तो अवश्य अपनी मस्तिष्कीय क्षमता को बढ़ा सकते हैं एवं विद्यार्थी जीवन में अध्ययन के साथ-साथ जीने का भरपूर आनन्द ले सकते हैं।

-नयनतारा गेस्ट हाँउस, जलगाँव (महाराष्ट्र)

विलियम जॉन्स की ज्ञान- पिपासा

डॉ. दिलीप धींग

अठारहवीं सदी की बात है। उस समय कलकत्ता में तत्कालीन भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे- सर विलियम जॉन्स। जॉन्स को यह महसूस हुआ कि भारत में भारतीय संस्कृति के अनुसार सही न्याय देने के लिए संस्कृत का ज्ञान भी आवश्यक है। उनके मन में संस्कृत सीखने की इच्छा हुई। उन्होंने अनेक संस्कृत पण्डितों से सम्पर्क किया, लेकिन मुँह माँगा मानधन देने के बावजूद कोई पण्डित उन्हें संस्कृत पढ़ाने के लिए तैयार नहीं हुआ। पण्डितों का तर्क था कि किसी 'विधर्मी' को देववाणी संस्कृत नहीं पढ़ाई जानी चाहिये। इसके बावजूद जॉन्स ने अपना प्रयास नहीं छोड़ा। अन्ततः एक पण्डितजी जॉन्स को संस्कृत पढ़ाने के लिए तैयार हो गये। परन्तु उन्होंने अनेक शर्तें रखीं, जिनमें से चार शर्तें इस प्रकार थीं-

1. जिस कमरे में पढ़ाई होगी, उस कमरे को प्रतिदिन पढ़ाने से पूर्व गंगाजल से धोना होगा।
2. पढ़ाने के समय पण्डितजी के लिए पवित्र वस्त्रों की व्यवस्था करनी होगी।
3. जॉन्स महोदय को भी पढ़ते समय पवित्र वस्त्र धारण करने होंगे।

4. भूमि पर बैठकर पढ़ना होगा।

अपनी ज्ञान-पिपासा शान्त करने के लिए विलियम जॉन्स ने सभी नियम और शर्तें सहर्ष स्वीकार कर लीं। उन्होंने मुख्य न्यायाधीश पद की गरिमा और औपचारिकता को भुला दिया तथा विद्वान् पण्डितजी द्वारा निर्देशित व्यवस्था-क्रम से पढ़ना आरम्भ कर दिया। उनमें संस्कृत का कोई पूर्व संस्कार नहीं था। लेकिन विनय, लगन और सतत अध्यवसाय के फलस्वरूप उन्होंने संस्कृत साहित्य की अनेक शाखाओं का तलस्पर्शी ज्ञान अर्जित किया।

संस्कृत का अध्ययन करते हुए उन्हें अनेक ऐसे शब्द मिले, जिनका ग्रीक, लैटिन, गाथिक आदि भाषाओं के शब्दों के साथ बहुत साम्य था। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि शब्द, धातु, व्याकरण आदि की दृष्टि से संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, गाथिक, काल्टिक तथा पुरानी फारसी का मूल या आदि स्रोत एक है। प्राच्यविद्या को बढ़ावा देने के लिए जनवरी 1784 में जॉन्स ने कलकत्ता (अब कोलकाता) में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की। भाषाओं के वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करने वालों में विलियम जॉन्स का नाम आज भी बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है।

-निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

सोच सही, खुशियाँ वहीं

श्री महेश नाहटा

- ❖ देखकर रखो हर कदम, ज़िन्दगी मिलती नहीं हरदम।
- ❖ करो तपस्या, मिटे समस्या
- ❖ जिसको सहना आ गया, उसको रहना आ गया।
- ❖ जीवन जितना सादा, तनाव उतना ही आधा।
- ❖ प्राणिमात्र से प्यार, सभी धर्मों का सार।
- ❖ संसार में मगजमारी है, संयम में समझदारी है।
- ❖ स्मरण करो नवकार, हो जाओ भवसागर से पार।

- ❖ सुबह हो या शाम, लो प्रभु का नाम।
- ❖ सामायिक-स्वाध्याय महान्, आत्मा का करे उत्थान।
- ❖ पानी बिना जग सूना, नियम-त्याग बिना जीवन सूना।
- ❖ विश्व शान्ति की भव्य कल्पना हो सकती साकार, जीवन में अपनाये जन-जन सदाचार और शाकाहार।

-धम्मत्तरी (छत्तीसगढ़)

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1-सामायिक व्रत कितने काल, कितने करण और कितने योग से किया जाता है?

उत्तर- श्रावक-श्राविका द्वारा सामायिक व्रत एक मुहूर्त यानी 48 मिनट के लिए, 2 करण (पाप स्वयं नहीं करना और दूसरे से नहीं कराना) और 3 योग (मन, वचन और काया) से किया जाता है।

प्र. 2- 'नमोत्थु णं' पाठ का क्या प्रयोजन है?

उत्तर- इस पाठ के द्वारा सिद्ध और अरिहन्त देवों के अनेक गुणों का भावपूर्वक वर्णन करते हुए उनकी स्तुति की जाती है तथा उनके गुण हमारी आत्मा में भी प्रकट करना, मुख्य प्रयोजन है।

प्र. 3- 'नमोत्थु णं' पाठ का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर- इस पाठ को 'शक्रस्तव' पाठ भी कहते हैं, क्योंकि प्रथम देवलोक के इन्द्र-शकेन्द्र भी तीर्थङ्करों-अरिहन्तों की इसी पाठ से स्तुति करते हैं। इसका एक और नाम 'प्रणिपातसूत्र' भी है। प्रणिपात का अर्थ-अत्यन्त विनम्रता एवं बहुमानपूर्वक अरिहन्त-सिद्ध की स्तुति करना है।

प्र. 4-पहला 'नमोत्थु णं' किसको दिया जाता है?

उत्तर-पहला 'नमोत्थु णं' सिद्ध भगवन्तों को दिया जाता है।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

अनमोल ज़िन्दगी है, इसको सँवारना है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

अनमोल ज़िन्दगी है, इसको सँवारना है,
दे धर्म का उजाला, इसको निखारना है।
हालात इस जमाने के, बिगड़े हुए हैं,
भटक न जाए जीवन, इसको सम्भालना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥1॥

मुश्किलों से पाया है, नरतन का चोला,
जाना अकेला है, और आया अकेला।
अच्छे काम कर लें, इस ज़िन्दगी में,
आत्मा का कचरा, हमको बुहारना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥2॥

साधना-आराधना में, मन को लगाएँ,
सबको अपना जग में, मीत बनाएँ।
न किसी से वैर हो, न किसी से नफ़रत,
प्यार और प्रीति को, हमें निहारना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥3॥

भोगवादी जीवन से, बचते ही रहना,
त्याग-तपस्या है, जीवन का गहना।
विषयों की लालसा में, कभी मत फँसना,
मर्यादा की सौरभ, हमें उभारना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥4॥

सरलता और सादगी का, रहे अपना जीवन,
देव, गुरु, धर्म पर हो, अपना समर्पण।
कर्मों को काट करके, पाएँ मोक्ष मञ्जिल,
बस जीवन में अपने, यही चाहना है॥

अनमोल ज़िन्दगी है.....॥5॥

-जन्ता साइरी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

Two Frogs

Jain Story Book

Some frogs were playing on the farm,

when two of them fell into a pot of milk. All the other frogs gathered around the pot to see what could be done to help their companions. When they saw how deep the pot was, they agreed that it was hopeless to save them and told the two frogs in the pot that they should prepare themselves for their fate because they were as good as dead.

Unwilling to accept this terrible fate, the two frogs began to jump with all of their might. Some of the frogs shouted into the pot that it was hopeless and that the two frogs wouldn't be in that situation if they had been more careful and more responsible. The other frogs continued sorrowfully, shouting that they should save their energy and give up since they were already as good as dead. The two frogs continued jumping with all their might, and after a while, were quite weary. Finally, one of the frogs took heed to the calls of his fellow frogs. Exhausted, he quietly resolved himself to his fate, drowned to the bottom of the pot, and died.

The other frog continued to jump as hard as he could even though his body was wracked with pain and exhaustion. Once again, his companions began yelling for him to accept his fate, stop the pain, and just die. The weary frog jumped harder and harder, and the milk turned into butter with all the movement of the jumping. The frog was now able to stand on the layer of butter on top, use that as leverage, and finally leap high enough to get out of the pot. Amazed, the other frogs celebrated his freedom and then gathering around him asking, "Why did you continue jumping when we told you it was impossible?" The astonished frog explained to them that he was deaf, and as he saw their gestures and shouting, he thought they were cheering him on. What he had perceived as encouragement inspired him to try harder and to succeed against all odds.

प्रेम से परिवर्तन

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

नेहा बी.एड. करने के पश्चात् अध्यापिका बनकर प्रथम बार स्कूल पहुँची। जैसे ही उसने कक्षा 6 में प्रवेश किया; अक्षय नाम के लड़के ने अपनी नोटबुक से एक पेज फाड़ा, उसका पेपर प्लेन बनाया और मैडम नेहा पर उड़ा दिया। सब बच्चे जोर-जोर से हँसने लगे।

बाद में जब वह स्टॉफ रूम में गई तो दूसरी अध्यापिकाओं ने कहा कि अक्षय एकदम शैतान बच्चा है। सबको तंग करता रहता है, उससे सम्भल कर ही रहना। अक्षय के माता-पिता दोनों अपने काम में व्यस्त रहते थे, उसको समय नहीं दे पाते थे। शायद इसीलिये वह चिड़चिड़ा हो गया था और दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मस्ती करता रहता था।

नेहा मनोविज्ञान की भी ज्ञाता थी, उसने अगले ही दिन अक्षय को ही कक्षा का मॉनिटर नियुक्त कर दिया। एक कहावत के अनुसार-चोर को ही चौकीदार बना दिया।

अब कक्षा साफ रखने की, अध्यापिका की अनुपस्थिति में कक्षा को शान्त रखने की, बच्चों का गृहकार्य चैक करने आदि की अनेक जिम्मेदारियाँ उस पर आ गईं।

इन सबसे उसमें बहुत बदलाव आया। मस्ती करने वाला बच्चा स्वयं तो अनुशासित हुआ ही, अच्छा लीडर भी बन गया। नेहा मैडम उसके हर छोटे-बड़े काम की तारीफ करने लगी। अब वह पढ़ाई में भी ध्यान देने लगा और टेनिस भी खेलने लगा। उसके इस बदलाव ने सभी अध्यापिकाओं और स्वयं उसके माता-पिता सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

कुछ लोग डराकर और सजा देकर परिवर्तन चाहते हैं, परन्तु नेहा मैडम ने प्रेम से उसको बदल दिया। कोई भी इन्सान खराब नहीं होता और प्रेम से सबको परिवर्तित किया जा सकता है।

-वर्ली, मुम्बई (महाराष्ट्र)

सोने का पहाड़

श्री दुलीचन्द जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक राजा के पास अपार सम्पत्ति थी। विपुल धन-वैभव का स्वामी होते हुए भी उसके हृदय में तृष्णा की अग्नि जल रही थी। उसकी प्रबल इच्छा थी कि मैं खूब सोना इकट्ठा कर लूँ। कहते हैं, उसने एक पहाड़ जितना सोना इकट्ठा कर लिया था। फिर भी उसकी इच्छा अधूरी थी। वह तो अपने राज्य में ऐसे अनेक सोने के पहाड़ देखना चाहता था। उसकी एकमात्र आकांक्षा थी कि आज तक किसी ने उतना सोना इकट्ठा नहीं किया होगा, जितना कि मैं करूँगा। रात-दिन वह इसी उधेड़-बुन में लगा रहता था।

एक दिन उसने विचार किया कि मैं आखिर कितना सोना इकट्ठा कर सकता हूँ? इसके लिए मुझे इष्ट देवता को ही प्रसन्न करना चाहिए। एक दिन राजा सूर्योदय के समय नगर के बाहर जो मन्दिर था, वहाँ पहुँचकर अपने इष्ट देवता की उपासना में तल्लीन हो गया। उसकी लगन से देव बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला- “भक्त! क्या चाहते हो?” राजा ने कहा- “देव! मुझे सोना चाहिए। अतः ऐसा वरदान दीजिए कि मैं जिसको भी स्पर्श करूँ, वह सोना बन जाए।” देव ने कहा- “भक्त! मैं तुम्हें इस वरदान के लिए अच्छी तरह से सोच-विचार करने के लिए थोड़ा समय दे देता हूँ।” राजा ने कहा- “देव! मैंने ज़िन्दगी में इतने वर्ष इसी

चिन्ता में निकाले हैं। अतः आप निश्चिन्त होकर मुझ पर कृपा करें।” देव ने कहा- “तथास्तु!” राजा देव के चरणों में अहोभाव से झुका, इतने में देव अन्तर्धान हो गया।

ऐसा अपूर्व वरदान पाकर राजा के आनन्द की कोई सीमा नहीं थी। उसे बड़ा अभिमान होने लगा कि इस पृथ्वी पर आज तक कोई भी ऐसा राजा नहीं हुआ, जिसे यह वरदान प्राप्त हुआ हो।

इस प्रकार विचार करते हुए राजा अपने बगीचे में पहुँचा तो सोचने लगा कि ये सारे पेड़ सोने के हो जाएँ तो इस संसार का यह अद्वितीय उद्यान होगा। उसने हर पेड़ को स्पर्श किया और देखते-देखते सारा बगीचा सोने का हो गया।

आज तो राजा की खुशी का पार नहीं था। वह जब महल में पहुँचा और जिस-जिस वस्तु का उसने स्पर्श किया, सब कुछ स्वर्णमय बन गया। भोजन करते हुए जैसे ही उसने मिठाई को स्पर्श किया, वैसे ही वह सोना बन गई। एक क्षण के लिए तो मस्तिष्क में बिजली-सी कौंध गई कि यह तो बहुत मुश्किल हो गई है। किन्तु भीतर का लालच बोल उठा कि भोजन कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात तो है सोने की प्राप्ति।

इस प्रकार राजा अपने मन को मनाने लगा, परन्तु

भूख-प्यास कहाँ पीछा छोड़ेगी? प्यास लगी, पानी का गिलास हाथ में लिया तो पानी सोना बन गया। अब उसका माथा ठनका कि जब भूख और प्यास लगी हो तो सोना क्या करेगा, तब तो रोटी और पानी चाहिए। अब उसके चेहरे पर उदासी झलकने लगी और वह चिन्तित होकर सिंहासन पर बैठ गया।

इतने में उसकी दस वर्षीया पुत्री दौड़ती हुई आई और कहने लगी- “पिताजी! आप यहाँ क्या कर रहे हैं? बगीचे में चलकर देखिए, वह पूरा वीरान हो गया है। बगीचे में एक भी फल खाने लायक नहीं रहा। सभी फल पीले-पीले और कठोर हो गए हैं। किसी फूल में से सुगन्ध नहीं आ रही है। आज तो बगीचे में न भँवरे दिखाई दे रहे हैं और न ही पंछी। सारे बगीचे की रौनक समाप्त हो गई है।”

पिता ने कहा- “बेटी! तू अभी छोटी है, इसलिये कुछ नहीं जानती। यह तो हमारा सौभाग्य है कि बगीचा सोने का हो गया है, हमें पंछी से क्या लेना-देना, हमें तो सोना चाहिए।” बेटी ने पूछा- “पिताजी! यह सोना क्या होता है? क्या यह खाने-पीने के काम आता है या यह पहनने के काम आता है?”

बेटी की ऐसी बातें सुनकर राजा को हँसी आ गई। खुश होकर जैसे ही उसने अपना हाथ बेटी के मस्तक पर रखा, बेटी भी सोने की प्रतिमा बन गई। यह देखकर राजा स्तब्ध हो गया। वह रोने लगा- “हाय! मेरी प्यारी बेटी निर्जीव हो गई। मैं कितना मूर्ख और लालची हूँ, सोने के पहाड़ों के लालच में मैंने अपनी बेटी को गँवाया। मेरा खाना-पीना मुश्किल हो गया।”

“हे देव! तुम्हारा यह वरदान मेरे जीवन का अभिशाप बन गया है। मैं लोभ में अन्धा था, हे देव! मुझे क्षमा कर दें, अपना वरदान वापस ले लें, मुझे बेटी चाहिए। मुझे भोजन और पानी चाहिए।” राजा बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगा।

रोत-रोते जब वह थक गया तो आराम करने के लिए पलंग पर गया तो पलंग सोने का हो गया। बिस्तर का स्पर्श भी कठोर हो गया, सारी रात नींद नहीं आई।

वह सिर्फ अपने इष्ट देवता को याद करता रहा। सुबह सूर्योदय के साथ ही देव ने दर्शन दिए और कहा- “राजन्! मैंने तो तुम्हें पहले ही कहा था, सोच-विचारकर माँगना, परन्तु तुम नहीं माने। अब मैं तुम्हारी परेशानी देखकर अपना वरदान वापस लेता हूँ। किन्तु भविष्य में ऐसी गलती दुबारा मत करना।” उस दिन से राजा का मन सन्तुष्ट हो गया और वह चैन की नींद सोने लगा।

-पुस्तक 'रोचक बोधकथाएँ' से साभार

- प्र. 1 राजा के हृदय में तृष्णा की अग्नि क्यों जल रही थी?
- प्र. 2 राजा द्वारा इष्ट देवता को प्रसन्न करने के पीछे क्या कारण था?
- प्र. 3 किसी भी उपवन की सुन्दरता में कौन-कौन सहायक होते हैं?
- प्र. 4 राजा अपने इष्टदेव से इच्छित वरदान पाकर भी परेशान क्यों था?
- प्र. 5 प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा प्राप्त होती है?
- प्र. 6 प्रस्तुत शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए- तृष्णा, अद्वितीय, वीरान और देव।



बाल-स्तम्भ [मई-2022] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'महासती अञ्जना' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	पाखी जैन, बारां (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	सिद्धार्थ जैन, अजमेर (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	वृद्धि जैन, देई-बून्दी (राजस्थान)	21
	आर्जव चौधरी, जोधपुर (राजस्थान)	21
	भाव्या जैन, बठिंडा (पंजाब)	21
	अर्चित जैन, बठिंडा (पंजाब)	21
	धृति सिंघवी, हैदराबाद (तेलंगाना)	21

बाल-जिनवाणी जुलाई, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 अगस्त, 2022)

- प्र. 1. ऑनलाइन शॉपिंग/बैंकिंग करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- प्र. 2. 'नौलखा हार' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
- प्र. 3. जैनधर्म में शाकाहार को क्यों अपनाया गया है?
- प्र. 4. सामायिक किस पाठ से ली जाती है तथा इसके क्या लाभ हैं?
- प्र. 5. सामायिक का फल कितना बताया गया है?
- प्र. 6. Why is Uttama Ksamā counted among ten supreme virtues?
- प्र. 7. What is your biggest opportunity?
- प्र. 8. रानी का चोरी हुआ नौलखा हार कैसे मिला?
- प्र. 9. ऑनलाइन शॉपिंग/बैंकिंग का चुनाव सही या गलत विषय पर संक्षिप्त में विचार लिखिए।
- प्र. 10. दिए गए शब्दों से एक-एक वाक्य बनाइए-मधुमेह, कोहराम, समुचित और भवभ्रमण।

बाल-जिनवाणी [अप्रैल-2022] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रैल-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	अरिन चौरडिया, जयपुर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	नमिष जैन, बारां (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	निकिता जैन, मसूदा (राजस्थान)	35
	आराध्या भंसाली, जोधपुर (राजस्थान)	35
	कु. सिमरन किरण अलीझाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

**अहंकार के वृक्ष पर
बिनाश के फल लगते हैं।**



ओसवाल मैट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

**विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक सम्भावितों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।**

ओसवाल मित्र मंडल मैट्रीमोनियम सेंटर

४७, एलएनएल इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506387833 📠 : 8022786523, 822-28287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से शाम ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details Is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संचयन, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग प्रकटित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुण्णोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमान् वृत्तीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	
श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बेंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बेंगलोर	श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवर जी भंडारी, द्विपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मवनगंज-किशनगढ़।
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोधय, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लालकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांब, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जान्गति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश) श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू	श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् सुगनचन्द जी एजेड, चौपासनी रोड, जोधपुर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू)

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

“छोटा सा चिन्तन परियंत्रण को हल्का करके का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों की शिक्षा में सहयोग करके का”

जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/बैंक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
- (2) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.)
- (3) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- (4) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (5) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (6) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- (7) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (8) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (9) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (10) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (11) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (12) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
- (3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
- (4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं वित्तीय वर्ष 2022-2023 के लिए

स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



|| एमो सिद्धाणं ||

NAVKAR CITY JODHPUR



Luxurious Villas and G+2 Apartments available

“ एक शहर आपके घर में ”

Full of Amenities

1,00,000 sq. ft

of Lush Green Central Park



क्रिकेट पिच



स्वोट्स स्टेडियम



सेंट्रल पार्क



टेनिस कोर्ट



सिक्योरिटी एरिया



8504 000 222

www.navkarcity.com



नवकार सिटी, पाल गंगाणा रोड, जोधपुर

WWW.ERA.RAJASTHAN.GOV.IN | NERA REG.NO. RAJ/P/2013/1048



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIX

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138



